

# MPPSC MAINS – polity [unit – 03]



Shubham Tripathi...

# **PAPER 2 PART A UNIT 3 SYALLBUS**

## **Indian Political Thinkers**

➤ **Ram Manohar Lohia,**

➤ **Kautilya,**

➤ **Dr.B.R.Ambedkar,**

➤ **Mahatma Gandhi,**

➤ **Deendayal Upadhyaya,**

➤ **Jawaharlal Nehru,**

➤ **Jayaprakash Narayan.**

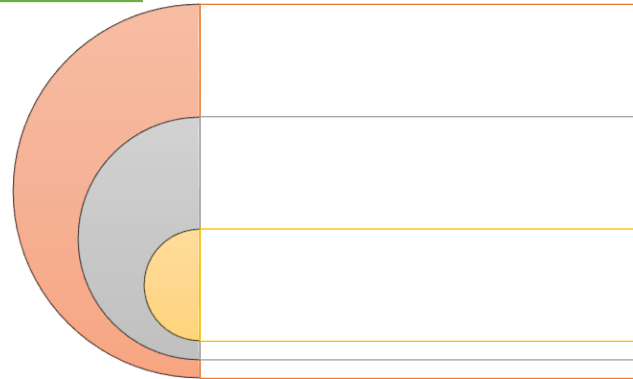
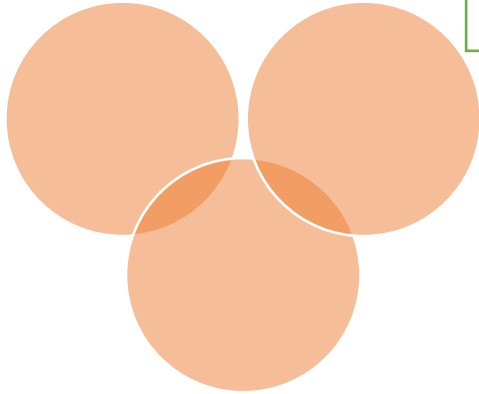
➤ **Sardar Vallabh Bhai Patel,**

➤ **Ahilyabai Holkar**

# MPPSC MAINS ANSWER FLOWCHART

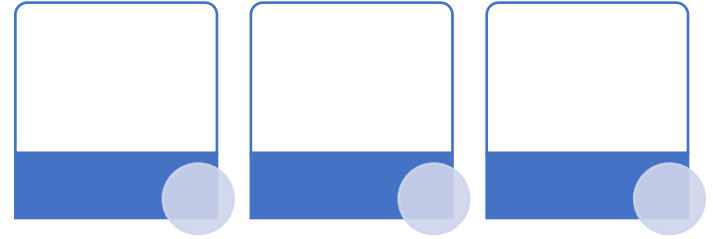


By Shubham Tripathi Sir

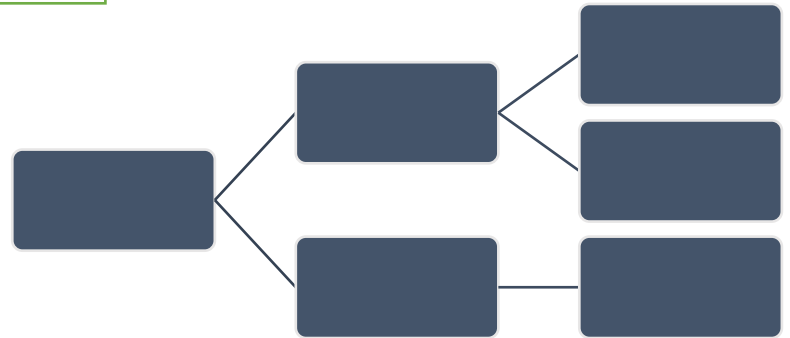
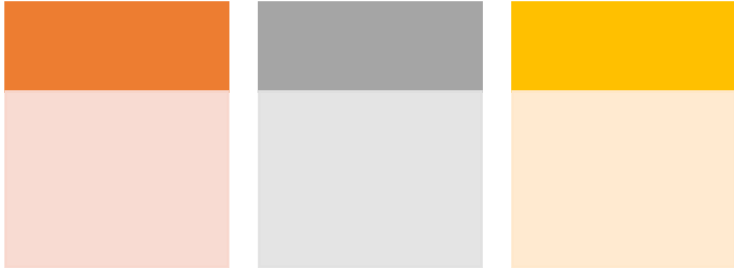


# MPPSC MAINS ANSWER FLOWCHART

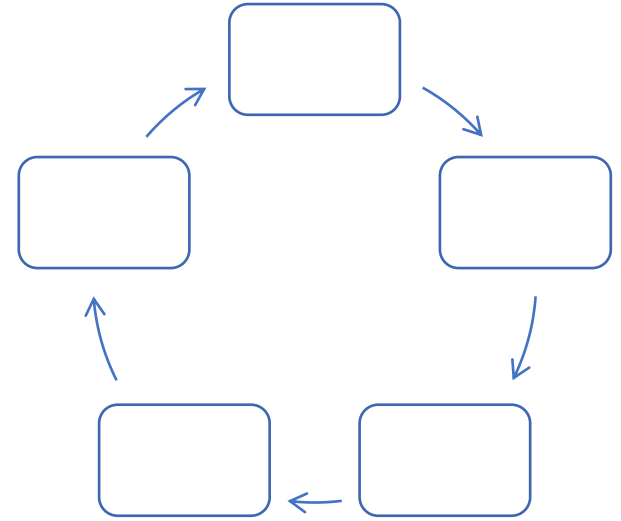
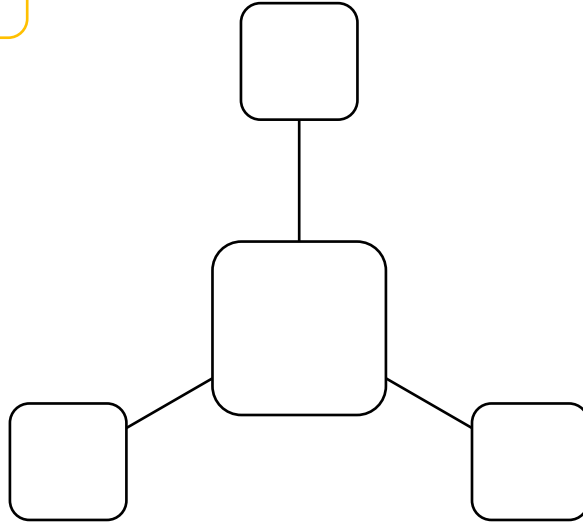
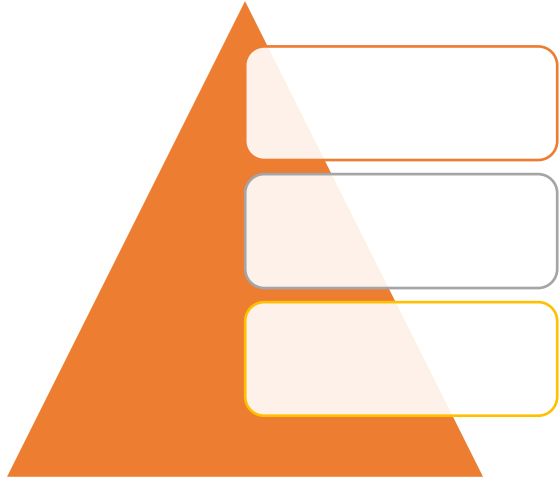
Diagram showing two empty rectangular boxes stacked vertically, each preceded by a curly brace, indicating a list or sequence of answers.



By Shubham Tripathi Sir

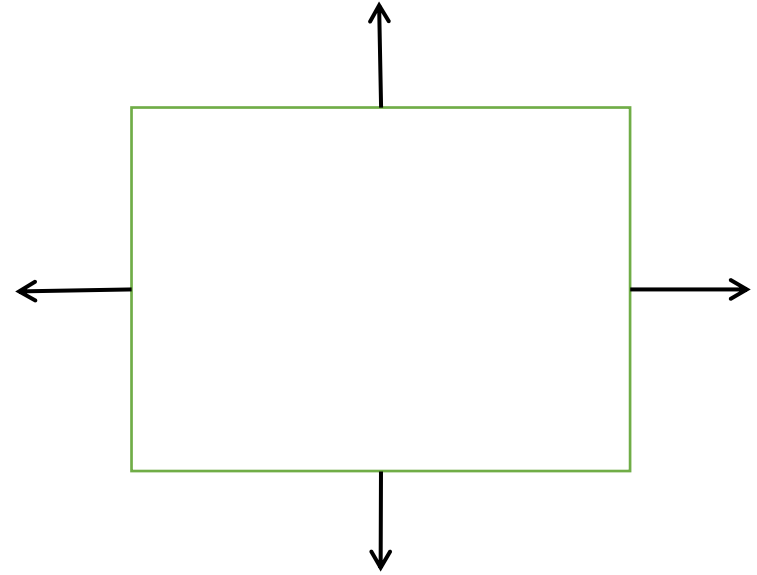
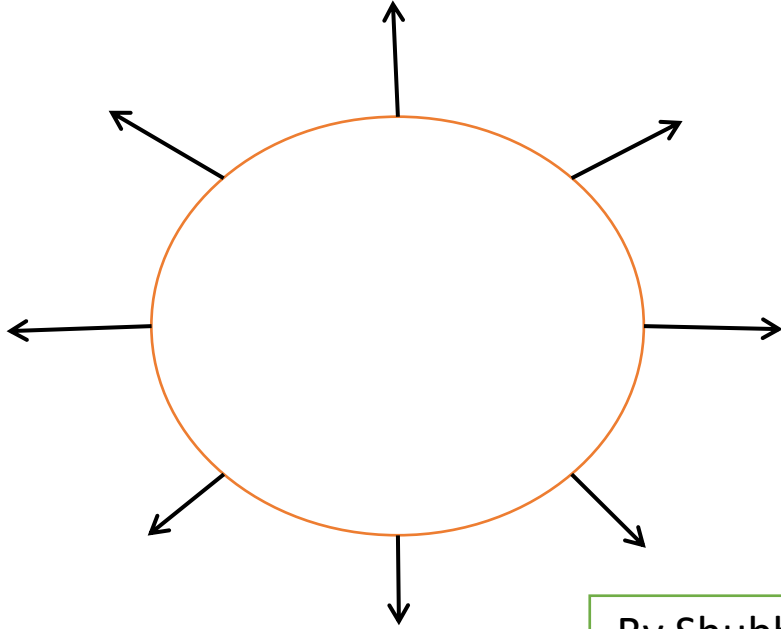


# MPPSC MAINS ANSWER FLOWCHART



By Shubham Tripathi Sir

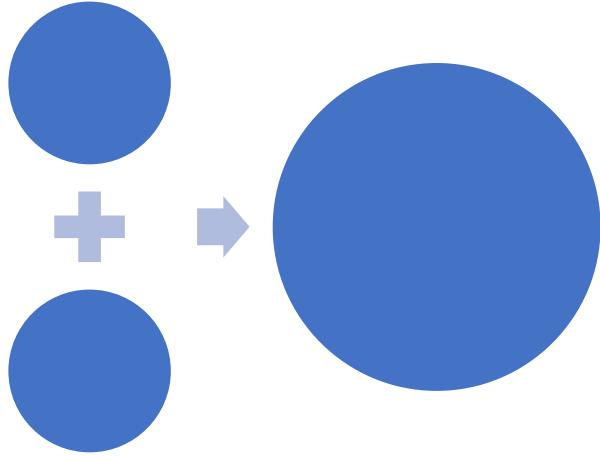
# MPPSC MAINS ANSWER FLOWCHART



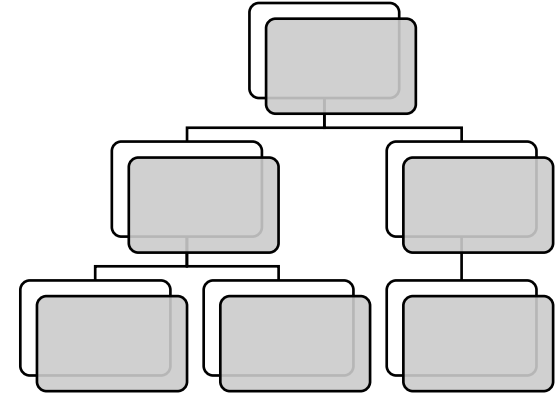
By Shubham Tripathi Sir



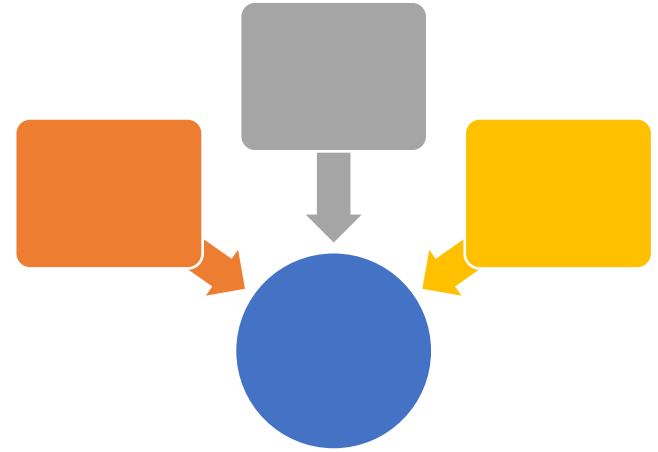
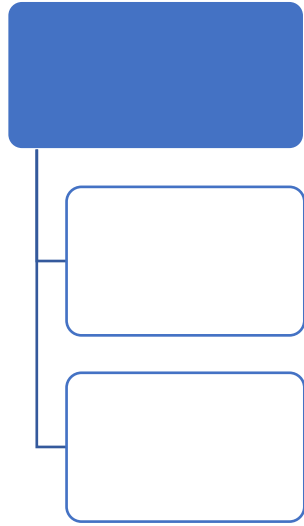
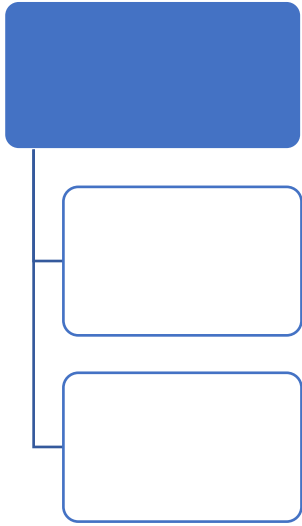
# MPPSC MAINS ANSWER FLOWCHART



A vertical list of three empty rectangular boxes, each preceded by a small circle, intended for writing answers.



# MPPSC MAINS ANSWER FLOWCHART



By Shubham Tripathi Sir

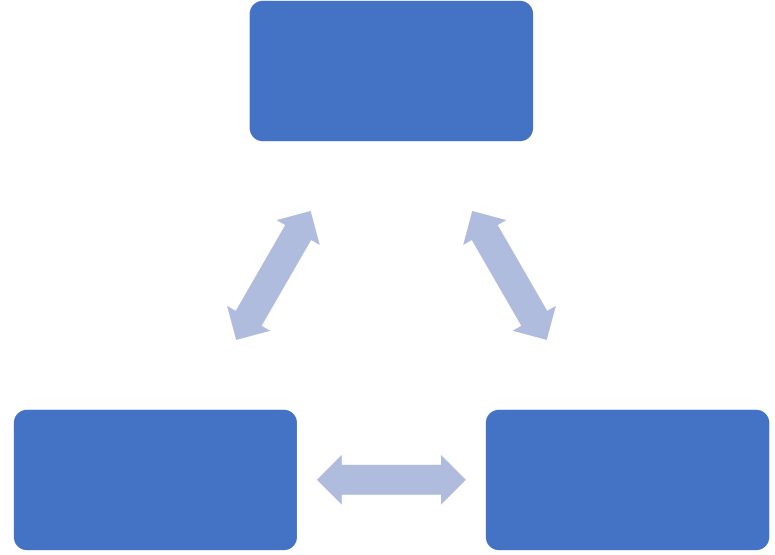
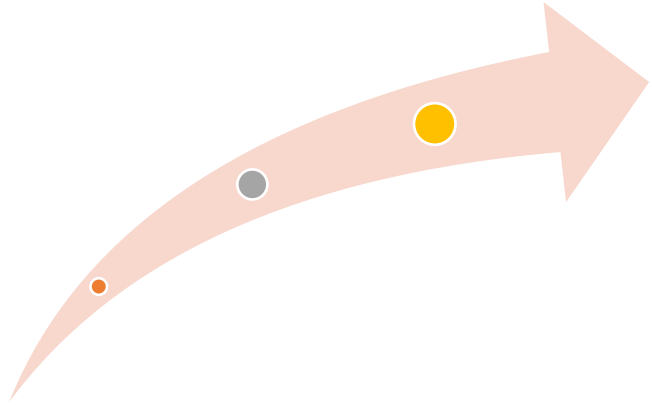


# MPPSC MAINS ANSWER FLOWCHART

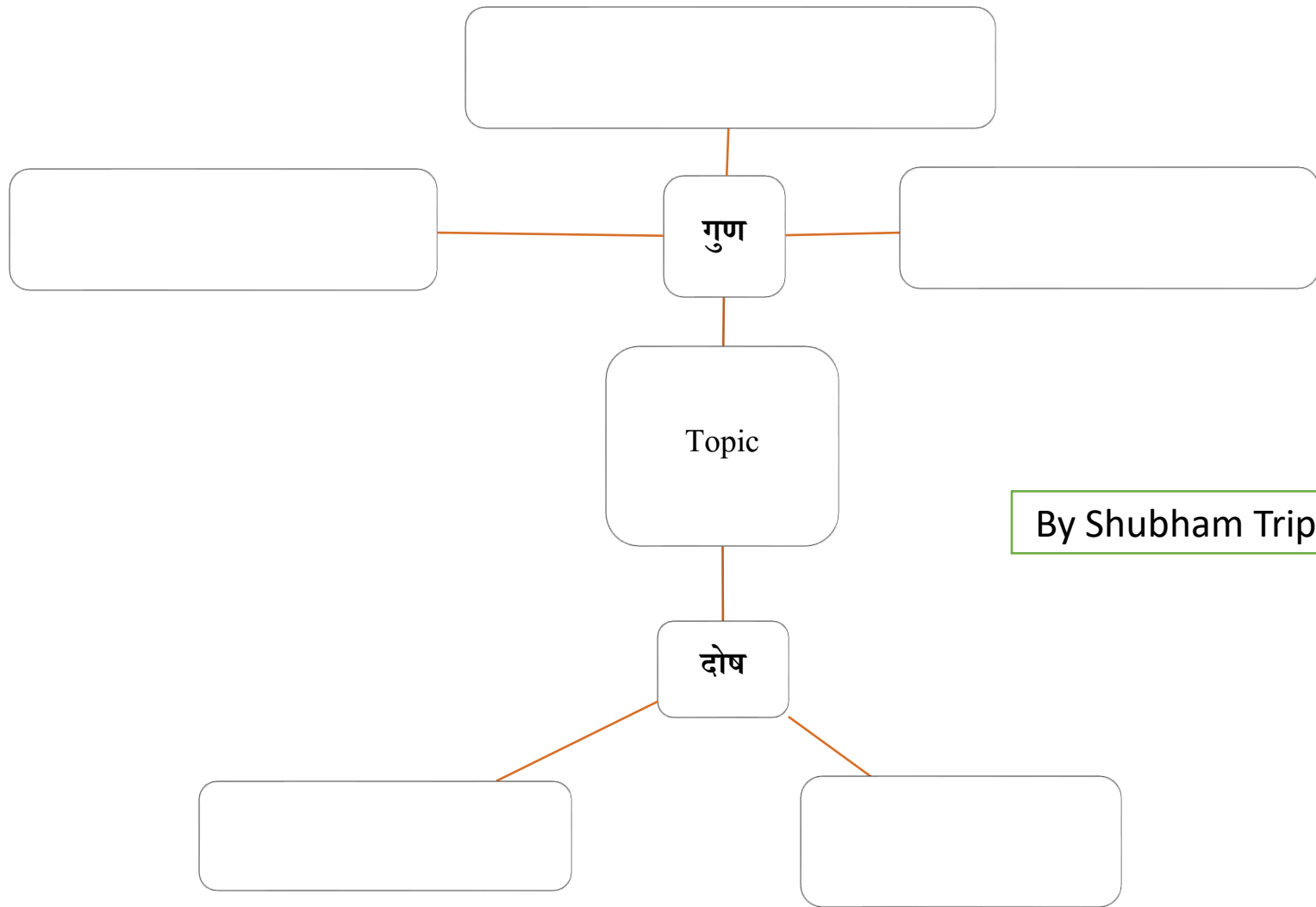


By Shubham Tripathi Sir

# MPPSC MAINS ANSWER FLOWCHART



By Shubham Tripathi Sir



By Shubham Tripathi Sir

## पिछले वर्षों के प्रश्न

### अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. कौटिल्य के प्रसिद्ध ग्रंथ का नाम क्या है – 2014
2. अर्थशास्त्र पुस्तक के लेखक कौन है – 2017

### लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. कौटिल्य एक आदर्शवादी होने की अपेक्षा एक राजनैतिक यथार्थवादी थी टिप्पणी कीजिए – 2016
2. भारतीय राजनीतिक चिंतन में कौटिल्य के योगदान पर प्रकाश डालिये - 2017

## कौटिल्य

कौटिल्य प्राचीन भारत के महान राजनीतिक प्रशासनिक विचारक थे, जिन्होंने अर्थशास्त्र जैसे महान राजनीतिक ग्रंथ की रचना की।

सामान्य परिचय

अध्ययन-तक्षशिला

कार्य- चंद्रगुप्त मौर्य का  
प्रधानमंत्री, अर्थशास्त्र का लेखन

अन्य नाम- डोमिण / असल /  
मल्लनाग / वात्स्ययान

प्रसिद्ध नाम- चाणक्य (चणक  
गोत्रीय ब्राह्मण) या कौटिल्य

वास्तविक नाम - विष्णु गुप्त

# आयाम

1

विदेश नीति

2

न्याय सिद्धांत

3

राज्य- सप्तांग सिद्धांत

4

अर्थशास्त्र, समाज, भ्रष्टाचार

- विदेश नीति
  - षट्गुण सिद्धांत
  - मंडल सिद्धांत
  - चातुर्गुण्य सिद्धांत
  - राजदूत

**षट्गुण सिद्धांत- प्राचीन भारत में राज्य को वैदेशिक नीति का संचालन इसके अनुसार किया जाता था। इसके छः लक्षण निम्न हैं-**

By Shubham Tripathi Sir

→ सन्धि (समझौता)

→ विग्रह (युद्ध या राज्य हित में संधि तोड़ना )

→ यौन (शत्रु पर वास्तविक आक्रमण करना या शत्रु को कमजोर पाकर आक्रमण करना)

→ आसन (तटस्थता या समय की प्रतीक्षा में शांत),

→ संचय (बलवान का आश्रय लेना या आत्मसमर्पण)

→ द्वैधीभाव (सन्धि और युद्ध का एक साथ प्रयोग)।

- सन्धि-

- कौटिल्य के अनुसार किसी भी राजा के लिए सन्धि करने को नीति का उद्देश्य अपने शत्रु राजा को शक्ति को नष्ट करना तथा स्वयं को बलशाली बनाना होता है।
- इसके अनुसार शत्रु से भी उस समय सन्धि कर ली जानी चाहिए जबकि शत्रु पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकती हो और स्वयं को सबल तथा शत्रु को निर्बल बनाने के लिए कुछ समय आवश्यक हो। कौटिल्य ने अनेक प्रकार को सन्धियों की है।

- विग्रह-

- विग्रह का अर्थ युद्ध होता है।
- इस नीति को Follow राजा को तभी करना चाहिए जब राजा शत्रु को निर्बल देखे, स्वयं उसको युद्ध व्यवस्था हो तथा वह अपनी शक्ति के बारे में पूर्णतया Confident हो।
- विग्रह नीति का अनुसरण करने के पूर्व राजा द्वारा राज्यमण्डल के राज्यों की सहायता प्राप्त कर लेने की भी व्यवस्था कर लेनी चाहिए।
- विग्रह नीति अपनाते हुए शत्रु के ऊपर आक्रमण करके राज्य की भूमि के भागों को तुरन्त अपने अधीन कर लिया जाना चाहिए।



- **यान-**

- यान का अर्थ वास्तविक आक्रमण है।
- इस नीति को तभी अपनाया जाना चाहिए जबकि राजा अपनी स्थिति को सुदृढ़ देखे और ऐसा प्रतीत हो कि आक्रमण के मार्ग को अपनाये बिना शत्रु को वश में करना संभव नहीं है।
- विग्रह और यान में मात्र स्तर का भेद है।

- **आसन-**

- जब राजा और शत्रु समान रूप से शक्तिशाली हों तो राजा के द्वारा आसन अर्थात् तटस्थता को नीति अपनायी जानी चाहिए।
- आसन की नीति अपनाते हुए राजा द्वारा शक्ति अर्जन का निरन्तर प्रयास किया जाना चाहिए।

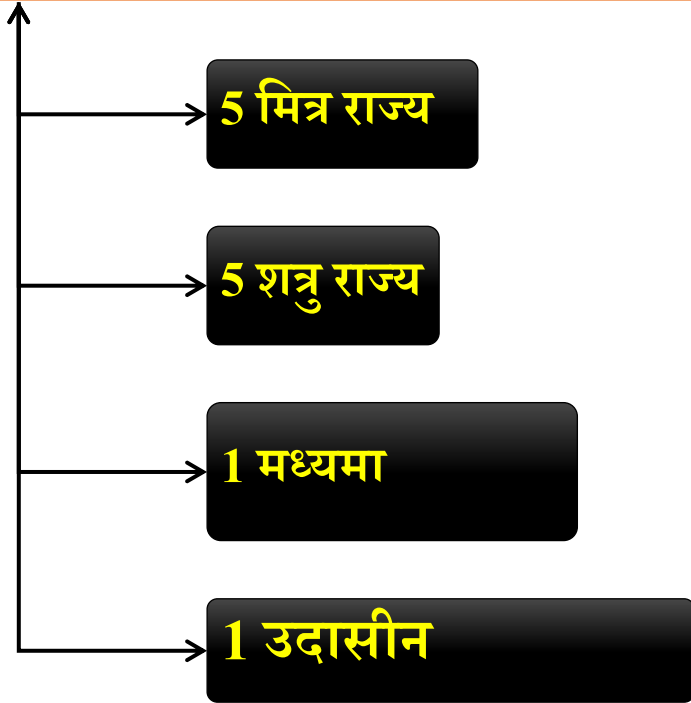
- संश्रय-

- संश्रय का अर्थ बलवान का आश्रय लिये जाने से है।
- यदि राजा शत्रु को हानि पहुँचाने को क्षमता नहीं रखता, साथ ही यदि वह अपनी रक्षा करने में भी असमर्थ हो तो उसे बलवान या शक्तिशाली राजा का आश्रय लेना चाहिए, लेकिन यह ध्यान रखा जाता है कि जिस राजा का आश्रय लिया जा रहा है वह शत्रु से अधिक बलशाली हो।
- यदि इतना बलवान राजा न मिले तो सबल शत्रु का ही शरण लिया जाना उचित है।

- द्वैधीभाव-

- द्वैधीभाव की नीति से कौटिल्य का आशय एक राज्य के प्रति सन्धि तथा दूसरे राज्य के प्रति विग्रह की नीति अपनाने से है। जब अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक राज्य से सहायता लेने और दूसरे राज्य से लड़ने की आवश्यकता हो तो द्वैधीभाव नीति अपनायी जानी चाहिए।

मंडल सिद्धांत- राज्य की सुरक्षा व विदेश नीति हेतु प्रतिपादित किया व मंडल का निर्माण 12 राज्यों से मिलकर होता है-





उदासीन

अरिमित्र  
मित्र

मित्र मित्र

अरिमित्र

मित्र

अरि

मध्यम

विजीगीषु

पार्ष्णिबाह

आक्रन्द

पार्ष्णि  
ग्राहसार

आक्रन्द  
सार

# MANDAL THEORY OF KAUTILYA

कौटिल्य का मंडल  
सिद्धांत

## मंडल सिद्धांत

- मंडल (अंतरराष्ट्रीय राजनीति) के केंद्र में विजिगीषु (विजेता या विजय की इच्छा रखने वाला राज्य) होता है।
- विजिगीषु की सीमा से लगा राज्य शत्रु प्रकृति का होता है
- जबकि शत्रु की सीमा से लगा राज्य, शत्रु का शत्रु व विजिगीषु का मित्र होता है
- मध्यमा- जिसकी सीमा विजिगीषु व अरि दोनों के समीप हो तथा जो दोनों में से किसी की भी सहायता कर सकता हो
- उदासीन - जो विजिगीषु व अरि का ना तो मित्र हो और ना ही शत्रु परंतु संप्रभु निर्णय लेने में समर्थ हो

# चातुर्गुण्य नीति

कौटिल्य के अनुसार विदेश नीति संबंधी षट्गुण नीति का पालन चातुर्गुण्य (चार उपायों) द्वारा किया जाना चाहिए।

1

साम- विरोधी राजा को मैत्रीभाव से बातचीत के द्वारा समझा - बुझाकर अपने पक्ष में करना।

2

दाम- विरोधी राजा को धन देकर अपने पक्ष में करना।

3

दण्ड- विरोधी राजा को भयभीत करके अपने पक्ष में करना इस प्रकार दण्ड का आशय सीधे बल प्रयोग की नीति से नहीं, बल्कि युद्ध पूर्व धमकी से है।

4

भेद- शत्रु एवं उसके आसपास राजाओं के बीच आपस में फूट डालने की नीति में भेद है, ताकि वे आपस में ही उलझे रहे और एक-दूसरे की शक्ति का उन्मूलन करते रहे।

## • राजदूत

- राष्ट्र की नीतियों एवं नियमों को दूसरे राष्ट्रों तक पहुंचाने वाला वाहक राजदूत होता है।
- राजदूत के द्वारा ही दूसरे राष्ट्र का संदेश औपचारिक रूप से प्राप्त करने तथा अपने राष्ट्र का संदेश दूसरे राष्ट्रों तक पहुंचाने का कार्य सम्पन्न होता है।
- कौटिल्य के अनुसार राजदूतों में साहस, बद्धिमत्ता, पौरुषता आदि गुण होने चाहिए।
- कौटिल्य ने 3 प्रकार के राजदूतों की चर्चा की है
  1. निसृष्टार्थ - इसे विदेशी शासक से संधि करने का पूर्ण अधिकार था।
  2. परिमितार्थ - इसे सिर्फ वही समझौते करने का अधिकार था, जिसके लिए उसे आदेश दिया गया था।
  3. शासनहार - इसे केवल राजकीय संदेश को पहुंचाने का अधिकार था। यह कोई समझौता या संधि नहीं कर सकता था।

# कौटिल्य का न्याय सिद्धांत

राज्य के स्थायित्व व समृद्धि हेतु कठोर दंड विधान एवं आर्थिक दण्ड आवश्यक ।

कौटिल्य ने दो प्रकार के न्यायालय बताए हैं।

## 1. धर्म स्थानीय

धर्मस्थ

दीवानी न्यायालय

परिवारिक, तलाक संबंधी मुद्दे ।

## 2. कंटक शोधन

प्रादेशिक

फोजदारी न्यायालय

हत्या संबंधी मुद्दे ।

6 सदस्य- 3 विधि विशेषज्ञ एवं 3 आमात्य

विधि के स्रोत

➤ धर्म- सत्य पर आधारित ।

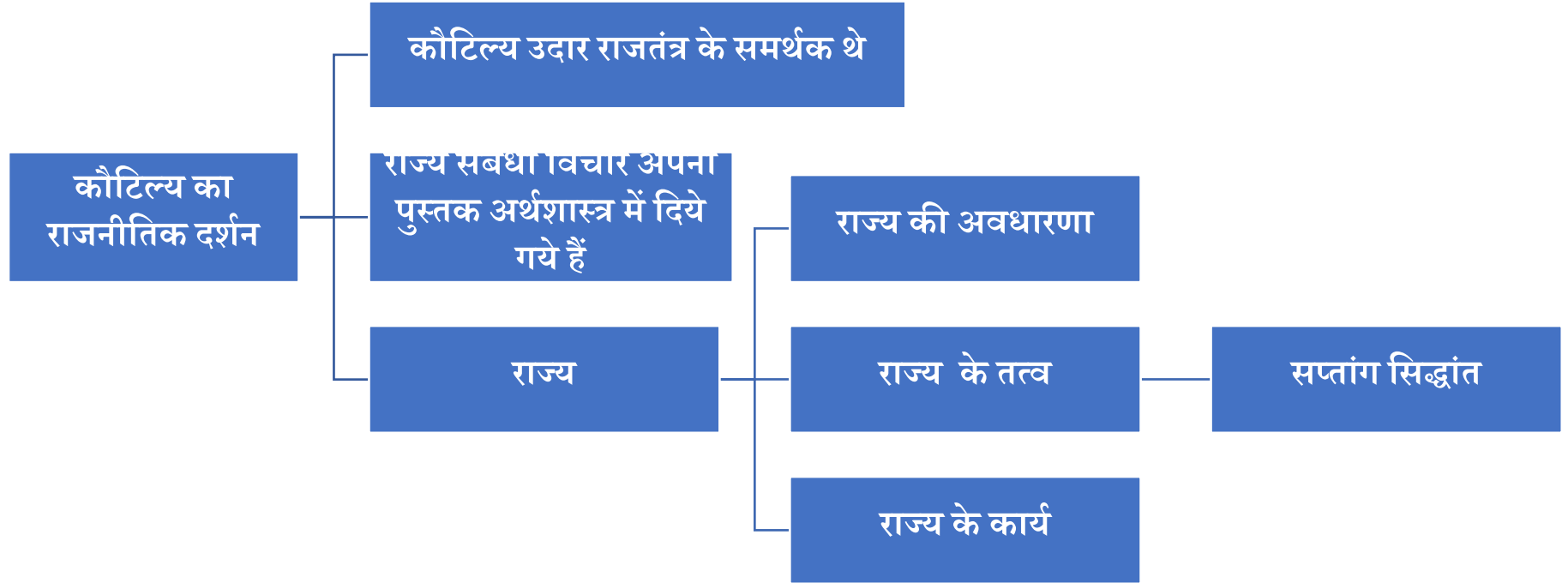
➤ व्यवहार- साक्ष्य पर आधारित ।

➤ चरित्र- नियम विरुद्ध को नहीं मानना

➤ राजज्ञा- राजा का आदेश ।

➤ भेदभाव रहित होना चाहिए।





- राज्य की अवधारणा-

- राज्य सामाजिक समझौते का परिणाम है
- राज्य की उत्पत्ति से पूर्व की प्राकृतिक दशा अराजकता
- लोगों ने मत्स्य न्याय से तंग आकर मनु को राजा चुना व राज्य की संकल्पना को अपनाया

- राज्य के तत्व सप्तांग सिद्धांत

- सप्तांग सिद्धांत कौटिल्य ने राज्य की तुलना मानव शरीर से की है जिस प्रकार मानव शरीर के सभी अंग मिलजुल कर अपना कार्य करते हैं।
- उसी प्रकार राज्य के सभी अंगों को मिलकर अपना कर्तव्य / उत्तरदायित्व का निर्वहन करना चाहिए, राज्य के सात तत्व निम्नलिखित हैं

- **स्वामी (सिर)** आदेश देने वाला। विनय, विवेक, शास्त्र ज्ञान, शत्रु एवं मित्र का ज्ञान, संयमी और चरित्रवान ।
- **अमात्य (आँख)** मंत्री, उच्च प्रशासनिक अधिकारी। राजकीय निर्णय अमात्यो से परामर्श
- **जनपद (जांघ)** जनता और भूमि, जनता कर चुकाने वाली, भूमि उर्वर हो ।
- **दुर्ग (बांह)** रक्षात्मक शक्ति एवं आक्रामक शक्ति का प्रतीक है। दुर्ग मजबूत, अच्छी मोर्चेबन्दी, पानी भोज्य सामग्री तथा बारूद का उचित प्रबंधन हो ।

**Swami - King**



**Amatya - Minister**



**Janapada - Territory and Population**



**Durga - Fort (capital city)**



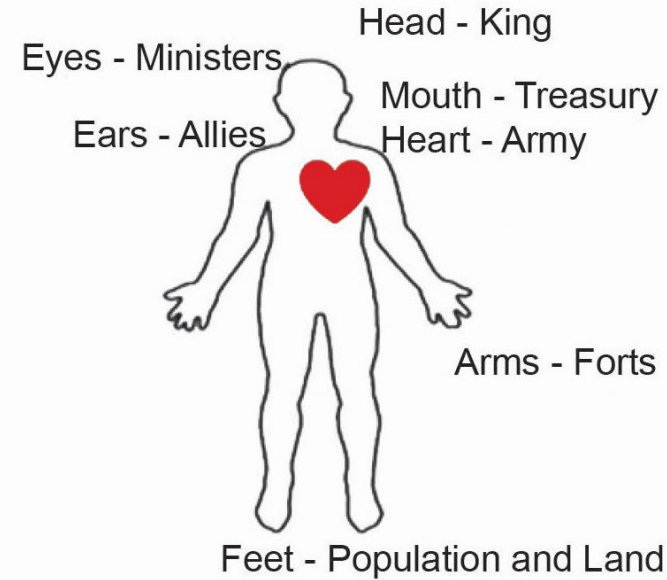
**Kosha - Treasury**



**Danda - Army**



**Mitra - Ally**



***Prakritis as organs of the body***

- **कोष (मुख)** राज्य के पास भरा पूरा कोष एवं आय के स्थायी स्रोत होने चाहिए।
- **दंड या सेना (मस्तिष्क)** जिसके पास अच्छा सैन्य बल उसके मित्र बने रहते हैं। मित्र अनुवांशिक हो न कि कृत्रिम जो आवश्यकता में साथ दे।

**Swami** - King



**Amatya** - Minister



**Janapada** - Territory and Population



**Durga** - Fort (capital city)



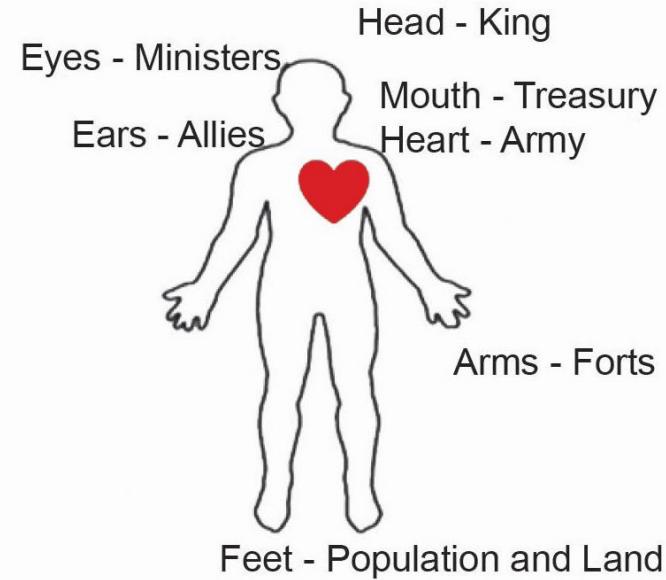
**Kosha** - Treasury



**Danda** - Army



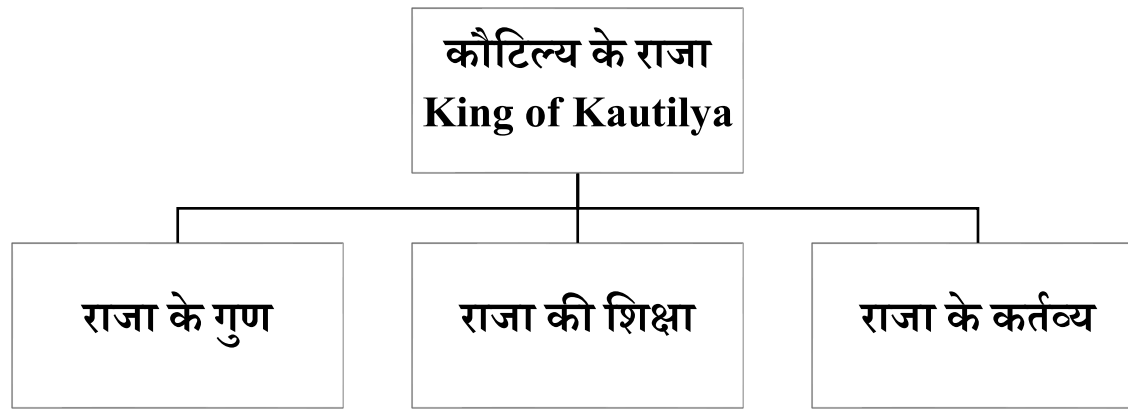
**Mitra** - Ally



***Prakritis as organs of the body***

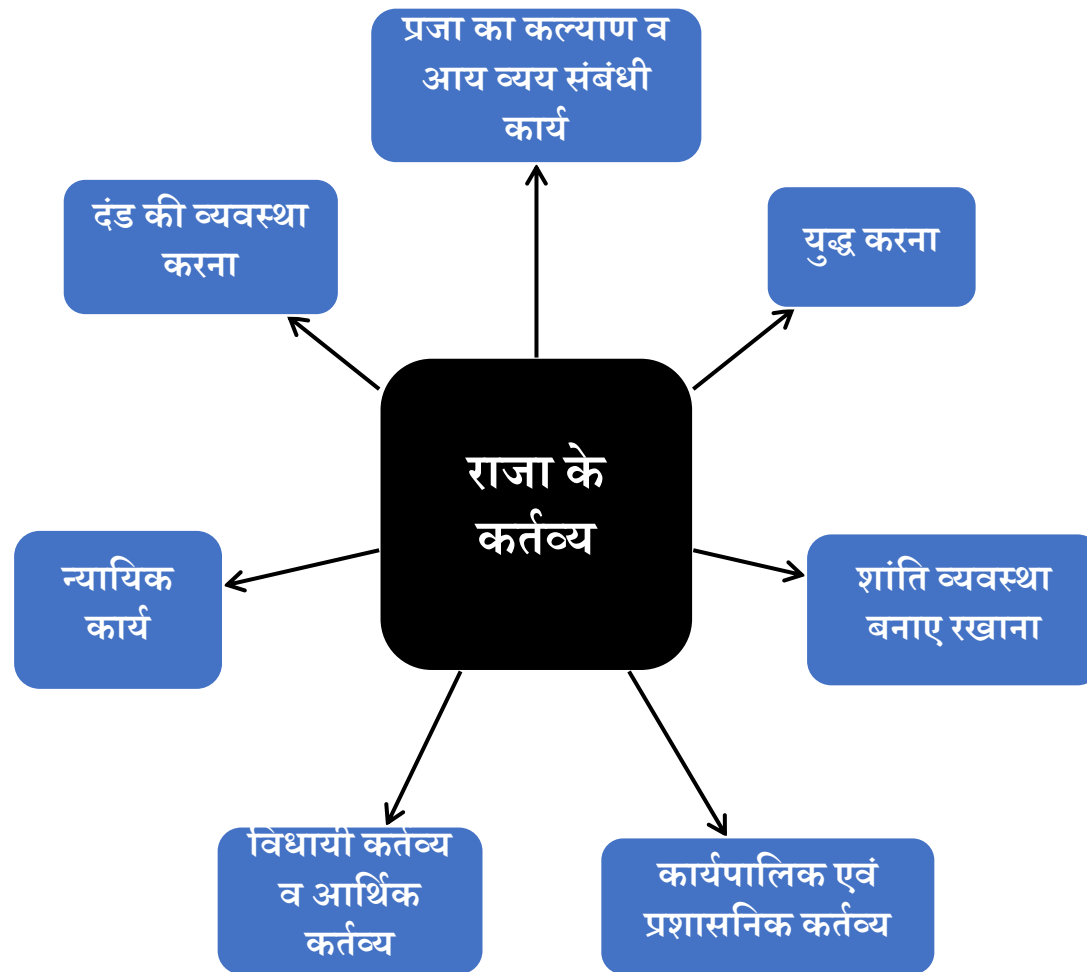
## राज्य के कार्य

- राज्य की सुरक्षा करना।
- राज्य में शांति व्यवस्था बनाए रखना
- राज्य विस्तार की योजना बनाना।
- लोक कल्याण हेतु कार्य एवं जनरक्षा ।
- सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं परोपकार के कार्यों हेतु।
- प्राकृतिक संकट से राज्य की रक्षा हेतु ।
- व्यापार संचालन हेतु अधिकारी की नियुक्ति ।
- पशुधन का संरक्षण एवं संवर्धन हेतु नियुक्ति



## ■ राजा के गुण

- राजा को राजर्षि (King Philosopher) मानते हैं
- राजा को कुलीन, धर्म की मर्यादा चाहने वाला, कृतज्ञ, दृढ़ निश्चयी, विचारशील, सत्यवादी, विवेकपूर्ण, दूरदर्शी, उत्साही तथा युद्ध में चतुर होना चाहिए।
- उसमें स्मरण शक्ति, बुद्धि और बल होना चाहिए।
- राजा में विपत्ति के समय प्रजा का निर्वाह करने और शत्रु की दुर्बलता पहचानने की आवश्यक योग्यता भी होनी चाहिए।
- राजा को काम, क्रोध, लोभ, मोह और चपलता आदि से दूर रहना चाहिए।
- नियमानुसार राजकोष में वृद्धि करने की योग्यता होनी चाहिए।
- राजा को कभी भी वृद्ध, अपंग और दीन-हीन की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।



रचनाकार कौटिल्य ।

चौथी शताब्दी ई. पू. में भारत के महान विचारक द्वारा

## अर्थशास्त्र

रचित मौर्यकालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विचारों पर आधारित ग्रंथ है।

रचना- गद्य एवं पद्य दोनों में की गई।

इसमें 15 अधिकरण, 150 अध्याय है।

तुलना- मेकियावेली की द प्रिंस से

सरकार के 34 भागों को उल्लेखित



## कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित राजा के कर्तव्य

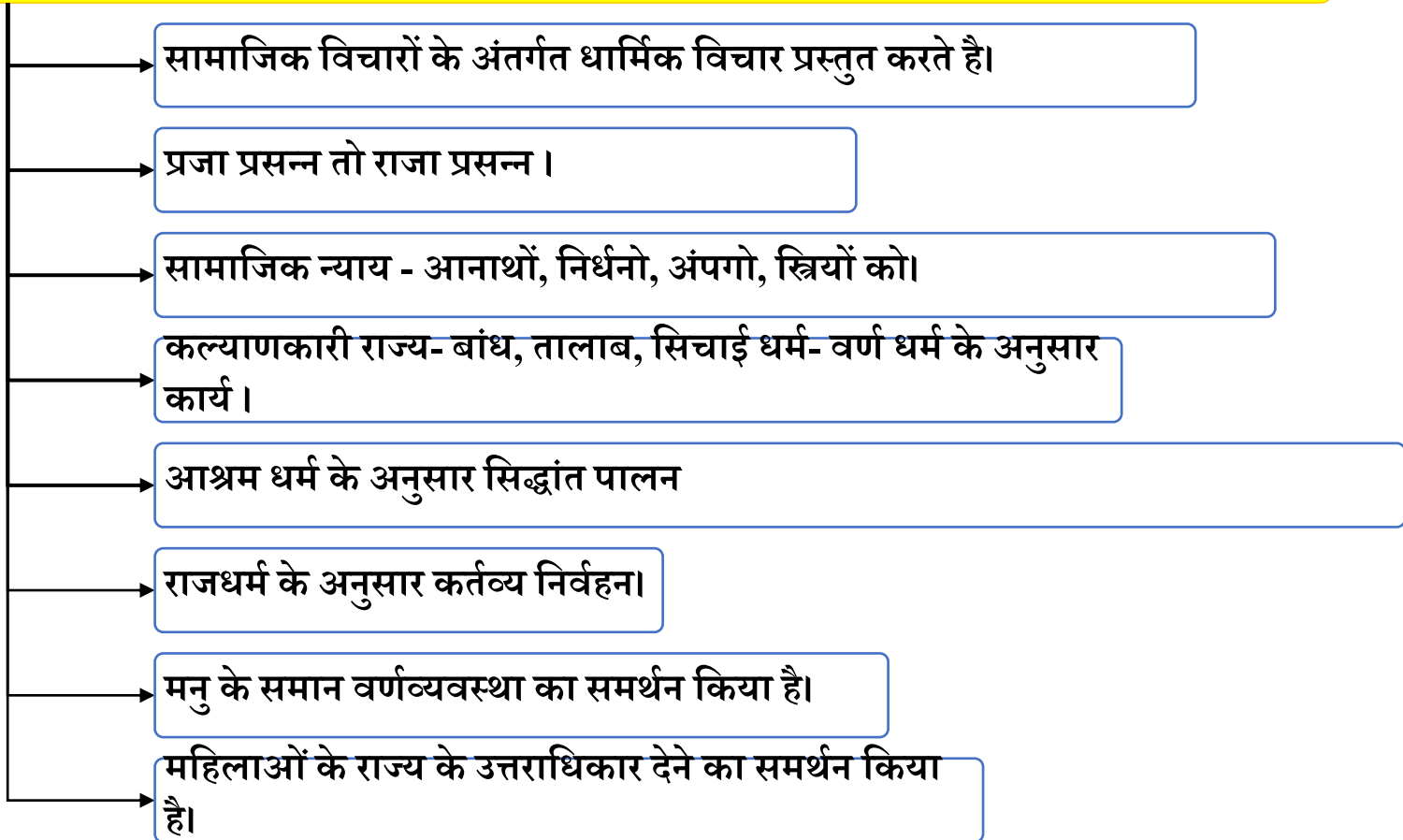
→ प्रजा के सुख में राजा का सुख होता है एवं प्रजा के हित में राजा का हित, अर्थात् राजा का कर्तव्य प्रजा को सुखी रखना है।

→ राजा का प्रमुख कर्तव्य दुर्ग या साम्राज्य की रक्षा करना है।

→ राजा को साम्राज्य विस्तार करना चाहिए। दण्ड विधान राजा का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए।

→ कौटिल्य के अनुसार राजकोश में वृद्धि करना राजा का प्रमुख कर्तव्य है।

→ कौटिल्य ने गुप्तचरों के संचालन को राजा का प्रमुख कर्तव्य माना है। क्योंकि गुप्तचर ही राजा की आँखें होती हैं।



## भ्रष्टाचार के लिए कौटिल्य का समाधान

"मंत्री को राष्ट्र और राजा की सेवा, निष्ठा के साथ करना चाहिए."

अधिकारियों पर निगरानी रखने के लिए गुप्तचरो की नियुक्ति

कौटिल्य ने व्हिसलब्लोअर की बात भी की और कहा कि सही जानकारी देने पर पुरस्कार और गलत जानकारी देने पर मृत्युदंड तक दिया जाना चाहिए

सरकारी कर्मचारियों को अक्सर एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया जाना चाहिए, ताकि भ्रष्टाचार एक स्थान पर शुरू न हो

कुछ पदों को अस्थायी बनाया जाना चाहिए, क्योंकि स्थायित्व से सरकारी अधिकारी भ्रष्टाचार कर सकते हैं.

भ्रष्टाचार को कम करने के लिए जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए

## ■ कौटिल्य ने राजा के निम्नलिखित प्रमुख कार्य

बताये हैं:-

- प्रजा का कल्याण के लिए प्रयास करना।
- धर्म का पालन तथा रक्षा करना।
- शांति और व्यवस्था बनाये रखना।
- प्रशासनिक कार्यों हेतु योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति करना।
- विधि निर्माण करना।

■ न्यायिक कार्य करना।

■ दण्ड की व्यवस्था करना।

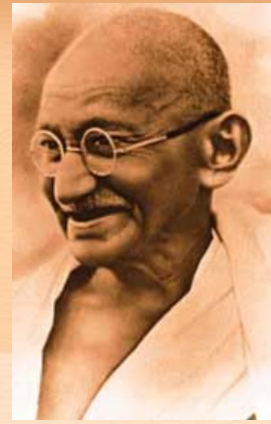
■ आर्थिक एवं वाणिज्यिक कार्यों की निगरानी करना।

■ राजकोष की अभिवृद्धि के उपाय करना।

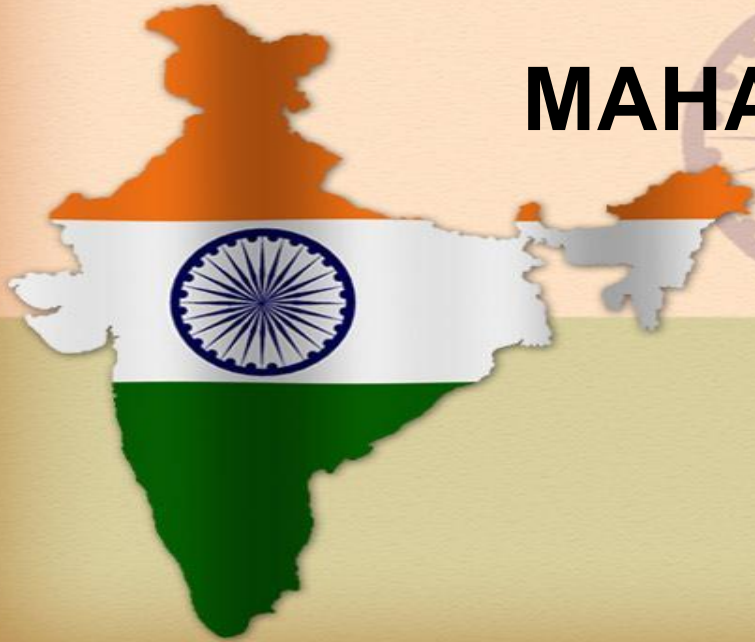
■ युद्ध के लिए सदैव तैयार रहना।

By Shubham Tripathi Sir

# Paper 2 part A Unit 3



## MAHATMA GANDHI



1869-1948



प्रस्तुतकर्ता शुभम त्रिपाठी

# MAHATMA GANDHI

पिछले वर्षों के प्रश्न 2014 से 2021 अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. गांधी जी की अनुसार सत्याग्रह का क्या अर्थ है - 2014
2. महात्मा गांधी की नैतिक शिक्षा क्या है - 2015
3. महात्मा गांधी की प्रसिद्ध पुस्तक का नाम क्या है? – 2015
4. सर्वोदय का अर्थ बताइए - 2017
5. गांधी जी के द्वारा बताए गए 11 वचनों में से किन्ही 6 वचनों का उल्लेख करें - 2018

# MAHATMA GANDHI

पिछले वर्षों के प्रश्न 2014 से 2021

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. महात्मा गांधी के अनुसार अहिंसा - 2015
2. लोकतंत्र में गांधीजी के विकेंद्रीकरण के सिद्धांत को समझाइए - 2016
3. गांधी दर्शन में ट्रस्टीशिप की अवधारणा को समझाइए - 2017
4. गांधीवादी दर्शन के नैतिक बिंदुओं पर प्रकाश डालिए – 2018
5. मोहनदास करमचंद गांधी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत को स्पष्ट कीजिए। 2020

- मोहनदास करमचन्द गांधी

- जन्म 2 अक्टूबर, 1869 गुजरात के पोरबंदर
- पिता का नाम करमचन्द - पोरबंदर राजकोट तथा बांकानेर रियासतों के
- माता का नाम पुतलीबाई
- प्राथमिक शिक्षा- राजकोट में
- विवाह 1881 में कस्तूरबा के साथ
- 1888 में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण
- उल्लेखनीय कार्य- चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, पूना पैक्ट, असहयोग आंदोलन की भारत की आजादी के आंदोलनों में भूमिका थी |





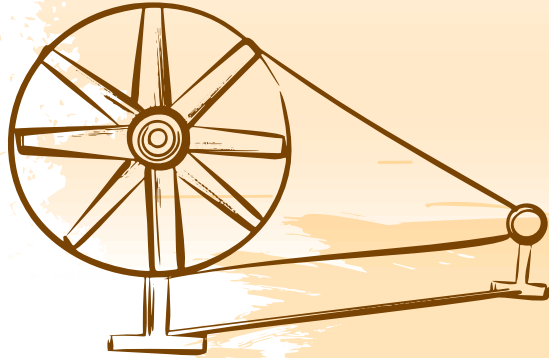
## सामाजिक स्थिति

गांधी का जन्म हिंदू समाज की दूसरी सबसे बड़ी जाति -  
शासक-योद्धा जाति में हुआ था।



आधुनिक पोरबंदर, भारत

## जीवन परिचय

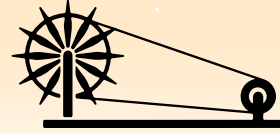


4 सितम्बर, 1888 में बैरिस्टर की पढ़ाई हेतु बम्बई से इंग्लैण्ड गए।  
1893 में उन्हें दक्षिणी अफ्रीका के गोरे लोगों द्वारा काले लोगों से रंग-भेद की नीति and एशियाटिक (काले लोगों का) अधिनियम और ट्रांसवाल देशान्तरवास अधिनियम (Trusvaal Inumigration Act) के against विरोध किया। एक टॉलस्टॉय फॉर्म को स्थापना की। दक्षिण अफ्रीका की सरकार को उनकी बात माननी पड़ी और 1914 में भारतीयों के विरुद्ध अधिकतर कानून रद्द कर दिए गए।  
9 जनवरी, 1915 को गांधीजी भारत लौट आए। चम्पारण, अहमदाबाद व खोड़ा में किए सत्याग्रह के साथ ही राजनीति शुरू की

# गांधीजी के नेतृत्व में



1920 में असहयोग  
आन्दोलन,



1930 में सविनय अवज्ञा  
आन्दोलन

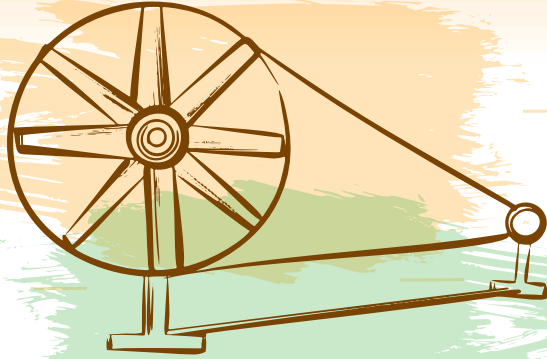


1942 में भारत छोड़ो  
आन्दोलन किए गए।



सिद्धांतों का प्रतिपादन मुख्य  
रूप से दो पुस्तकों 'हिंद  
स्वराज' तथा अपनी  
आत्मकथा 'मेरे सत्य के  
साथ प्रयोग' में किया

# गांधीजी के नेतृत्व में



30 जनवरी, 1948 को बिडला भवन में प्रार्थना सभा के दौरान नाथूराम गोडसे ने उनकी हत्या कर दी  
रचनाएं हैं- शांति और युद्ध में अहिंसा, नैतिक धर्म, सत्याग्रह, सत्य ही ईश्वर है, सर्वोदय आदि। इसके अतिरिक्त गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में इंडियन ओपिनियन नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन किया। भारत में यंग इंडिया, हरिजन, नवजीवन, हरिजन सेवक, हरिजन बंधु आदि पत्रों का संपादन किया।

# गांधी पर प्रभाव Gandhi's Influence



01

धार्मिक ग्रंथों का प्रभाव

05

सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव

02

विभिन्न धर्मों  
का प्रभाव

04

सुधारवादी आंदोलनों का प्रभाव

03

दार्शनिकों का प्रभाव

**धार्मिक ग्रंथों का प्रभाव** - गांधीजी के विचारों पर वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि का प्रभाव देखा जा सकता है। जैसे- वर्णाश्रम व्यवस्था, ब्रह्म विचार, आत्मा की अमरता, कर्म सिद्धांत, पुनर्जन्म, रामराज्य की कल्पना आदि।

**विभिन्न धर्मों का प्रभाव** - गांधीजी के विचारों पर जैन धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, यहूदी धर्म आदि का प्रभाव हुआ। गांधीजी सभी धर्मों को समान भाव से देखते हैं।

**दार्शनिकों का प्रभाव** - गांधीजी के विचारों पर सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, जॉन रस्किन, टॉलस्टॉय, थोरो का प्रभाव पड़ा है। जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट का' गांधीजी ने सर्वोदय के नाम से गुजराती में अनुवाद किया उन्होंने इस पुस्तक से तीन बातें सीखी

1. एक व्यक्ति का हित सभी व्यक्तियों के हित में निहित है।
2. वकील तथा नाई के काम का समान महत्व है।
3. शारीरिक श्रम करने वाले किसान या कारीगर का जीवन हो वास्तविक जीवन है।

**सुधारवादी आंदोलनों का प्रभाव** - भारत में चल रहे सांस्कृतिक, दार्शनिक, सुधार एवं धार्मिक सुधारवादी आंदोलनों का

# महात्मा गांधी का नैतिक दर्शन Moral Philosophy of Mahatma Gandhi



**सत्य ही ईश्वर है-** गांधीजी के अनुसार सत्य 'सत' शब्द है, जिसका अर्थ होना। अतः सत्य को ईश्वर कहने का कारण है कि सत्य यही है जिसकी सत्ता होती है।

**अहिंसा-** अहिंसा का अर्थ गांधीजी के अनुसार अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है हिंसा या हत्या न करना। यहां हिंसा से आशय मन, वचन एवं कर्म से किसी भी प्राणी को स्वार्थवश, क्रोधवश या दुःख देने की इच्छा से कष्ट पहुंचाना या मारना है।

**अहिंसा के दो पक्ष नकारात्मक तथा सकारात्मक हैं-**

किसी प्राणी को काम क्रोध व द्वेष से हिंसा करना उसका नकारात्मक रूप है, जबकि सभी प्राणियों के प्रति प्रेम, दया, सहानुभूति एवं सेवाभाव रखना अहिंसा का सकारात्मक पक्ष है।

• **निरपेक्ष अहिंसा और अनिवार्य हिंसा**

निरपेक्ष अहिंसा का अर्थ है- अनजाने में दुर्भावना, क्रोध और घृणा से छुटकारा और सबके प्रति प्रेम व सभी प्रकार की हिंसा त्यागना है।



गांधीजी ने अहिंसा की निम्नलिखित तीन अवस्थाएं बताई हैं-

**1. जागृत अहिंसा** इसे वीर पुरुषों की अहिंसा भी कहते हैं। इसे व्यक्ति बोझ समझकर स्वीकार नहीं करता बल्कि नैतिकता के कारण स्वीकार करते हैं।

**2. औचित्यपूर्ण अहिंसा** यह अहिंसा निर्बल व्यक्तियों की अहिंसा है।

**3. कायरों की अहिंसा** - यदि कायरता या हिंसा में से किसी एक का चुनाव करना हो तो गांधीजी हिंसा को स्वीकार करते हैं।

**सत्य गांधीजी ने सत्य को 2 अर्थों में समझाया है।**

- सत्यमीमांसीय दृष्टिकोण- सत्य ही ईश्वर है।
- नैतिक दृष्टिकोण- जिसे मूल्य के अर्थ में स्वीकार करते हैं।

- **अस्तेय** चोरी न करना तथा व्यापक अर्थ में किसी को ऐसी वस्तु से वंचित न करना, जिस पर उसका अधिकार है। गांधीजी के अनुसार चोरी 3 प्रकार से हो सकती है भौतिक, मानसिक एवं वैचारिक जो व्यक्ति सत्य एवं अहिंसा का पालन करेगा, वह स्वाभाविक रूप से अस्तेय का पालन भी करेगा। क्योंकि चोरी करना कहीं न कहीं किसी प्रकार से मानसिक हिंसा है।
- **अपरिग्रह** - गांधीजी ने आवश्यकता से अधिक जमा न करने को अपरिग्रह कहते हैं। गांधीजी का कहना है कि अधिक से अधिक चीजों को रखना अशुभ है। हर मानव की ऐसी आदत डालनी चाहिए कि जो उसके पास हो, उसी में जीवन निर्वाह करें।
- **ब्रह्मचर्य** गांधीजी के अनुसार ब्रह्मचर्य का सामान्य अर्थ है मन, वचन तथा कर्म से इन्द्रियों पर संयम रखना।

## सत्याग्रह

गांधीजी सत्य एवं अहिंसा के पोषक थे। सत्य और अहिंसा का संबंध ही सत्याग्रह है। अहिंसा को गांधीजी ने अपने राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में अपनाया और उसी का नाम सत्याग्रह दिया। गांधीजी ने 1908 में हिंद स्वराज में सत्याग्रही के गुणों का वर्णन किया है और निम्नलिखित नियमों के पालन पर बल दिया है-

1. खुले दिमाग होना चाहिए।
2. मन, वचन एवं कर्म से अहिंसक होना चाहिए।
- 3 अपने व्यवहार एवं विचार में दृढ़ होना चाहिए।
4. विनम्र, निर्भय एवं निःस्वार्थी होना चाहिए।
5. अपने कार्य व उद्देश्य के प्रति ईमानदार रहना चाहिए।

**6. अस्वाद** मनुष्य जब तक जीभ के रसों को न जीते, तब तक ब्रह्मचर्य का पालन बहुत कठिन है। भोजन केवल शरीर पोषण के लिए हो, स्वाद या भोग के लिए नहीं।

**7. अभय-** जो कि किसी न डरे !

**8. अस्पृश्यता निवारण** - छुआछूत हिन्दू धर्म का अंग नहीं है इसको हटाना ही प्रत्येक हिन्दू का धर्म है, कर्तव्य है।

**9. शरीरिक श्रम** - जिनका शरीर काम कर सकता है, उन स्त्री-पुरुषों को अपना काम स्वयं करना चाहिये । बिना कारण दूसरों से सेवा नहीं लेनी चाहिए।

**10. सर्वधर्म** समभाव जितना सम्मान हम अपने धर्म का करते हैं, उतना ही सम्मान हमें दूसरे के धर्म का भी करना चाहिए। हमेशा प्रार्थना यही की जानी चाहिए कि सब धर्मों में पाए जाने वाले दोष दूर हों।

**11. स्वदेशी** अपने आसपास रहने वालों की सेवा करना स्वदेशी धर्म है ।

# गांधीजी के सामाजिक विचार Gandhi's Social Thoughts

वर्णव्यवस्था

नारी सुधार

बुनियादी शिक्षा

अस्पृश्यता का अन्त

वर्ण व्यवस्था

गांधीजी सामाजिक रूप से वर्ण व्यवस्था का समर्थन करते हैं, किन्तु वे जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता को नहीं मानते थे। वर्ण एक कर्म आधारित व्यवस्था है, जबकि जाति एक जन्म आधारित व्यवस्था है।

नारी सुधार

गांधीजी ने पर्दा प्रथा, बाल विवाह और देवदासी प्रथा आदि स्त्री जीवन से सम्बन्धित बुराईयों का विरोध किया व स्त्रियों को कानून तथा व्यवहार में पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त होने चाहिए।

## गांधीजी के राजनीतिक विचार

राज्य संबंधी अवधारणा

राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रवाद

कर्तव्य एवं अधिकार

राजनीति का आध्यात्मीकरण

राज्यविहीन समाज

व्यक्ति का साध्य व राज्य का साधन होना

गांधीजी राज्य विरोधी थे। मार्क्सवादियों की तरह वे एक राज्यविहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे।

**धर्म और सर्वधर्मसमभाव-** गांधीजी का हिन्दुत्व प्रेम अन्य धर्मों का विरोधी नहीं है। गांधीजी सभी धर्मों का आदर करते थे तथा सर्वधर्मसमभाव में विश्वास करते थे। धर्म को व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी बतलाया है

गांधीजी के अनुसार प्रार्थना का उद्देश्य ईश्वर से बिना कुछ मांगे सब प्राप्त करना होता है। गांधीजी के अनुसार धर्म का मूल उद्देश्य है- “मानव की सेवा करना ।”

गांधीजी के धार्मिक विचार

**साम्प्रदायिक एकता-** गांधीजी का एक प्रमुख आदर्श भारत के सभी सम्प्रदायों को एक रखना है। उन्होंने विशेषकर हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया।

औद्योगिकीकरण का  
विरोध

ट्रस्टीशिप & समाजवादी  
अर्थव्यवस्था की स्थापना पर  
बल

वर्ग सहमोग पर बल

रोटी के लिए श्रम  
सिद्धान्त

गांधीजी के  
आर्थिक  
विचार

कुटीर उद्योगों का समर्थन

स्वदेशी पर बल

अपरिग्रह का सिद्धान्त



## राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रवाद

गांधीजी का दृष्टिकोण वसुधैव कुटुम्बकम् का था, किंतु इसके साथ ही वे राष्ट्र और राष्ट्रवाद के समर्थक थे।

उनका मानना था कि मानव जाति के विकास में सभी की भूमिका रहती है जैसे परिवार, जाति, गाँव, प्रदेश और राष्ट्र ।

गांधीजी उपराष्ट्रवाद के उपासक नहीं थे।

अंतर्राष्ट्रवाद से लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। स्पष्ट है कि गांधीजी राष्ट्रवाद को अंतर्राष्ट्रवाद के मार्ग को बाधा नहीं समझते थे।

## गांधीजी के अनुसार वर्ण व्यवस्था के लाभ

1. वर्ण व्यवस्था से आजीविका निश्चित होती है
2. पैतृक व्यवसाय अपनाने से उसे किसी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है।
3. पैतृक व्यवसाय को अपनाने से कार्य कुशलता में वृद्धि होती है, जिससे सामाजिक-आर्थिक विकास होता है।

गांधीजी वर्ण व्यवस्था के समर्थक होने के बावजूद किसी प्रकार के ऊँच-नीच, कुआ-छूत, अस्पृश्यता व श्रेणीकरण में विश्वास नहीं करते हैं। गांधीजी ने कहा है कि एक वकील व नाई का वेतन समान होना चाहिए।

## शिक्षा प्रणाली की विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

1. शिक्षा के अन्तर्गत प्रत्येक विद्यार्थी को सब विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए जिसे 'सह-सम्बन्ध सिद्धान्त' कहते हैं।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
3. शिक्षा स्वावलम्बी हो अर्थात् विद्यार्थी जिस दस्तकारी के आधार पर शिक्षा प्राप्त करते हैं, उस दस्तकारों से विद्यार्थी जीवन में और उसके बाद भी अपना भर-पोषण कर सकें।
4. गांधीजी द्वारा शिक्षा में चरित्र-निर्माण पर बहुत अधिक बल दिया गया था।

**औद्योगिकीकरण का विरोध-** गांधीजी ने औद्योगिक क्रांति व केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था का विरोध किया। औद्योगिकीकरण से साम्राज्यवाद को बढ़ावा मिलता है। इससे मानव का शारीरिक क्षमतायें कम होती हैं

**वर्ग सहयोग पर बल-** पूंजीपति और श्रमिक में पारस्परिक सहयोग एवं सामूहिक प्रयत्न किए जाए तो अर्थव्यवस्था को उच्च शिखर तक पहुंचाया जा सकता है।

**कुटीर उद्योगों का समर्थन-** गांधीजी समाज की इकाई के रूप में आत्मनिर्भर ग्राम व्यवस्था के समर्थक हैं। अतः वे ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उद्योगों का समर्थन करते हैं। वह केवल ऐसी मशीनों का प्रयोग उचित मानते थे, जिनका प्रयोग जनसाधारण के लाभ हेतु किया जा सके।

**अपरिग्रह का सिद्धान्त-** अपरिग्रह का अर्थ है कि व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार रहना चाहिए। भारतीय समाज अत्याधिक सम्पत्ति collect करने की भावना है। अतः भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत अच्छा करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपरिग्रह के सिद्धान्त का अनुसरण करना चाहिए।

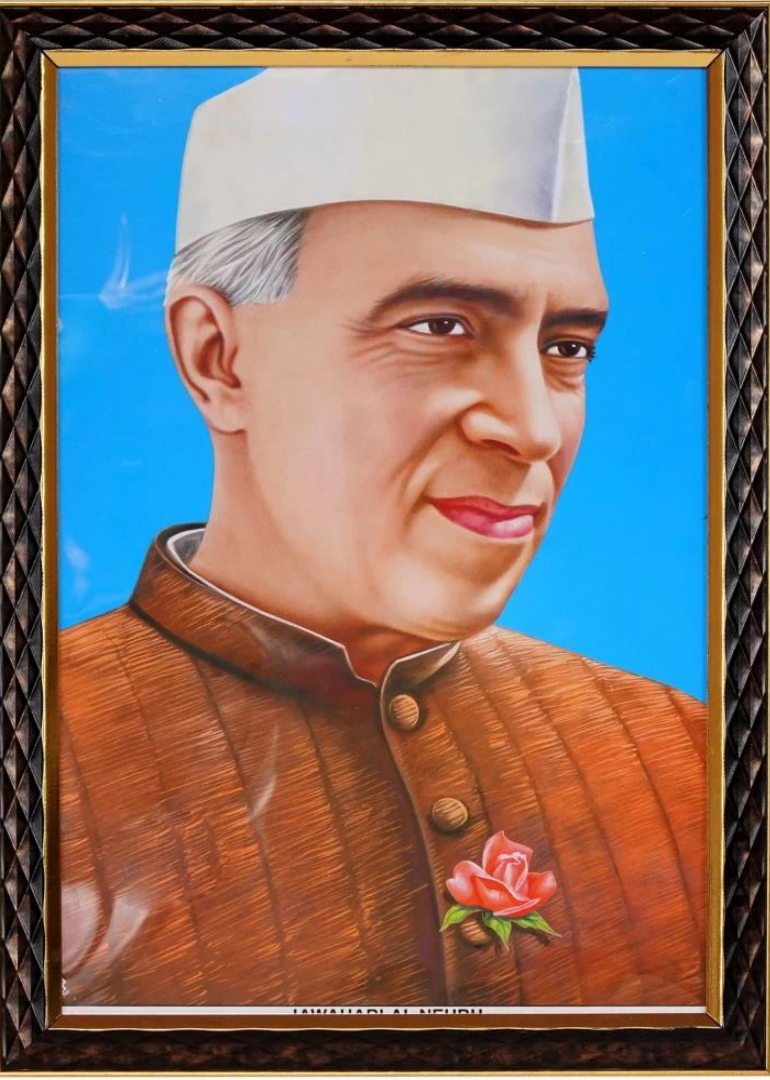
**[D] ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त-** गांधीजी ने सामाजिक-आर्थिक न्याय की स्थापना हेतु ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इसके माध्यम से वह समाज में आर्थिक विषमता की समस्या का समाधान करने का प्रयास करते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार गांधीजी निजी सम्पत्ति को मान्यता देते हैं।

**D स्वदेशी पर बल-** गांधीजी का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वदेश में निर्मित वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए। स्वदेशी से वह समानता की स्थापना करते हैं, क्योंकि यदि सभी स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करेंगे, तो सबका रहन-सहन समान हो जाएगा और सामाजिक विषमता समाप्त हो जाएगी। इसके अलावा स्वदेशी से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी और नागरिकों का सम्मान बढ़ेगा।

**रोटी के लिए श्रम सिद्धान्त-** गांधीजी ने श्रम को अत्यधिक महत्व दिया है। वे मानते हैं कि जो भ्रम नहीं करता, उसे खाने का अधिकार नहीं है। वे श्रम किए बिना खाने को चोरी मानते हैं। वह इससे स्वस्थ रहेगा और अपनी आजीविका भी अर्जित करेगा। गांधीजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन चरखा चलाना चाहिए, जिससे उसका आध्यात्मिक कल्याण होगा।

## गांधीवाद और मार्क्सवाद Gandhism and Marxism

- ईश्वर व धर्म का विरोध मार्क्सवाद अनीश्वरवादी है और धर्म को अफीम कहते हैं, जबकि गांधी धर्म ईश्वर में गहरी आस्था रखते हैं।
- मार्क्सवर्ग संघर्ष पर बल देते हैं, जबकि गांधी वर्ग समन्वय पर बल देते हैं।
- **व्यक्तिगत संपत्ति के विषय में अंतर** – मार्क्सवाद व्यक्तिगत संपत्ति को नष्ट करना चाहता है तथा संपूर्ण संपत्ति समाज अथवा राज्य को प्रदान करता है। गांधीवाद व्यक्तिगत संपत्ति को अपने आप में कोई बुराई नहीं समझता और न ही उसे नष्ट करना चाहता है।
- **केंद्रीयकरण और विकेंद्रीयकरण में अंतर** मार्क्सवाद औद्योगीकरण में विश्वास करता है तथा विशाल उद्योगों की स्थापना के साथ-साथ उत्पादन बढ़ाने के लिए उद्योगों का अधिकाधिक मशीनीकरण करना चाहता है, लेकिन गांधीवाद कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने के पक्ष में है।



जवाहरलाल नेहरू  
भारत के पूर्व प्रधानमंत्री



## जवाहरलाल नेहरू

**जन्म** 14 नवंबर, 1889 को इलाहाबाद में एक कश्मीरी परिवार में हुआ

**पिता** पं. मोतीलाल नेहरू (वकील) पाश्चात्य रहन-सहन & **माता** स्वरूपरानी भारतीय संस्कृति से प्रभावित थीं।

मिस्टर ब्रुक्स जिनका नेहरूजी के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। 15 वर्ष की अवस्था में जवाहर इंग्लैंड गए और ट्रीनेटी कॉलेज, लंदन से बीएससी की 1912 में इनर टेम्पुल से बार एट लॉ की उपाधि मिली तथा इंग्लैंड से लौटने के बाद इलाहाबाद में ही वकालत प्रारंभ की।

यूरोप यात्रा के बीच 1927 में उन्होंने ब्रुसेल्स में समाजवादियों एवं साम्यवादियों की कांग्रेस में भाग लिया, जिसका प्रभाव उनके मन पर गहरा पड़ा और समाजवाद को मानने लगे। नवंबर 1927 में

सन् 1929 में जवाहरलाल को कांग्रेस का सभापति चुन लिया गया। दिसंबर 1929 में उन्होंने कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता की तथा 31 दिसंबर, 1929 को अर्द्ध- रात्रि के तुरंत बाद उन्होंने रावी के किनारे (लाहौर में) तिरंगा फहराकर भारत के लिए पूर्ण आजादी का संकल्प दोहराया।

गांधीजी के 1940 के व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने भाग लिया। 1942 में राष्ट्रीय आंदोलन तीव्र हो गया। अन्य नेताओं के साथ श्री जवाहरलाल नेहरू को भी गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें अहमदनगर जेल में भेज दिया गया। अहमदनगर जेल में वे लगभग तीन वर्ष तक रहे और वहां उन्होंने अपनी पुस्तक 'भारत की खोज' (Discovery of India) की रचना की।

अगस्त 1946 में वायसराय लॉर्ड वेवेल ने श्री नेहरू से केंद्र में अंतरिम सरकार बनाने के लिए कहा।

13 दिसंबर, 1946 को संविधान निर्मात्री सभा में उन्होंने अंतरिम सरकार के अध्यक्ष के रूप में 'उद्देश्य प्रस्ताव' रखा, प्रस्ताव के द्वारा उनकी प्रजातंत्र एवं समाजवाद का प्रचार प्रसार किया

15 अगस्त, 1947 को विभाजन उपरांत देश को आजादी मिली तो जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने तथा 27 मई, 1964 के दिन तक अर्थात् अपनी मृत्यु के समय तक इस पद पर रहे। लगभग 17 वर्षों के अपने कार्यकाल में उन्होंने स्वतंत्र भारत को एक सबल आर्थिक और राजनीतिक स्वरूप प्रदान किया। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की प्रतिष्ठा का प्रचार प्रसार किया

## नेहरू के चिंतन पर प्रभाव Nehru's Influence on Thought

- पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव

नेहरू के चिंतन पर उनके पिता मोतीलाल नेहरू का प्रभाव था। उन्हें देशभक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, धार्मिक सहिष्णुता, नेतृत्व शैली, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, दृढ़ता आदि अपने पिता से प्राप्त हुआ। इसके अलावा बाल्यावस्था में थियोसोफिकल सोसायटी से संबंधित श्री एफ.टी. ब्रक्स के मानवतावादी विचारों का भी प्रभाव नेहरू पर पड़ा।

- गांधीजी का प्रभाव

गांधीजी के विचारों ने नेहरू के व्यक्तित्व और चिंतन पर सबसे अधिक प्रभाव डाला। गांधीजी से उन्होंने सत्याग्रह, अहिंसा, शांति और नैतिकता आदि का अनुसरण किया।

- अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव

नेहरू के व्यक्तित्व पर अंग्रेजी शिक्षा का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। उनकी शिक्षा ब्रिटेन के हैरो पब्लिक स्कूल और केंब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज से हुई है। इसी दौरान उन पर अंग्रेजी आचार-विचार का प्रभाव पड़ा।

**महान हस्तियों के विचारों का प्रभाव-** नेहरू के चिंतन पर गोपालकृष्ण गोखले, श्रीमती एनी बेसेंट, चितरंजन दास, रवींद्रनाथ टैगोर मार्क्स और लेनिन आदि के समाजवादी विचारों का प्रभाव पड़ा। अपनी कृति 'भारत की खोज' में नेहरू ने लिखा कि मार्क्स और लेनिन के अध्ययन ने मन पर अभूतपूर्व प्रभाव डाला।

**पाश्चात्य विचारधाराओं का प्रभाव-** व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं गरिमा अभिव्यक्ति और प्रेस की स्वतंत्रता स्वतंत्र निर्वाचन और संसदीय सरकार की अवधारणा को नेहरू ने उदारवाद से ही ग्रहण किया है।

**भारतीय साहित्य एवं संस्कृतियों का प्रभाव-** उन्होंने ग्रंथों में वेदों, उपनिषदों एवं गीता का अध्ययन किया। वे गौतम बुद्ध के विचारों मुख्यतः सत्य, अहिंसा से भी काफी प्रभावित थे।

**लोकतंत्र संबंधी विचार Ideas of Democracy-** वे महान लोकतांत्रिक थे। उनके लोकतंत्र संबंधी विचारों पर जॉन लॉक, रूसो, मॉटिस्क्यू बेंथम, जे. एम. मिल और कार्लमार्क्स का प्रभाव देखा गया उनके लोकतंत्र संबंधी विचारों को निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है

## मानवतावाद

नेहरू के लोकतांत्रिक विचारधारा का केंद्र बिंदु उनका मानवतावाद है। इन्होंने राजनीतिक व्यवस्था का समर्थन किया, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपना सर्वांगीण विकास करने का अवसर प्राप्त हो।

## लोकतंत्र का मुख्य आधार सामाजिक-आर्थिक समानता

नागरिकों को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता देना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें अवसरों की समानता दी जानी चाहिए। सामाजिक एवं आर्थिक समाज different होने से लोकतंत्र का विकास कभी नहीं हो सकता है।

## लोकतंत्र आत्म अनुशासन के रूप में

नेहरू इसे मूल्यों और नैतिक मानदंडों की पद्धति के रूप में देखते थे। जितना अधिक आत्म अनुशासन

**लोकतंत्र एक साधन के रूप में-** नेहरू लोकतंत्र की विभिन्न मूल्यों (स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं बंधुत्व एवं विचारधाराओं (समाजवाद एवं धर्मनिरपेक्षता) को प्राप्त करने के साधन के रूप में देखते हैं।

**लोकतंत्र का संसदीय स्वरूप-** नेहरू ने संसदीय शासन प्रणाली को उचित माना संसदीय प्रजातंत्र में शासन का संचालन जनता के प्रतिनिधियों के माध्यम से होता है, जिससे जनता को शासन में भाग लेने का अवसर प्राप्त होता है।

**लोकतंत्र में नागरिक स्वतंत्रताओं पर बल-** नेहरू विचार, अभिव्यक्ति व प्रेस की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक के रूप में उनका कहना था कि विरोधी मत को बल पूर्वक हटा देना और उसको show न होने देना लोकतंत्र के लिये नुकसानदायक है

## लोकतांत्रिक समाजवाद Democratic Socialism

समाजवादी लक्ष्य की प्राप्ति के आधार पर समाजवाद के दो रूप दिखाई देते हैं पहला क्रांतिकारी समाजवाद (Revolutionary Socialism) और दूसरा विकासवादी समाजवाद (Evolutionary Socialism) मार्क्स और उसके अनुयायी समाजवाद के प्रथम रूप को स्वीकार करते हैं। विकासवादी समाजवादियों का समूह लोकतांत्रिक समाजवाद की स्थापना करना चाहता है। ये लोकतांत्रिक प्रक्रिया का प्रयोग करके समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहते हैं।

जवाहरलाल नेहरू को लोकतांत्रिक समाजवाद का प्रणेता कहा जाता है। वे स्वतंत्र भारत का निर्माण इसी आधार पर करना चाहते थे। उनके लोकतांत्रिक समाजवाद संबंधित विचारों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझ सकते हैं-



## लोकतंत्र व समाजवाद

पं. जवाहरलाल नेहरू एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे, जिसमें नागरिकों को राजनीतिक स्वतंत्रता एवं अधिकार मिले, साथ ही समाजवाद के माध्यम से वे आर्थिक समानता तथा न्याय को अवधारणा स्थापित करना चाहते थे। इन दोनों अवधारणाओं को लागू करने के लिए लोकतंत्र तथा समाजवाद के समन्वय पर बल दिया।

**समाजवाद का सही स्वरूप-** समाजवाद नैतिक और दार्शनिक चिंतन भी है। नेहरू ने गांधीवाद की नैतिक व्यवस्थाओं तथा मार्क्सवाद की आर्थिक व्यवस्था के बीच समन्वय स्थापित करते हुए उसे व्यावहारिक रूप में अपनाने का प्रयास किया।

**आर्थिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण-** नेहरू के अनुसार समाजवाद की आवश्यकता देश में गरीबी, बेरोजगारी और पिछड़ापन दूर करने के लिए आवश्यक है।

**समतावादी समाज की स्थापना-** समतावादी समाज वह होता है, जिसमें समाज के लोगों को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं इसकी आवश्यकता भारत को थी इसलिए नेहरू ने लोकतांत्रिक समाजवाद को अपनाया।

**लोककल्याणकारी राज्य-** उद्देश्य आर्थिक, राजनीतिक स्वतंत्रता तथा समानता की प्राप्ति करना है।

**मिश्रित अर्थव्यवस्था-** पूंजीवाद और समाजवाद दोनों के गुणों पर आधारित होता है। नेहरू का मत था कि भारत की तत्कालीन परिस्थितियां ऐसी हैं, क्योंकि केवल पूंजीवाद या समाजवाद को अपनाकर भारत विकास नहीं कर सकता।

## धार्मिक विचार Religious Views

धर्म

धर्मनिरपेक्षता

सांप्रदायिकता

धर्म संबंधी विचार

नेहरू न तो धार्मिक थे, न नास्तिक थे और न ही धर्म विरोधी थे।

**धर्मनिरपेक्षता**

नेहरू जी के अनुसार भारत में धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार सभी संप्रदायों को समान रूप से प्राप्त हो अतः वे मानते थे कि धार्मिक कार्यों में राज्य को कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। नेहरू के धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को निम्नानुसार समझा जा सकता है-

1. राज्य को सामाजिक हित, समाज सुधार, शिष्टाचार, स्वास्थ्य तथा सार्वजनिक व्यवस्था के हित के अतिरिक्त व्यक्ति के धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप का प्रयास नहीं करना चाहिए।
2. राज्य को धर्म के आधार पर अपने नागरिकों के साथ कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए।

3 सामाजिक जीवन में सांप्रदायिक विभिन्न धर्मों के अनुयायी परस्पर विश्वास और समानता के जीवन में समान रूप से योगदान दे सके।

4 गलत विश्वासों की रूढ़ियों को अस्वीकार करने के लिए व्यक्ति को तत्पर रहना चाहिए।

5. सामाजिक, विवाह, उत्तराधिकार विधि तथा दीवानी और फौजदारी न्याय को धार्मिक विश्वासों के आधार पर नहीं, बल्कि विवेकसम्मत, वैज्ञानिक व मानवीय आधारों पर निर्धारित किया जाना चाहिए।

### सांप्रदायिकता

नेहरू सांप्रदायिकता के विरोधी थे। उन्होंने ब्रिटिश शासकों द्वारा भारत में सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली लागू करने का विरोध किया।

## नेहरू का राष्ट्रवाद Nehru's Nationalism/

जवाहरलाल नेहरू एक महान राष्ट्रवादी थे, उनका राष्ट्रवाद रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा प्रतिपादित समन्वयात्मक सार्वभौमवाद से प्रभावित था। उनके राष्ट्रवाद संबंधी विचारों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है।

### संतुलित राष्ट्रवाद का समर्थन

नेहरू उदारवाद में विश्वास करते थे तथा वे उदार राष्ट्रवादी थे। उनके अनुसार उग्र राष्ट्रवाद से नस्लवाद, राष्ट्रों के प्रति घृणा, साम्राज्यवाद, युद्धवाद आदि बुराइयों का जन्म हुआ।

### स्वतंत्रता का मूल प्रेरणा स्रोत

उन्होंने मिस्र, मोरक्को, इंडोनेशिया, अल्जीरिया, कांगो आदि देशों के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलनों का समर्थन किया।

### विविधता में एकता

भारतीय समाज विविधता वाला रहा है। यहां अनेक जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र एवं संस्कृति के लोग रहते हैं।

**धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद का समर्थन-** नेहरू के राष्ट्रवाद का आधार धर्म नहीं, अपितु धर्मनिरपेक्षता थी। उनका मानना था कि किसी धर्म विशेष को राज्य द्वारा विशेष संरक्षण नहीं प्रदान किया जाएगा और न ही धर्म के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव किया जाएगा।

**राष्ट्रीयता का विरोध-** नेहरू राष्ट्रवाद को राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों के लिए नुकसानदायक मानते हैं। जनता में जोश भरकर तत्कालीन राष्ट्रीय हितों को पूरा किया जा सकता है।

**साम्राज्यवाद का विरोध-** नेहरू इसका विरोध करते हैं कि साम्राज्यवादी किसी राष्ट्र या राष्ट्रों का शोषण करें। नेहरू की भावना मानव मात्र की स्वतंत्रता एवं कल्याण में है।

**समन्वयवादी दृष्टिकोण-** नेहरू का राष्ट्रवाद अतीत, वर्तमान व भविष्य के समन्वय पर आधारित है। वे भारत को अतीत की इच्छाओं का वर्तमान में अनुसरण करना चाहते हैं और उन्हें भविष्य की प्रेरणा बनाने चाहते हैं।

## नेहरू का अंतर्राष्ट्रवाद Nehru's Internationalism

नेहरू महान अंतर्राष्ट्रीयतावादी थे व राज्य के आदर्श में विश्वास करते थे। संयुक्त राष्ट्र संघ के आदर्शों में उनका विश्वास था नेहरू के अंतर्राष्ट्रीयवाद संबंधी विचार निम्नलिखित हैं

### राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रवाद की पारस्परिकता

राष्ट्रवाद अंतर्राष्ट्रीयता का पर्याय है। वे भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को विश्व के अन्य देशों के मुक्ति आंदोलनों का एक हिस्सा मानते थे।

### अंतर्राष्ट्रवाद का मानववादी आधार

नेहरू को मान्यता थी कि राष्ट्रवादी हुए बिना अंतर्राष्ट्रवादी नहीं हो सकते। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत द्वारा जो साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और रंगभेद विरोधी विदेशी नीति अपनाई गई।

## विश्वशांति

नेहरू विश्वशांति को एक आवश्यक और आदर्श साध्य मानते हैं । नेहरू ने कहा कि युद्ध में जीत किसको होती है यह महत्वहीन है।

## गुटनिरपेक्षता

इसके अनुसार विश्व के शक्ति गुटों से अलग रहते हुए एक स्वतंत्र विदेशी नीति का अनुसरण करना है।  
गुटनिरपेक्षता आंदोलन के उद्देश्य थे-

1. विश्वशांति पर बल
2. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व
3. संयुक्त राष्ट्र को प्रभावी बनाना,
4. अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का पालन
5. साम्राज्यवाद का विरोध
6. रंगभेद का उन्मूलन,
7. तीसरी दुनिया को एकता में विश्वास।



## पंचशील

नेहरू को विश्व को प्रमुख देन पंचशील सिद्धांत हैं

1. प्रत्येक देश एक दूसरे को प्रादेशिक अखंडता और सर्वोच्च सत्ता के लिए पारस्परिक सम्मान की भावना रखे।
2. एक राज्य दूसरे राज्य पर आक्रमण न करे।
3. प्रत्येक देश एक दूसरे को समानता की भावना से देखे और एक दूसरे के लाभ का ध्यान रखे।
4. प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करे।

## योगदान Contribution

### ● लोकतंत्र में अटूट आस्था

नेहरू को सदैव लोकतांत्रिक परंपराओं का पालन किया। उन्होंने भारत में राजनीति और भारत में संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करने का कार्य किया।

### ● लोकतांत्रिक समाजवाद का प्रतिपादन

इस तरह भारत की राजनीतिक एवं आर्थिक दोनों ही नीति पर इसका प्रभाव पड़ा।

- नेहरू का मानववाद

नेहरू मानवतावादी थे। उनके लिए मानव साध्य है, साधन नहीं, वह राज्य के लिए नहीं बल्कि राज्य उसके लिए है।

- अंतर्राष्ट्रवाद

संयुक्त राष्ट्र संघ को सशक्त बनाने, विश्व समस्याओं का समाधान पंचशील द्वारा करने तथा महाशक्तियों के बीच संतुलन बनने पर बल दिया।

- आधुनिक भारत के निर्माता-

उनका मुख्य उद्देश्य भारत को हर क्षेत्र में समृद्ध बनाना था। इसके लिए उनके द्वारा पंचवर्षीय योजना शुरू की गई, औद्योगिकरण को प्रोत्साहन देने के लिए बड़े बड़े कारखानों की स्थापना की गई, कृषि क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाने हेतु हरित क्रांति, दूध उत्पादन में वृद्धि हेतु श्वेत क्रांति लाई गई। इसके अलावा उनको विदेश नीति के कार्यान्वयन का भी आधार भारत का समग्र विकास था ताकि विश्व के अधिक से अधिक देश भारत के नव निर्माण में अपनी भूमिका अदा कर सकें।

- गुटनिरपेक्षता

एशिया अफ्रीका तथा लेटिन अमेरिका के देशों के समक्ष ये चुनौती थी कि वे किस गुट में शामिल हो।

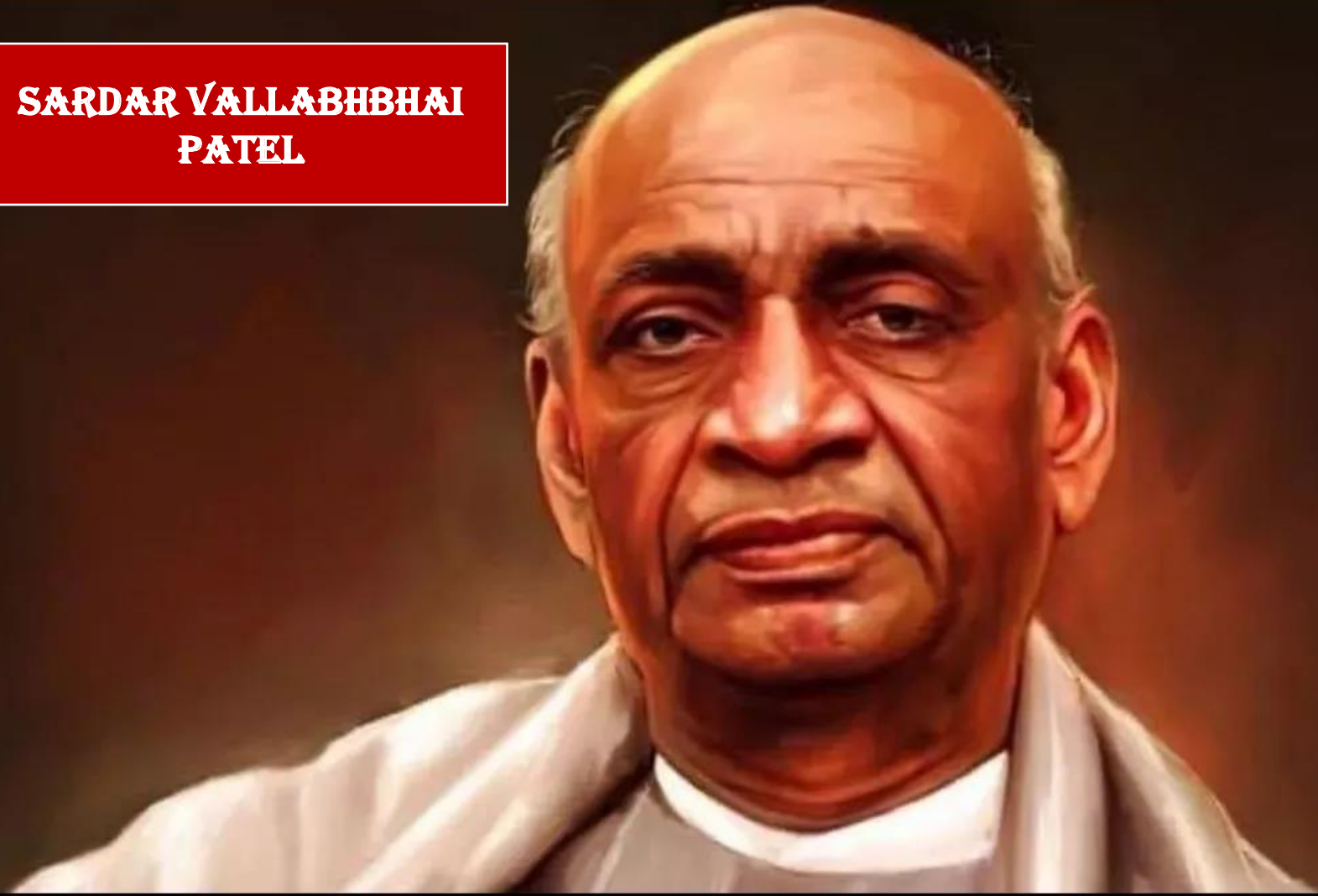
अतः इन नव स्वतंत्र राष्ट्रों को बनाए रखने के लिए नेहरू ने गुटनिरपेक्षता का अनुसरण किया।

- धर्मनिरपेक्षता

नेहरू भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाने के पक्ष में थे। उनका मत था कि भारत में अनेक धर्मों के लोग रहते हैं तो इन स्थितियों में एक धर्म को विशेष स्थान देना अन्य धर्मों की उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

स्पष्ट है कि नेहरू एक महान लोकतंत्रवादी, आधुनिक भारत के निर्माता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले, समन्वयवादी, मानवतावादी, शांतिवादी और अंतर्राष्ट्रवादी विचारक थे।

**SARDAR VALLABHBHAI  
PATEL**



## Sardar Vallabhbhai Patel

जन्म 31 अक्टूबर, 1875 नादियाड़ (गुजरात) में हुआ

**पिता** झवेरभाई पटेल एक साधारण किसान

माता लाबाई देवी

1897 में 22 साल की उम्र में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की

आगे जिला अधिवक्ता की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, जिससे उन्हें वकालत करने की अनुमति मिली।

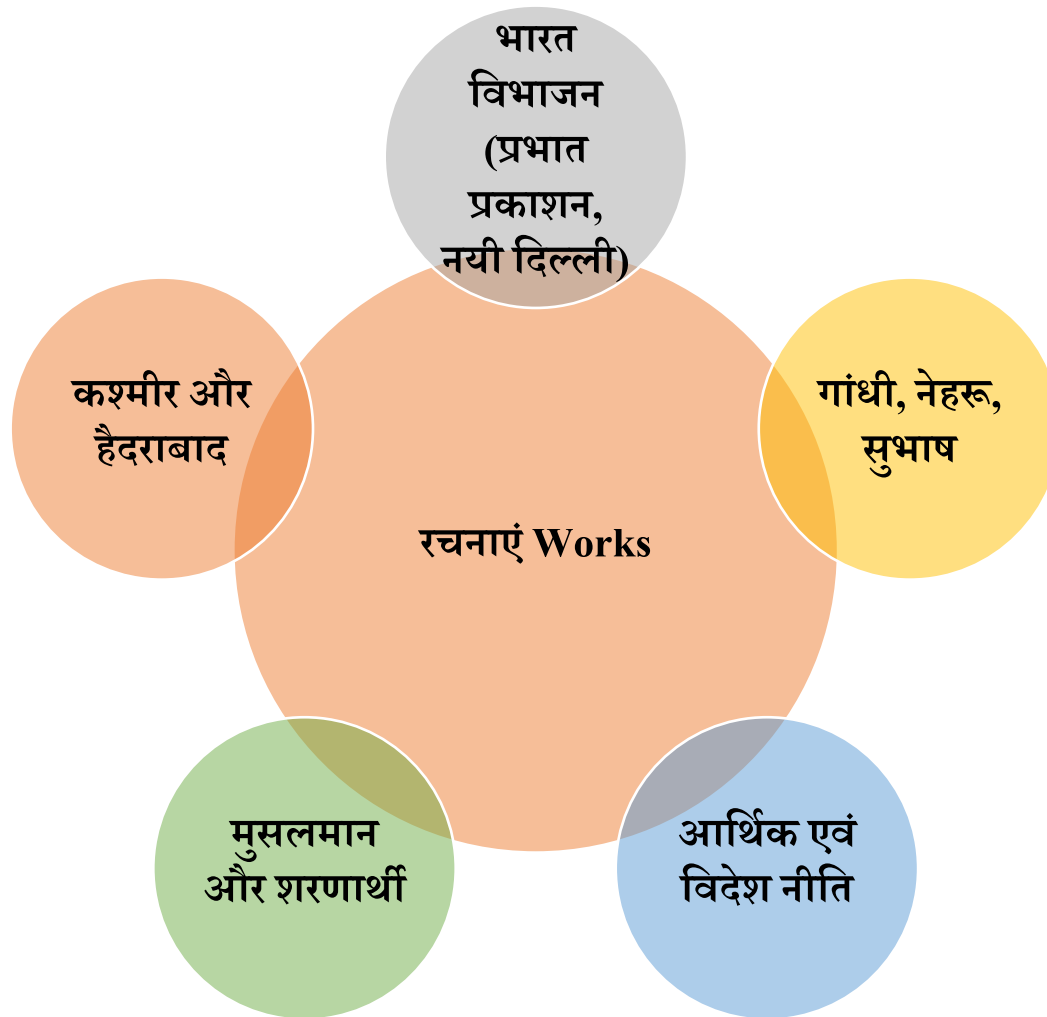
आगे वकालत के उच्च अध्ययन हेतु वे 1910 में लंदन गए फरवरी 1913 में पुनः भारत आकर

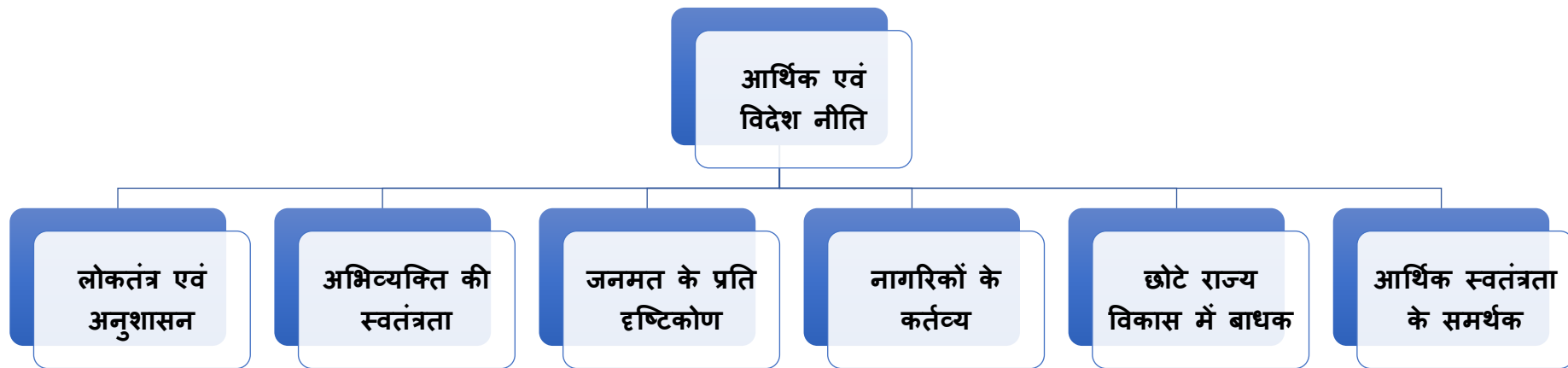
अहमदाबाद में बस गए और जल्द ही अहमदाबाद अधिवक्ता बार में अपराध कानून के अग्रणी बैरिस्टर

बन गए। 1917 तक वे भारत को राजनीतिक गतिविधियों के प्रति उदासीन रहे।

1917 में पहली बार वे गांधीजी के संपर्क में आए थे तथा उनसे प्रेरित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। स्वतंत्रता आंदोलन में सरदार का सबसे पहला और बड़ा योगदान 1918 में खेड़ा संघर्ष में हुआ। 1920 में गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया। 1928 में वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में बारदोली सत्याग्रह हुआ। इस सत्याग्रह आंदोलन के सफल होने के बाद वहां की महिलाओं ने वल्लभभाई पटेल को सरदार की उपाधि दी।

मार्च 1931 में कांग्रेस के कराची अभिवेशन में उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। स्वतंत्रता के पश्चात उन्होंने भारत के उपप्रधानमंत्री, गृहमंत्री, सूचना मंत्री के रूप में कार्य किया था। भारत को अखंड बनाने तथा देशी रियासतों के एकीकरण में पटेल का बहुत बड़ा योगदान रहा। इसलिए इन्हें भारत का विस्मार्क भी कहा जाता है। पटेल के योगदान को सम्मान देने के लिए उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के





सरदार वल्लभभाई पटेल एक महान राष्ट्रवादी नेता थे। उनका राजनीतिक चिंतन उदारवाद, गांधीवाद एवं यथार्थवाद से प्रभावित था। उनके विचार और व्यवहार में सदैव राष्ट्रहित ही सर्वप्रथम रहा।



## लोकतंत्र एवं अनुशासन

सरदार पटेल का लोकतंत्र में पूर्ण विश्वास था।

## अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

सरदार पटेल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के समर्थक थे संविधान सभा में मौलिक अधिकार को समितियों के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अनुच्छेद 19 में जिन 6 स्वतंत्रता का उल्लेख किया है उसमें पहली स्वतंत्रता विचार और अभिव्यक्ति को है।

## नागरिकों के कर्तव्य

सरदार पटेल ने नागरिकों में कर्तव्य पालन पर बल देते हुए कहा था कि 'प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व है कि वह महसूस करें कि देश स्वतंत्र है तथा उसे सुरक्षा प्रदान करने का उसका कर्तव्य है। प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि वह जाति-पाति को भूल जाए और अपने आपको मात्र भारतीय समझते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें।

## छोटे राज्य विकास में बाधक

सरकार पटेल ने देशी रियासतों का एकीकरण किया। उन्होंने अनुभव किया कि छोटे छोटे राज्य राष्ट्र के विकास में बाधक हैं तथा भाषायों और भौगोलिक आधार पर गठित यह राज्य देश के एकता और

## आर्थिक स्वतंत्रता के समर्थक

पटेल राष्ट्र के विकास के लिए आर्थिक स्वतंत्रता को आवश्यक मानते थे।

## धर्मनिरपेक्षता का समर्थन

सरदार वल्लभभाई पटेल धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के समर्थक थे।

## सामाजिक विचार Social Thought

सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय एकता के समर्थक थे। एक समाज सुधारक के रूप में उन्होंने सामाजिक अन्याय, अत्याचार और उत्पीड़न का घोर विरोध किया है। उनके सामाजिक विचारों को निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है

अस्पृश्यता का विरोध एवं सामाजिक समानता

सरदार पटेल का सामाजिक चिंतन गांधी दर्शन पर आधारित है। उन्होंने समाज में व्याप्त सभी तरह के भेदभाव एवं

## स्त्री-पुरुष समानता एवं स्त्री सुधार के समर्थक

सरदार पटेल सामाजिक समानता के साथ साथ स्त्री-पुरुष समानता के भी पक्षधर थे। उन्होंने बाल विवाह तथा बेमेल विवाह की आलोचना तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। वे समाज में बलि प्रथा, जिसमें बच्चों को बलि चढ़ाया जाए, इससे अत्यंत दुःखी थे।

सरदार पटेल गांधी के समान स्वदेशी तकनीक पर आधारित शिक्षा के समर्थक थे।

संप्रदायवाद का विरोध एवं सहिष्णु समाज की स्थापना

उनका मत था कि ईश्वर एक है और हम सभी उसको संतान हैं। धर्म ईश्वर तक पहुंचने के अलग अलग मार्ग हैं, लेकिन सबसे श्रेष्ठ मानवता है।

## आर्थिक विचार Economic Considerations

औद्योगिक शांति के पक्षधर

गांधीवादी समाजवाद

ग्रामोद्योग और कुटीर उद्योग

सामाजिक न्याय

पटेल ने व्यावहारिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए भारत की आर्थिक समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास किया। भारत के नवनिर्माण काल में औद्योगिक शांति, औद्योगिकीकरण के क्षेत्र में संगठित प्रयास एवं उपलब्ध साधनों का अधिकतम प्रयोग तथा नए साधनों को खोज पटेल के आर्थिक चिंतन के मुख्य आधार थे। उनके आर्थिक विचारों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है

औद्योगिक शांति के पक्षधर

इस 1947 में इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना हुई। जिसके प्रथम वार्षिक सम्मेलन को संबोधित करते हुए

## गांधीवादी समाजवाद

पटेल गांधीवादी समाजवाद के समर्थक थे। उनका मानना है कि मार्क्सवादी समाजवाद में हिंसा के अलावा कुछ नहीं है।

## ग्रामोद्योग और कुटीर उद्योग

ग्राम उद्योगों के माध्यम से बड़े पैमाने पर उत्पादन करने के पक्षधर थे। इससे देश को रोजगार जैसी समस्याएं हल होगी तथा देश आत्मनिर्भर बनेगा। साथ ही औद्योगिकरण ऐसा होना चाहिए जिसमें गरीबों का शोषण ना हो।

## सामाजिक न्याय

सरदार पटेल का विचार था कि निर्धनों के रहन सहन को ऊंचा उठाने को व्यवस्था हो किंतु वे भूमि



## स्वतंत्रता में योगदान

महात्मा गांधी की प्रेरणा से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गए। पटेल ने 1917-18 में खेड़ा सत्याग्रह, 1922 के नागपुर झंडा सत्याग्रह, 1924 के बोरसद सत्याग्रह आदि महत्वपूर्ण आंदोलन में भाग लिया। 1928 के बारदोली आंदोलन का कुशल नेतृत्व करके सरदार पटेल ने किसानों के बीच अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वे बेल में रहे।

## भारत विभाजन और पटेल

सरदार वल्लभभाई पटेल सर्वप्रथम भारत विभाजन के विरोधी थे,

## देशी रियासतों का विलय

तत्कालीन भारत में छोटी और बड़ी मिलाकर लगभग 565 रियासतें थीं। पटेल ने अपनी राजनीतिक सूझबूझ, व्यवहार एवं राजनयिक कुशलता से 15 अगस्त, 1947 तक सभी देशी रियासतों का विलय भारत में कर दिया। तुलना जर्मनी के लौह पुरुष बिस्मार्क से की जाती है जो कार्य जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क ने लौह और रक्त की नीति से किया।

स्वतंत्रता पश्चात् हैदराबाद व जूनागढ़ का भारत में योगदान है। वी.वी. गिरि ने कहा था कि यह अत्यंत

## प्रशासनिक सेवाओं का गठन

स्वतंत्रता प्राप्ति एवं भारत विभाजन के बाद भारतीय प्रशासन में अनिश्चितता और अव्यवस्था उत्पन्न हो गई थी।

पहला आई.सी.एस. के स्थान पर इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस (भारतीय प्रशासनिक सेवा) तथा आई. पी. के स्थान पर इंडियन पुलिस सर्विस (भारतीय पुलिस सेवा) का गठन किया। इसी के साथ उच्च अधिकारियों को रिक्तता को भरने के लिए तथा अनुभवी प्रशासनिक अधिकारियों की प्राप्ति हेतु आयु सीमा को समाप्त कर दिया।

## संविधान निर्माण में योगदान

सरदार पटेल संविधान सभा को तीन महत्वपूर्ण उपसमितियाँ मौलिक अधिकार उपसमिति, अल्पसंख्यक उपसमिति, प्रांतीय संविधान उपसमिति के अध्यक्ष थे। अल्पसंख्यक समिति के अध्यक्ष रूप में उन्होंने अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षण का विरोध किया और सिर्फ अनुसूचित जाति और जनजातियों के आरक्षण का समर्थन किया। विशेषकर शक्तिशाली केंद्र को स्थापना, संविधान को आपातकालीन व्यवस्था, स्वतंत्र निर्वाचन आयोग, देशों राज्यों का विलय एवं एकीकरण, सरकारी सेवाओं से संबद्ध धाराएं जम्मू कश्मीर राज्य से संबंधित विशेष अनुच्छेद 370 के प्रावधान तथा भाषा नीति ।





**Ram Manohar Lohia**

## Ram Manohar Lohia

**जन्म** 23 मार्च, 1910 को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जनपद में (वर्तमान- अम्बेडकर नगर जनपद) अकबरपुर

**पिताजी** श्री हीरालाल पेशे से अध्यापक एवं गांधीजी के अनुयायी थे।

लोहियाजी अपने पिताजी के साथ 1918 ई. में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार शामिल हुए।

डॉ. लोहिया की प्रारंभिक शिक्षा फैजाबाद को टंडन पाठशाला में हुई। इसके बाद हाईस्कूल को पढ़ाई हेतु उन्होंने विश्वेश्वरनाथ में दाखिला ले लिया। इसके बाद बंबई के मारवाड़ी स्कूल में पढ़ाई की। गांधीजी के कहने पर 10 वर्ष की आयु में स्कूल त्याग दिया। 1921 ई. में फैजाबाद किसान आन्दोलन के दौरान जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात हुई। 1924 ई. में प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस के गया अधिवेशन में शामिल हुए। 1925 ई. में मैट्रिक की परीक्षा दो इंटर को 2 वर्ष की पढ़ाई बनारस के काशी विश्वविद्यालय में हुई। 1927 ई. में इंटर पास कर आगे की पढ़ाई हेतु कलकत्ता के विद्यासागर कॉलेज में दाखिला लिया। उन्होंने साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए छात्रों के साथ आन्दोलन किया। 1930 में द्वितीय श्रेणी में बीए की परीक्षा पास की।

## Ram Manohar Lohia

जुलाई, 1930 ई. को लोहिया अग्रवाल समाज के कोष से पढ़ाई के लिए इंग्लैंड रवाना हुए, वहाँ से वे बर्लिन गए। विश्वविद्यालय के नियम के अनुसार उन्होंने प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. बर्नर जेम्बार्ट को अपना प्राध्यापक चुना, 3 महीने में जर्मन भाषा सीखी। 12 मार्च, 1930 को गांधीजी ने दाण्डी यात्रा प्रारंभ को जब नमक कानून तोड़ा गया, तब पुलिस अत्याचार से पीड़ित होकर पिता हीरालालजी ने लोहिया को विस्तृत पत्र लिखा। 1932 में लोहिया ने नमक सत्याग्रह विषय पर अपना शोध प्रबंध पूरा कर बर्लिन विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् डॉ. लोहिया 1933 ई. में भारत पहुंचे। लोहिया समाजवादी विचारों से प्रभावित थे, अतः उन्होंने 1934 में समाजवादी कांग्रेस पार्टी की नींव डाली।

## Ram Manohar Lohia

लोहिया ने 1942 ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। 1956 में डॉ. लोहिया व अम्बेडकर में निकटता बढ़ने लगी, लेकिन 6 दिसम्बर, 1956 को अम्बेडकर के निधन के पश्चात् उनका राजनीतिक सफर अधूरा रह गया। डॉ. लोहिया ने 1955 में भारतीय समाजवादी दल का गठन किया। डॉ. लोहिया ने नारा दिया कांग्रेस हटाओ देश बचाओ। लोहिया के प्रयासों का परिणाम 1967 के आम चुनाव में दिखा। देश के 9 राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें गठित हुईं। 12 अक्टूबर, 1967 को उनका देहान्त हो गया।

## Ram Manohar Lohia

### रचनाएं

- अंग्रेजी हटाओ
- इतिहास चक्र
- देश, विदेश नीति-कुछ पहलू
- धर्म पर एक दृष्टि
- भारतीय शिल्प
- भारत विभाजन के गुनहगार
- मार्क्सवाद और समाजवाद
- राग
- जिम्मेदारी की भावना

**राजनीतिक विचार  
Political Thoughts**

चौखंभा राज्य के समर्थक

लोहिया का समाजवाद

अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था संबंधी  
विचार

मौलिक अधिकार संबंधी विचार

सप्तक्रांति का सिद्धान्त

इतिहास की नवीन व्याख्या

जाति और वर्गों में संघर्ष की धारणा

हिन्दी भाषा के पक्षधर

क्रांति के लिए संगठन

## चौखंभा राज्य के समर्थक

लोहिया ने चौखंभा राज्य अर्थात चार स्तंभों वाला राज्य है। इस व्यवस्था के अंतर्गत गाँव, मंडल, प्रांत और केंद्रीय सरकार का महत्व बना रहेगा और चौखंभे राज्य में स्तंभों का संगठन इस ढंग से किया जाएगा, राज्य के सभी स्तंभ एक सूत्र में बंधे रहेंगे। चार स्तरीय राज्यों की निम्नलिखित विशेषताएं होगी

## लोहिया का समाजवाद

लोहिया का विश्वास था कि यह समाजवाद श्रम और ग्राम सरकार के माध्यम से प्राप्त करता है

## सप्तक्रांति का सिद्धान्त

राममनोहर लोहिया एक राष्ट्रवादी विचारक थे उन्होंने भारतीय समाज और राजनीति में सुधार की योजना बताकर समाज को गतिशील बनाने का कार्य किया। उनके राजनीतिक विचारों को निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत समझा जा सकता है



## इतिहास की नवीन व्याख्या

लोहिया इतिहास के 3 तथ्यों का प्रतिपादन करते हैं-

1. देशों का वृद्धि या पतन होता है। वैभव धन का स्थान बदलता रहता है। बाहरी रिश्तों में उतार चढ़ाव होता रहता है।
2. समूह के अंदर वर्ग जाति का संघर्ष होता रहता है।
3. सभी शारीरिक सांस्कृतिक ढंग से जुड़ते भी हैं।

### - जाति और वर्गों में संघर्ष की धारणा

लोहिया सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय सिद्धान्त के समर्थक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक द व्हील ऑफ हिस्ट्री में यह बताया है कि इतिहास में जाति और वर्गों का संघर्ष दिखाई देता है।

1. **संपूर्ण सरकारी एवं योजना** व्यय का एक चौथाई भाग ग्राम, मंडल तथा नगर पंचायत के माध्यम से खर्च किया जाएगा।
2. पुलिस इन ग्राम, मंडल तथा पंचायतों के अधीन कार्य करेगी।
3. जिलाधीश का पद समाप्त कर दिया जाएगा तथा उसके संपूर्ण कार्य जिले के विभिन्न संस्थाओं में बांट दिए जाएंगे।
4. कृषि, उद्योग तथा अन्य प्रकार की संपत्ति का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाएगा जो ग्राम, मंडल तथा नगर पंचायतों के अधीन रहेगा
5. राजनीतिक व प्रशासनिक विकेंद्रीकरण की दिशा में प्रयास किया जाएगा।

### **लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता के लिए हित पोषक**

डॉ. लोहिया का प्रजातंत्र एवं स्वतंत्रता में अटूट विश्वास था। वे कहते थे कि यदि कोई मार्क्सवाद पर चलेगा तो तानाशाही उसका एक तत्व अवश्य होगा। डॉ. लोहिया व्यक्ति की स्वतंत्रता के इतने बड़े समर्थक थे कि वे उसको किसी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहते थे।

- व्यावहारिकता पर बल
- एशियाई समाजवाद की धारणा

लोहिया ने एशिया की समस्याओं को एशियाई तरीके से हल करना चाहते थे। लोहिया का मानना था कि पश्चिम पूंजीवाद और समाजवाद एशिया के लिए अनुपयोगी है। उन्होंने संदेश दिया कि एशिया को परिस्थितियों को ध्यान में रखकर समाजवादी नीतियों का विकास करना चाहिए। एशिया की राजनीति कठोर धार्मिक रूढ़ियों और राजनीतिक प्रथाओं का मिश्रण है।

## लोहिया के अनुसार एशियन समाजवाद के मुख्य उद्देश्य हैं।

1. प्रशासन का प्रजातंत्रीकरण
2. छोटी मशीनों की थोड़ी पूंजी लगाकर उपभोग
3. सम्पत्ति का समाजीकरण
4. अधिकाधिक आर्थिक एवं राजनीतिक समाजीकरण

## समाजवाद को नवीन प्रकृति देने का प्रयास

उन्होंने सन् 1950 में समाजवादियों के मद्रास सम्मेलन में कहा था कि अब समाजवाद को विभिन्न आदर्शों को जरूरत नहीं है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि सामाजिक सच्चाईयों को समझें और उनका समाजवादी मोड़ देने के लिए किसी की रूढ़ मान्यता से न बंधे रहे।

- **विकेंद्रीकरण का समर्थन**

लोहिया विकेंद्रीकरण के समर्थक थे। उन्होंने विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था के सिद्धांत का प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि साम्यवादियों की तरह बड़े बड़े कारखाने न लगाकर वे सहकारिता के आधार पर कुटीर उद्योग को स्थापना करना चाहते थे, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण होगा और नए रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। वह विकेन्द्रीकरण के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाकर आर्थिक विकास का लक्ष्य प्राप्त करना चाहते थे।

## सप्तक्रांति का सिद्धान्त

लोहिया का विचार था कि देश में ऐसा कोई कार्यक्रम या सिद्धांत नहीं है जिस पर अधिकांश राजनीतिक दल सहमत हो सके। लोहिया के नेतृत्व में संयुक्त समाजवादी दल ने 1966 में निम्नलिखित 7 प्रस्तावों को स्वीकार किया जिसे सप्तक्रांति का सिद्धान्त कहा जाता है।

1. स्त्री पुरुष समानता को स्वीकृति।
2. रंग भेद पर आधारित असमानताओं की समाप्ति।
3. जन्म और जाति सम्बन्धी असमानताओं की समाप्ति
4. विदेशियों द्वारा दमन की समाप्ति तथा विश्व सरकार का निर्माण
5. व्यक्तिगत सम्पत्ति पर आधारित आर्थिक असमानताओं का विरोध एवं उत्पादन की योजनाबद्ध वृद्धि ।
6. व्यक्तिगत अधिकारों के अतिक्रमण का विरोध
7. युद्ध शस्त्रों का विरोध तथा सविनय अवज्ञा सिद्धान्त को स्वीकृति।

## मौलिक अधिकार संबंधी विचार

लोहिया ने मौलिक अधिकारों पर विशेष बल दिया है। उनका तर्क है कि मौलिक अधिकारों के बिना व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव नहीं हो सकता है। लोकतांत्रिक समाजवादी जीवन के अनिवार्य अंग है। उनके मौलिक अधिकार संबंधी विचार निम्नलिखित हैं

- **बौद्धिक स्वतंत्रता के अधिकार का समर्थन**

डॉ. लोहिया चिंतन एवं अभिव्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में थे। साम्यवादी व्यवस्था मनुष्य को मौलिक अधिकारों से दूर रखती है। वे लोकतांत्रिक राजनीतिक स्वतंत्रता के समर्थक थे।



## • धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार

डॉ. लोहिया धर्मनिरपेक्ष राज्य के समर्थक होने के कारण धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का पक्ष लेते थे। उनका मत था कि किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए और सभी को विकास के समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए।

## ● समता का अधिकार

भारतीय समाज में विद्यमान विषमताओं को समाप्त करने के लिए समता की भावना और व्यवहार का बहुमूल्य योगदान है। उन्होंने नर नारी समता, जाति उन्मूलन, रंगभेद और छुआछूत को समाप्ति के न केवल सिद्धांत प्रस्तुत किए, बल्कि व्यापक रूप से स्वयं भी संघर्ष किया। उन्होंने वैधानिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में समानता के अधिकार का समर्थन किया।

## • अत्याचारी एवं अन्यायी कानून के विरोध का अधिकार

ये अधिकार सभी नागरिकों को प्राप्त होना चाहिए, लेकिन ऐसा अहिंसात्मक एवं सांतिपूर्ण ढंग से होना चाहिए। यही कारण है कि लोहिया ने सविनय अवज्ञा के अधिकार का समर्थन किया है। वह इसे मौलिक अधिकार मानते हैं।

## अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था संबंधी विचार

उनके समाजवादी दर्शन का स्वरूप विश्वव्यापी है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोहिया जिन विचारों को प्रतिष्ठित करना चाहते थे, वे हैं

1. विश्व समाजवाद का दर्शन
2. संयुक्त राष्ट्र संघ के पुनर्गठन का नवीन आधार
3. अंतर्राष्ट्रीय जाति प्रथा का उन्मूलन
4. विश्व विकास की सीमित पहल
5. विश्व सरकार का स्वप्न
6. निजीकरण का सशक्त प्रतिपादन

## हिन्दी भाषा के पक्षधर

उनका विश्वास था कि अंग्रेजी शिक्षित और अशिक्षित जनता के बीच दूरी पैदा करती है। वे कहते थे कि हिन्दी के उपयोग से एकता की भावना और नए राष्ट्र के निर्माण से सम्बन्धित विचारों को बढ़ावा मिलेगा।

## सामाजिक विचार Social Considerations/

लोहिया एक तार्किक विचारक थे। वे हिंदू होते हुए भी हिंदू धर्म एवं समाज की मान्यताओं के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने धर्म को भी ईश्वर तथा आत्मा के साथ न जोड़कर मानव प्राणियों के कल्याण तथा लौकिक समृद्धि के साथ जोड़ा। उनके सामाजिक विचारों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है। -

- वर्ण व्यवस्था का विरोध
- सामाजिक विषमताओं पर प्रहार
- जाति प्रथा का विरोध और उन्मूलन हेतु सुझाव

## वर्ण व्यवस्था का विरोध

वर्ण व्यवस्था ने जाति व्यवस्था, छुआछूत और ऊंच नीच की भावना का जन्म दिया। डॉ. लोहिया ने

## सामाजिक विषमताओं पर प्रहार

उनके अनुसार सामाजिक विषमताओं में वर्ण व्यवस्था या जाति प्रथा, नर नारी असमानता, अस्पृश्यता, रंगभेद नीति और सांप्रदायिकता प्रमुख हैं। हिंदू समाज की दुर्दशा के लिए वे ब्राह्मणवाद को उत्तरदायी मानते हैं।

- जाति प्रथा का विरोध और उन्मूलन हेतु सुझाव

जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए डॉ. लोहिया ने अनेक सुझाव दिए जो कि निम्नलिखित हैं

### ● अंतरजातीय विवाह और भोज को प्रोत्साहन

लोहिया ने अंतरजातीय विवाह और सहभोजों को महत्व दिया। उन्होंने जाति व्यवस्था के विरोध में सुझाव दिया कि रोटी और बेटी के माध्यम से इसे समाप्त किया जा सकता है।

### सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार कर्म

डॉ. लोहिया का मानना था कि सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार कर्म होना चाहिए न कि जन्म जन्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को।

- **आर्थिक विकास**

कमजोर एवं पिछड़ी जातियों को आर्थिक रूप से अच्छा बनाना ही आर्थिक विकास है। इस तरह आर्थिक असमानता को समाप्त कर सामाजिक असमानता को भी समाप्त किया जा सकता है।

- **विशेष अवसर का सिद्धान्त**

डॉ. लोहिया का विशेष अवसर का सिद्धान्त एक उच्च आदर्श एवं न्याय पर आधारित है। लोहिया कमजोर एवं पिछड़े वर्गों को 60 प्रतिशत आरक्षण देने के पक्ष में थे। वे ये भी चाहते थे कि बेहतर सरकारी स्कूलों को स्थापना हो, जो सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान कर सके। इसी प्रकार उन्होंने अपने 'यूनाइटेड) सोशलिस्ट पार्टी' में उच्च पदों के लिए हुए चुनाव के टिकट निम्न जाति के उम्मीदवारों को दिया और उन्हें प्रोत्साहन भी दिया।



डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर





## Dr. Bhimrao Ambedkar

भारत के संविधान निर्माता एवं दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महू (मध्य प्रदेश) में हुआ था पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल माता का भीमाबाई था भीमराव अपने माता-पिता को 14वीं संतान थे। वे महार जाति के थे, जिसे लोग अछूत और बेहद चिता वर्ग मानते थे। अम्बेडकर के पिता ब्रिटिश भारतीय सेना की मऊ छावनी में सेवा में थे। अम्बेडकर का विवाह 14 वर्ष की आयु में रमाबाई के साथ हुआ स्कूल में ही बेंक को जात-पात के कारण अत्यन्त अपमानित होना पड़ता था।

1907 में मैट्रिकुलेशन पास करने के बाद बड़ौदा महाराज की आर्थिक सहायता से वे एलफिन कॉलेज से 1912 में ग्रेजुएट हुए।

कुछ साल बड़ौदा राज्य की सेवा करने के बाद उनको गायकबाट स्कॉलरशिप प्रदान किया गया, जिसके सहारे उन्होंने अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए (1915) किया।

इसी क्रम में वे प्रसिद्ध अमेरिकी अर्थशास्त्री सेलिगमैन के प्रभाव में आए सेलिगमैन के मार्गदर्शन में अम्बेडकर ने कोलंबिया विश्वविद्यालय से 1917 में पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर ली।

आम्बेडकर ने बम्बई में द स्मॉल हीलिंगा इन इंडिया एंड अर रेमिटी नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की।

नवम्बर, 1918 में डॉ. अम्बेदकर बम्बई कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकॉनोमिक्स में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर नियुक्त हुए।

जून, 1921 में लन्दन विश्वविद्यालय ने उन्हें एमएससी की उपाधि प्रदान की।

इसके पश्चात् है जर्मनी के बौन विश्वविद्यालय में पढ़ाई के लिए गए और वहां से डीएससी की उपाधि प्राप्त को अप्रैल 1923 में वे बेरिस्टर बने और उसी वर्ष से उन्होंने बम्बई उच्च न्यायालय में वकालत करना आरंभ कर दी।

**संगठन एवं संस्थानों की स्थापना में योगदान Contribution to the Establishment of Organizations and Institutions**

“बहिष्कृत हितकारिणी सभा 20 जुलाई 1924

"इनडिपेण्डेन्ट लेबर पार्टी ऑफ इण्डिया" अक्टूबर 1936

"अनुसूचित जाति फेडरेशन" 1942

पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी 8 जुलाई 1945

"भारतीय बुद्ध महासभा 1955

## अम्बेडकर के प्रेरणास्त्रोत Ambedkar's Inspirations

### पिता रामजी अम्बेडकर का प्रभाव

भीमराव अम्बेडकर पर सबसे ज्यादा उनके पिता का प्रभाव था पिता का त्यागी और कर्मठ व्यक्तित्व अम्बेडकर के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहा। ये उनके पिता के सकारात्मक प्रयत्नों का ही प्रयास था कि अम्बेडकर शिक्षा के महत्व को समझ पाए और शिक्षा प्राप्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील रहे।

### सतारा का प्राथमिक विद्यालय

भीमराव अम्बेडकर को आरंभिक शिक्षा सतारा में हुई थी। वहाँ उन्हें अनेक अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ा।

## सामाजिक भेदभाव

भारतीय समाज में कठोर जाति व्यवस्था के कारण अम्बेडकर को मंदिर, कुंओं भोजनालयों आदि सार्वजनिक स्थलों पर अनेकों बार अपमान एवं छुआछूत संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा। अपने साथ हुए दुर्व्यवहार ने उन्हें हिंदू सामाजिक व्यवस्था का कट्टर विद्रोही बना दिया।

## भारतीय चिंतकों का प्रभाव

भीमराव अम्बेडकर के जीवन में तीन आदर्श पुरुष थे गौतम बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले गौतम बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षा में विवेक को प्रधानता, बंधुत्व, समानता और स्वतंत्रता के सिद्धांत, करूणा, आध्यात्मिकता, छुआछूत, अंधविश्वास और भेदभाव का विरोध आदि का प्रभाव पड़ा।

## पाश्चात्य शिक्षा, संस्कृति एवं चिंतकों का प्रभाव

भीमराव अम्बेडकर पर पाश्चात्य शिक्षा, संस्कृति एवं चिंतकों का व्यापक प्रभाव पड़ा। उनको आधुनिक एवं सभ्य जीवन जीने का मार्ग इंग्लैंड एवं अमेरिका में प्राप्त पश्चिमी शिक्षा से मिला यहाँ अध्ययन के दौरान वे इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे पाश्चात्य चिंतकों में जॉन ड्यूवी और मार्क्स ने भी उनको प्रभावित किया।

## सामाजिक विचार Social Considerations,

उनका जन्म निम्न वर्ण में हुआ था और उन्होंने जाति संबंधी अत्याचारों व शोषणों का स्वयं अनुभव किया था। इसलिए अम्बेडकर का मानना है कि वर्ण व्यवस्था मूलतः ब्राह्मणवादी व्यवस्था के हितों पर टिकी हुई मानव द्वारा बनाई गई व्यवस्था है, जिसके मूल में ही शोषण, अन्याय व असमानता के विचार विद्यमान हैं। उनके सामाजिक विचारों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है

वर्ण व्यवस्था की आलोचना

जाति व्यवस्था उन्मूलन व दलितोद्धार

त्रयी दर्शन

नारी सशक्तिकरण

- **वर्ण व्यवस्था की आलोचना**

- अम्बेडकर का मानना है कि वर्ण व्यवस्था गतिशीलता को रोकती है। यह रूचि और योग्यता के अनुसार नहीं, बल्कि जन्म के अनुसार श्रमिकों का विभाजन करती है।

- जाति व्यवस्था एक बंद प्रकार की व्यवस्था है, जैसे क्षत्रियों को केवल साहसिक कार्य देकर बाकी योग्यताओं से वंचित कर देती हैं।

- वर्ण व्यवस्था सामाजिक विषमताओं को बढ़ाती है

समाज के लिए शारीरिक व बौद्धिक श्रम दोनों आवश्यक हैं, अतः उन्हें समान महत्व मिलना चाहिए।



## जाति व्यवस्था उन्मूलन व दलितोद्धार

डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि जाति या वर्ण व्यवस्था का दार्शनिक आधार धर्म है। अतः धर्म में सुधार किए बिना इस समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता है। अतः इसी आधार पर अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म की धार्मिक व्यवस्था को पुनः संगठित करने पर बल दिया।

- हिन्दू धर्म का केवल एक प्रमाणिक ग्रंथ होना चाहिए जिसमें आधुनिक मूल्यों का समावेश हो
- प्रत्येक व्यक्ति को जो अपने को हिंदू मानता है उसे राज्य के द्वारा परीक्षा पास कर लेने पर पुजारी बनने का अधिकार होना चाहिए।

- इन सबके अलावा अम्बेडकर ने समानता स्थापित करने हेतु आरक्षण पर भी बल दिया। उनका तर्क था कि निम्न वर्ग की कई पीढ़ियों का बहुत शोषण हुआ है। अस्पृश्यता को अपराध घोषित करने के लिए मांग की, जिसे संविधान द्वारा स्वीकार किया गया।
- अम्बेडकर का मानना था कि यदि निम्न वर्ग को किसी भी प्रकार से जातीय शोषण से मुक्ति न मिले, तो उसे हिन्दू धर्म ही छोड़ देना चाहिए।
- अम्बेडकर यह जानते थे कि अछूतों को वर्तमान स्थिति के लिए वह स्वयं ही उत्तरदायी हैं। उन्होंने अछूतों को संगठित शिक्षित और आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की प्रेरणा दी।
- अम्बेडकर ने दलितों की स्थिति सुधारने के लिए कानूनों में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया।
- अम्बेडकर ने अपने समय में मंदिर, कुएं, तालाब आदि सार्वजनिक स्थानों पर दलित वर्गों के प्रवेश में होने वाली रोक-टोक का विरोध किया। इसके लिए उन्होंने सत्याग्रह भी किया।

## त्रयी दर्शन

अम्बेडकर भारत में एक नवीन समाज व्यवस्था की चर्चा करते हैं जो कि निम्नलिखित है-

1. स्वतंत्रता, समानता,
2. शिक्षित बन, संगठित रही, संघर्ष करी
3. बुद्ध धम्म संघ

## नारी सशक्तिकरण

अम्बेडकर ने महिलाओं की स्वतंत्रता पर लगे सभी प्रतिबंधों का विरोध किया। उनकी मान्यता थी कि नारियों को शिक्षा और सामाजिक क्षेत्रों में पुरुषों के समान अवसर प्रदान किए जाए। उन्होंने स्त्रियों के संपत्ति व उत्तराधिकार संबंधी अधिकारों को मान्यता दी। इस संबंध में उन्होंने हिंदू कोड बिल रखा, किंतु संसद और उसके बाहर विरोध हुआ और उसमें संशोधन करना पड़ा। इससे अम्बेडकर बहुत दुःखी हुए और उन्होंने केंद्रीय मंत्रिमंडल से 1951 में त्याग पत्र दे दिया।

## आर्थिक विचार Economic Considerations/

1947 में उनके द्वारा प्रस्तुत राज्य समाजवाद की अवधारणा द्वारा उनके आर्थिक विचारों का ज्ञान होता है जो निम्नलिखित है-

- अम्बेडकर औद्योगीकरण के पक्षधर थे औद्योगिकरण के लिए उन्होंने राज्य समाजवाद को धारणा को उचित बताया।
- अम्बेडकर जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के पक्षधर थे।
- भारत में भूमिहीन मजदूरों की संख्या अधिक है। भारत के लिए केवल सामूहिक खेती ही लाभप्रद हो सकती है। इसलिए वे कृषि को सामूहिक उद्योग बनाना चाहते थे।

समाज के निर्धन वर्गों को मांगों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए आधारभूत उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया जाए और समस्त कृषि योग्य भूमि को राज्य के अधिकार में लाए जाए व राज्य द्वारा ही उनका संचालन किया जाना चाहिए।

## संविधान निर्माण एवं डॉ. अम्बेडकर Constitution Making and Dr. Ambedkar

वे कांग्रेस के विरुद्ध थे, लेकिन उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें संविधान सभा का सदस्य बनाया। संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में उनको योग्यता, कुशलता, लगन और निष्ठा ने सबको प्रभावित किया। संविधान के प्रावधानों को निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है

- संविधान निर्माण में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान मौलिक अधिकारों के संदर्भ में था। अनुच्छेद 32 में प्रदत्त संवैधानिक उपचारों के अधिकार को अति महत्वपूर्ण माना।
- अनुच्छेद 32 को संविधान का सबसे महत्वपूर्ण बताते हुए कहा था कि इसके बिना संविधान शून्य हो जाएगा यह तो संविधान का हृदय एवं आत्मा है।
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर होते हुए भी अम्बेडकर ने राष्ट्रीय सुरक्षा एवं शांति को सर्वोपरि स्थान दिया। संविधान सभा में निवारक निरोध संबंधी उपबंधों को संविधान सभा में पारित करवाने में उनकी महत्वपूर्ण थीं।

## संविधान निर्माण एवं डॉ. अम्बेडकर Constitution Making and Dr. Ambedkar

- संविधान सभा में डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि "यदि ये सिद्धांत समाजवादी नहीं है तो मैं यह समझने में असमर्थ हूँ कि अधिक समाजवाद क्या हो सकता है

संविधान सभा के अनेक सदस्यों ने अनुच्छेद 1 में फेडरेशन के स्थान पर यूनियन शब्द के प्रयोग पर आपत्ति की अम्बेडकर ने संविधान सभा के समक्ष उन कारणों को विधिवत् व्याख्या की, जिसके कारण प्रारूप समिति ने यूनियन शब्द का इस्तेमाल किया।

- अम्बेडकर ने संघात्मक और एकात्मक विशेषताओं में समन्वय कर भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप एक ऐसे संविधान का निर्माण किया, जो शांतिकाल और संकटकाल दोनों ही परिस्थितियों में राष्ट्र की एकता को बनाए रखने में समर्थ हैं।

इसके अलावा राष्ट्रपति, संसदीय शासन व्यवस्था, आपातकालीन प्रावधान, केंद्र राज्य संबंध आदि उपबंधों के निर्माण में भी भीमराव अम्बेडकर महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस प्रकार उन्होंने संविधान सभा में सदस्यों द्वारा उठाई गई आपत्तियों, शंकाओं और जिज्ञासाओं का निराकरण किया।

## अम्बेडकर और गांधी Ambedkar and Gandhi

महात्मा गांधी और अम्बेडकर के विचारों एवं कार्यों को कुछ विद्वान पूरक मानते हैं। दोनों राष्ट्रवादी नेता थे, दोनों दलितोद्धार के पक्ष में थे और सामाजिक आर्थिक न्याय को महत्वपूर्ण मानते थे, किंतु कुछ ऐसे विषय भी थे, जिनमें दोनों के बीच अंतर था जो निम्नलिखित है

### वर्ण व्यवस्था संबंधी विचारों में अंतर

गांधीजी वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे, जबकि अम्बेडकर वर्ण व्यवस्था के कट्टर आलोचक थे गांधीजी की यह मान्यता थी कि छुआछूत का धर्म व वर्ण से कोई संबंध नहीं है।



## अस्पृश्यों के पृथक प्रतिनिधित्व का प्रश्न

दलितों एवं अन्य हिंदुओं के पृथक प्रतिनिधित्व का विरोध किया, लेकिन अम्बेडकर ने दलित जातियों के हितों को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार से दलितों के लिए पृथक प्रतिनिधित्व की मांग की थी। अपने इसी विचार को अम्बेडकर ने लंदन में संपन्न हुए गोलमेज सम्मेलन में भी रखा। परिणामस्वरूप 1932 में रेम्जे मैकडोनाल्ड द्वारा दलित जातियों को पृथक निर्वाचक मंडल की सुविधा प्रदान की गई।

## औद्योगीकरण का प्रश्न

आंबेडकर औद्योगीकरण को भारत की अर्थव्यवस्था की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते थे। इससे विपरीत गांधी औद्योगीकरण के पक्षधर नहीं थे।

## अछूत वर्ग का प्रश्न

अम्बेडकर को गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से एक शिकायत यह थी कि उन्होंने छुआछूत की समस्या के निराकरण हेतु कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

## हिन्दू धर्म व धर्म परिवर्तन का प्रश्न

जिस धर्म में मनुष्य के साथ मनुष्यता का व्यवहार करना मना है, वह धर्म नहीं है। इसीलिए 1956 ई. में अम्बेडकर ने दलितों से आह्वान किया कि हिंदू धर्म को त्याग कर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लें। इसका गांधी ने विरोधी किया और कहा कि धर्मांतरण से दलितों को समस्या का समाधान नहीं होगा।

## कांग्रेस के प्रति दृष्टिकोण

अम्बेडकर ने न केवल महात्मा गांधी की विचारधाराओं का विरोध किया, बल्कि कांग्रेस को विचारधारा का भी विरोध किया।

## अम्बेडकर का योगदान Ambedkar's Contribution,

डॉ. अम्बेडकर बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी एक प्रतिभाशाली पुरुष थे। उन्होंने मानवतावादी मूल्यों को स्थापना तथा सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे सामाजिक उन्नति और मानव कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। डॉ. अम्बेडकर के योगदान का विश्लेषण निम्न बिंदुओं के अंतर्गत किया जा सकता है-

### वर्ण एवं जाति व्यवस्था पर प्रहार

डॉ. अम्बेडकर ने सर्वप्रथम वर्ण और जाति व्यवस्था पर प्रभावी ढंग से प्रहार किया और इन्हें अवैज्ञानिक, अव्यावहारिक अन्यायपूर्ण और गरिमाहीन करार दिया गया। समाज में दलितों को दुर्दशा के लिए उन्होंने इसी व्यवस्था को जिम्मेदार ठहराया।

## अम्बेडकर का योगदान Ambedkar's Contribution,

### नारी उत्थान की दिशा में कार्य

भारत के सभी वर्गों में नारी की स्थिति बहुत ही खराब रही है तथा अम्बेडकर ने उनके उत्थान के लिए भी प्रयत्न किए। अम्बेडकर ने नारी को इस स्थिति के लिए 'मनुस्मृति' को उत्तरदायी माना है। भारतीय परिवार व्यवस्था में स्त्रियों को पुरुषों के अधीन तथा उन पर निर्भर समझे जाने के प्रबल विरोधी थे। उनको मान्यता थी कि स्त्रियों को शिक्षा और सामाजिक जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। हिंदू समाज में स्त्रियों को संपत्ति के उत्तराधिकार, निःसंतान होने पर गोद लेने का अधिकार और पुनर्विवाह का अधिकार नहीं था। अम्बेडकर ने स्त्रियों के प्रति विद्यमान इन भेदभाव पूर्ण स्थितियों का अंत करना आवश्यक माना तथा इस उद्देश्य से उन्होंने हिंदू कोड बिल तैयार किया तथा उसे संसद से पारित करवाने का प्रयास किए।

### सामाजिक न्याय और सामाजिक लोकतंत्र का प्रतिपादन

अम्बेडकर ने भारतीय समाज की समस्त स्थिति को भलीभाँति समझा था। उन्होंने सामाजिक लोकतंत्र को राजनीतिक लोकतंत्र को प्रतिपादित कर भारत में लोकतंत्र की सही व्याख्या प्रस्तुत की।

## अम्बेडकर का योगदान Ambedkar's Contribution,

### राष्ट्रीय अखंडता संबंधी योगदान

डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा, आर्थिक विकास, आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सामाजिक आर्थिक कार्यक्रमों का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप एवं संवैधानिक उद्देश्य के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की दिशा में उल्लेखनीय योगदान किया।

### संविधान निर्माण में योगदान

डॉ. अम्बेडकर का संविधान निर्माण में योगदान महत्वपूर्ण है। संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में उनकी योग्यता, कुशलता, लगन और निष्ठा ने सबको प्रभावित किया। संविधान के दर्शन एवं प्रावधानों पर उनका प्रभाव देखा जा सकता है। वे तात्कालीन भारत के समक्ष उपस्थित राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान संवैधानिक ढंग से हल करना चाहते थे।

## **जीवन परिचय Life Introduction**

जिन्होंने अपनों पूरी जिन्दगी समाज सेवा में समर्पित कर दो। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर, 1915 को ब्रज के मथुरा जिले के छोटे से गाँव नगला चंद्रभान में हुआ था।

उनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय तथा माता का नाम रामप्यारी था।

दीनदयालजी की प्रारंभिक शिक्षा बहुत ही संघर्ष व अभाव में हुई।

1937 ई. में उन्होंने इण्टरमीडिएट की परीक्षा दी, जिसमें उन्होंने सर्वाधिक अंक प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया। इस पर घनश्याम दास बिड़ला ने उन्हें स्वर्ण पदक व उच्च अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की।

बलवंत महासिंघे के सम्पर्क के कारण दीनदयालजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रमों में रुचि लेने लगे। इन सब व्यस्तताओं के बाद भी उन्होंने 1939 ई. में प्रथम श्रेणी में बी. ए. की परीक्षा पास की।



पंडित दीनदयाल उपाध्याय

वे यहां पर श्री नानाजी देशमुख और श्री भाऊ जुगाडे के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे। वे राष्ट्रीय सेवक संघ के प्रांतीय प्रचारक बन गए। उन्होंने लखनऊ में राष्ट्र धर्म प्रकाशन नामक संस्थान की स्थापना की और अपने विचारों को प्रकाशित करने के लिए एक मासिक पत्रिका 'राष्ट्र धर्म' शुरू की।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ के 1951 ई. में आयोजित पहले अखिल भारतीय सम्मेलन की अध्यक्षता की। दीनदयालजी अपने उत्तर प्रदेश शाखा के पहले महासचिव बने। 1953 में डॉ. मुखर्जी की मृत्यु के बाद अनाथ संगठन पोषण और एक देशव्यापी आन्दोलन के रूप में 15 साल के लिए वह संगठन के महासचिव बने। वे 1968 ई. में जनसंघ के अध्यक्ष बने। पं. दीनदयाल उपाध्यायजी को मृत्यु 52 वर्ष की आयु में 11 फरवरी, 1968 को मुगलसराय के पास रेलगाड़ी में यात्रा करते समय हुई थी।



## रचनाएं Works

दीनदयाल उपाध्याय अपने आदर्शों को मूल रूप देने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। उन्होंने 1947 में राष्ट्रधर्म प्रकाशन की नींव डाली। इसी प्रकाशन से 31 अगस्त, 1947 में राष्ट्रधर्म नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। आगे चलकर इसी प्रकाशन ने पाण्डुपञ्च साप्ताहिक पत्रिका एवं स्वदेश व तरूण भारत दैनिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके अलावा उनको रचनाएं निम्नलिखित हैं-

- दो योजनाएं
- राजनीतिक डायरी
- भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन
- सम्राट चन्द्रगुप्त
- जगद्गुरु शंकराचार्य
- एकात्म मानववाद
- लोकमान्य तिलक की राजनीति

## एकात्म मानववाद Integral Humanism

अर्थ एवं अवधारणा

पुरुषार्थ चतुष्टय

धर्म और धर्मराज्य

राष्ट्र व राष्ट्रवाद

अर्थ एवं अवधारणा

दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन एकात्म मानववाद को अवधारणा में प्रतिपादित होता है। उन पर शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत का प्रभाव था। टुकड़े टुकड़े में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से उपयुक्त हो सकता है उन्होंने पश्चिमी मार्क्सवादी समाजवाद एवं पूंजीवादी व्यक्तिवाद दोनों का विरोध किया है। क्योंकि ये दोनों केवल मानव के शरीर एवं मन की आवश्यकताओं पर विचार करते हैं।

एकात्म मानववाद का दर्शन शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एक साथ और एकीकृत कार्यक्रम को बताता है। पश्चिम में मनुष्य को टुकड़े टुकड़े में बांटकर विचार किया गया है। दीनदयाल का मानना है कि भारतीय संस्कृति में मनुष्य पर उसको पूर्णता में विचार किया गया है। मानव को प्रगति का अर्थ है शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की प्रगति से है। मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की आवश्यकताओं की पूर्ति और उनके सर्वांगीण विकास के लिए चार पुरुषार्थ की कल्पना की गई है।

### पुरुषार्थ चतुष्टय

एकात्म मानववाद मनुष्य के संपूर्णता का विचार है जिसमें शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा शामिल हैं। ये चार मिलकर व्यक्ति का व्यक्तित्व बनाते हैं इस हेतु भारतीय संस्कृति में चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष बताए गए हैं। धर्म आधारभूत पुरुषार्थ है। धर्म से हो अर्थ और काम को सिद्धी होती है। अर्थ और काम की साधना यदि धर्म पर आधारित होगी तो वह अधिक कल्याणकारी होगा। इससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होगा तथा वह सांसारिक दुःखों से मुक्त हो जाएगा व यह मुक्ति हो मोक्ष है।

## धर्म और धर्मराज्य

धर्म से दीनदयाल का आशय कोई उपासना पंथ नहीं था धर्म वह है जो सबको धारण करता है। मानवता को रक्षा और उन्नति जिन नियमों से होती है उनका नाम मानव धर्म है। सब लोग एक दूसरे की आवश्यकताओं और भावनाओं का ध्यान रखते हुए परंपरानुकूल बनकर एकात्म भाव से रहे। मार्क्सवाद जहां संपूर्ण मानव जीवन में एकता स्थापित नहीं कर पाता है तो दूसरी ओर एकात्म मानववाद संपूर्ण मनुष्यों में सभी वादों, प्रतिवादों को तरफ रखता हुआ संपूर्ण मानव एकता का समर्थक है।

## एकात्म मानववाद : राष्ट्र व राष्ट्रवाद

एकात्म मानववाद के आधार पर दीनदयालय उपाध्याय ने सामाजिक व राजनीतिक चिंतन किया है। एकात्म मानववाद के अनुसार किसी भूमि और उस भूमि पर रहने वाले सभी व्यक्ति यदि उस भूमि को अपना समझते हैं तो वे राष्ट्र कहलाएंगे। एक व्यक्ति समूह उस समय राष्ट्र कहा जाता है जब उसमें भावात्मक एकता हो जाती है।

दीनदयाल राज्य एवं राष्ट्र को एक नहीं वरन् अलग-अलग मानते हैं। राष्ट्र को स्वयंभू तथा राज्य को एक संस्था माना है। मानव का मातृभूमि से सांस्कृतिक एकात्म राष्ट्र कहलाता है, जबकि राज्य राष्ट्र की सेवा करता है।

राज्य के समान और संस्थाएं भी समय- समय पर पैदा होती हैं और प्रत्येक व्यक्ति इनमें से प्रत्येक संस्था का अंग रहता है। जैसे परिवार, कुटुम्ब, जाति, समाज, राष्ट्र, विश्व, ब्रह्माण्ड आदि सभी का अंग हूँ। यह व्यक्ति को कुछ गुण मिला हुआ है जो व्यक्ति इस गुण का ठीक से उपयोग कर ले, वो सुखी और जो गुण का ठीक प्रकार से उपयोग न कर सके, वह दुःखी, उसका विकास ठीक नहीं होगा।

एकात्म मानववाद  
एवं आर्थिक चिंतन

**Integrated  
Humanism and  
Economic  
Thinking**

- आर्थिक नीति का निर्धारण
- अर्थव्यवस्था की मर्यादा
- प्रकृति की मर्यादा
- आर्थिक विकेंद्रीकरण
- पूंजी का निर्माण
- अर्थव्यवस्था का स्वरूप
- मशीन का प्रभुत्व

एकात्म मानववाद के अनुसार आर्थिक नीति का प्रमुख उद्देश्य शरीर के साथ-साथ मन, बुद्धि एवं आत्मा को सही रखते हुए उसका विकास करना है। अर्थव्यवस्था का निर्धारण, क्रियान्वयन एवं सफलता का मूल्यांकन इनके विकास से किया जाना चाहिए, न कि केवल आर्थिक विकास से आर्थिक विकास यदि समाज में अमीर को और अमीर तथा गरीब को और गरीब बनाकर आर्थिक विषमता पैदा करे तो उसे आर्थिक विकास नहीं कहा जा सकता। आर्थिक विकास का अर्थ केवल भौतिक ही नहीं, अपितु मन, बुद्धि एवं आत्मा का भी विकास है। अतः राज्य का यह कर्तव्य है कि वह ऐसी नीति बनाए जो मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर उसके संपूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त करें।

### आर्थिक नीति का निर्धारण

एकात्म मानववाद ने भारत में आर्थिक नीति निर्धारण के लिए निम्न बिंदु हैं-

1. कृषि
2. उद्योग
3. परिवहन
4. व्यापार
5. सामाजिक सुरक्षा

भारत कृषि प्रधान देश है। अतः औद्योगिकीकरण से पहले कृषि का विकास करना चाहिए। जिन अविकसित राष्ट्रों ने इस नीति का अनुसरण किया वे आर्थिक विकास में पिछड़ गए।

कृषि के अधिक विकास हेतु तथा कृषि पर अधिक भार न पड़े, इसके लिए दीनदयाल उपाध्याय ने औद्योगिकीकरण को भी आवश्यक माना। कृषि में कुछ दिन ऐसे होते हैं, जब कृषक बेकार होते हैं। अतः ऐसे समय का उपयोग करने हेतु उचित होगा कि गाँव के आसपास भौगोलिक वातावरण के हिसाब से लघु उद्योग क्षेत्र स्थापित किए जाएं। औद्योगिकीकरण को आवश्यकता को एकात्म मानववाद स्वीकार करता है। विकासशील देशों में इन दोनों के लिए ही स्थान है, किंतु मुख्य रूप से उन्हें छोटे उद्योगों पर ध्यान देना चाहिए।



## अर्थव्यवस्था की मर्यादा

दीनदयाल उपाध्याय की मत है कि अर्थव्यवस्था का लक्ष्य लोगों का भरण पोषण, जीवन का विकास और राष्ट्र की धारणा का विकास होना चाहिए।

न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद ही अधिक सुख और समृद्धि के उत्पादन किया जाना चाहिए या नहीं,। पश्चिमी राष्ट्र इच्छाओं को बराबर बढ़ाते हैं और इनकी संतुष्टि को अपना लक्ष्य समझते हैं। अब स्थिति यह है कि जो कुछ पैदा किया जाता है, उसके उपभोग के लिए लोगों में इच्छा पैदा की जाती है। मांग के अनुसार माल पैदा करने के स्थान पर अब उत्पादित माल के उपभोग को इच्छा पैदा की जाती है और इसके लिए नए नए बाजारों की तलाश की जाती है।

## प्रकृति की मर्यादा

उत्पादन का प्राकृतिक साधनों से सीधा संबंध है। आज की अर्थव्यवस्था और उत्पादन को पद्धति को बड़ी तेजी से बिगाड़ती जा रही है। प्रकृति से उतना ही ले और इस प्रकार से लें की प्रकृति स्वयं को पुनः पूर्ति कर लें दीनदयाल का मानना है कि हमारी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य fix नहीं होना चाहिए। यह प्रकृति के शोषण पर न निर्भर होकर उसके पोषण पर निर्भर होनी चाहिए।

## पूंजी का निर्माण

भारत में कच्चा माल और मानव श्रम पर्याप्त मात्रा में है पर पूंजी उपलब्ध नहीं है। पूंजी निर्माण के लिए आवश्यक है कि संपूर्ण उत्पादन का उपभोग करने के स्थान पर उसमें से कुछ बचाया जाए और उसे भावी उत्पादन के लिए काम में लिया जाए। कार्लमार्क्स ने जिस 'अतिरिक्त मूल्य' को चर्चा की है, वहीं पूंजी निर्माण का आधार है। समाजवादी व्यवस्था में यह कार्य राज्य द्वारा किया जाता है। दोनों ही पद्धतियों में संपूर्ण उत्पादन का वितरण श्रमिकों में नहीं होता है।

## मशीन का प्रभुत्व

मानव श्रम को सरल बनाने के लिए ही मशीन का अविष्कार हुआ है। मशीन मनुष्य की सहायक है किंतु जब मानव श्रम को एक विनिमय को वस्तु समझकर उसका मूल्यांकन रुपयों में होने लगता है तो वहां मशीन मानव की प्रतिस्पर्धी बन जाती है। दीनदयाल लिखते हैं कि यदि मशीन मानव का स्थान लेकर उसे भूखा मारे तो यह उन उद्देश्यों के विपरीत होगा, जिसके लिए मशीन का अविष्कार हुआ है। हमें मशीन को उपयोगिता का मनुष्य के संबंध में विचार करना होगा। इस दृष्टि से पश्चिम की उन मशीनों का जो वहां जनसंख्या की कमी के आधार पर बनी हैं, बिना विचार आयात करना भारी भूल होगी मशीनें हमारी आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए।

## अर्थव्यवस्था का स्वरूप

दीनदयाल ने भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप की भी चर्चा की है। उनके अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था के उद्देश्य होने चाहिए-

1. प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति तथा राष्ट्र की सुरक्षा
2. समृद्धि जिसके व्यक्ति/राष्ट्र विश्व को प्रगति में योगदान कर सके।
3. प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार का अवसर उपलब्ध कराना।
4. प्राकृतिक संसाधनों का सावधानी के साथ इस्तेमाल करना
5. राष्ट्र की आवश्यकताओं और क्षमता के अनुकूल प्रौद्योगिकी (Technology) का विकास करना।
6. अर्थव्यवस्था मानव की अवहेलना न करते हुए उसके विकास में सहायक हो।
7. विभिन्न उद्योगों में राज्य, व्यक्ति तथा अन्य संस्थाओं का कार्यभाग व्यवहारिकता के आधार पर निर्धारित हो।

## आर्थिक विकेंद्रीकरण

दीनदयाल आर्थिक क्षेत्र में विकेंद्रीकरण के समर्थक थे। वे विकेंद्रीकरण के आधार पर उद्योग लगाने के पक्षधर हैं। छोटी मशीनों का प्रयोग अधिक और बड़ी मशीनों का प्रयोग कम करना चाहिये। दीनदयाल आर्थिक लोकतंत्र के पक्षधर थे ताकि व्यक्ति को उसको क्षमता के अनुसार काम मिल सके और प्रत्येक व्यक्ति की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। उन्होंने गांव में लगाए जा सकने वाले कुटीर और लघु उद्योगों पर विशेष बल दिया।

पंचायत समिति के सदस्यों का निर्वाचन उस पंचायत समिति में आने वाली ग्राम पंचायतें करेंगी।

- **जिला परिषद** - लोक स्वराज्य के ढांचे के लिए तीसरे स्तर पर जिला परिषद होगी, जिसका गठन पंचायत समितियों के सम्मिलन से होगा। इन जिला परिषदों के पास अपनी क्षमता के सारे कार्य काम करने हेतु आवश्यक सत्ता और उत्तरदायित्व होंगे।

राज्य विधानसभा जिला परिषद के उपरान्त प्रान्तीय स्तर पर राज्य विधानसभा का संगठन किया जायेगा।

- लोकसभा राज्य विधानसभाएं मिलकर लोकसभा का निर्माण करेंगी।

## दलविहीन लोकतंत्र Partyless Democracy

जयप्रकाश द्वारा बताए गए लोक स्वराज की अवधारणा में राजनीतिक दलों का कोई स्थान नहीं होगा तथा इस प्रकार दल विहीन लोकतंत्र स्थापित होगा, जिसमें विकेंद्रीकरण की प्रमुखता होगी।

## दलविहीन लोकतंत्र की अवधारणा

लोकतंत्र संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक प्रचलित, लोकप्रिय और मान्य शासन प्रणाली है अतः उन्होंने वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना हेतु दलविहीन लोकतंत्र को प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार राजनीतिक दल जनता को विभाजित करते हैं।

आधुनिक राजनीतिक दल वास्तव में राजनीतिज्ञों का एक ऐसा छोटा शक्तिशाली समूह है जो जनता के नाम से शासन करता है और लोकतंत्र व स्वशासन का भ्रम फैलाता है। जयप्रकाश यथार्थ में लोक का तंत्र बनाना चाहते थे जिसमें व्यक्ति की सहभागिता मात्र मताधिकार तक सीमित न हो वरन् प्रत्येक निर्णय में जन सहभागिता हो, जिसमें दलों का दल-दल न हो, जो राजनीति पर नहीं लोकनीति पर आधारित हो, जो छल-कपट पर नहीं बल्कि नैतिकता पर आधारित हो

## दलविहीन लोकतंत्र का स्वरूप

जयप्रकाश का लक्ष्य एक ऐसा समाज स्थापित करना है जिसमें राजनीतिक आर्थिक विकेंद्रीकरण हो। दलविहीन लोकतंत्र का आधार पंचायती राज होगा इसे सफल बनाने हेतु, जीवन दर्शन बनाने हेतु कुछ परिवर्तन या शर्तें अनिवार्य हैं। इन सब शर्तों के पूर्ण होने पर ही सहभागी लोकतंत्र का विकास संभव है।

## दलविहीन लोकतंत्र की विशेषताएं

### • नीचे से स्वराज

उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की, जिसकी प्राथमिक इकाई ग्राम होगा, जिसमें सबके हित समान होंगे, जिसमें व्यक्ति, स्वीकृत सामाजिक उत्तरदायित्वों के मध्य एक प्रकार की स्वतंत्रता अनुभव करेगा, जिसमें विविधताओं के होते हुए भी लक्ष्य की एकता होगी। इसमें संपूर्ण समुदाय का हित होगा।

### क्षेत्रीय समुदाय

कई प्राथमिक इकाइयों से मिलकर एक क्षेत्रीय समुदाय बनता है, इसलिए ग्रामों के समान जिनके योग से इसका निर्माण हुआ है, यह ग्रामों पर नियंत्रण रखने वाला नहीं है, बल्कि दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र में सम्प्रभु है।

### • जिला और प्रदेश समुदाय

क्षेत्रीय समुदायों से जिला समुदाय बनता है। इसका क्षेत्रीय समुदायों के साथ ठीक वैसा ही संबंध होगा, जैसा कि क्षेत्रीय समुदायों का ग्राम समुदाय के साथ है। जिला समुदायों से प्रदेश समुदाय का निर्माण होता है।

## ● राष्ट्र समुदाय

प्रदेश समुदाय मिलकर राष्ट्र समुदाय का निर्माण करते हैं। जयप्रकाश का विश्वास है कि एक दिन अवश्य ही इन राष्ट्र समुदायों से विश्व समुदाय का निर्माण होगा

### सामुदायिक व्यवस्था की विशेषताएं

1. प्राथमिक इकाइयों के अतिरिक्त अन्य के लिए बहुत कम कार्य रह जाता है।
2. ये समुदाय स्वशासित हैं, इनमें बाह्य हस्तक्षेप नहीं है।
3. व्यक्ति को अपने समुदाय के कार्यों में वास्तविक भूमिका है तथा जीवन संबंध है।
4. स्थानीय समुदाय का विकास इस रूप में होता है कि वह एक लघु लोक कल्याणकारी राज्य बन जाए।
5. पंचायती राज जिलास्तर पर ही समाप्त नहीं हो जाएगा, वरन् राष्ट्रीय स्तर तक होगा।
6. दलों का इस प्रजातंत्र में कोई स्थान नहीं होगा।
7. राज्य के पास दमनकारी शक्ति नहीं होगी।



## निर्वाचन

प्रत्येक ग्राम सभा द्वारा 2 व्यक्ति निर्वाचित किए जाएंगे। एक विधानसभा व दूसरा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए। इस प्रकार ग्रामों से चुने गए सभी प्रतिनिधि एकत्र होंगे तथा उम्मीदवारों का चयन करेंगे। इसके पश्चात् उम्मीदवारों के नाम उस क्षेत्र की सभी ग्राम सभाओं के पास भेज दिए जाएंगे। इस प्रकार प्रत्येक ग्राम सभा में मतदान होगा व जिसे सर्वाधिक मत प्राप्त होंगे वह निर्वाचित घोषित कर दिया जाएगा।

\

## जन प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार

जयप्रकाश केवल निर्वाचन पद्धति से ही संतुष्ट नहीं हुए, वरन् उन्होंने निर्वाचित प्रतिनिधि के भ्रष्ट होने की स्थिति में उसे जनता द्वारा वापस बुलाने का अधिकार भी प्रदान किया।

## लोक समितियां

सरकार पर नियंत्रण रखने हेतु जन समितियां होंगी, जो ग्रामों व नगरों दोनों ही स्थानों पर होगी, जिनका प्रमुख कार्य होगा-

प्रशासन के कार्य पर नजर रखना।

न्याय का विरोध करना ।

रचनात्मक कार्य करना ।

लोक शिक्षण का कार्य करना ।

## आर्थिक विकेंद्रीकरण

लक्ष्य की प्राप्ति हेतु विकेंद्रीकरण की आवश्यकता है। उन्होंने आर्थिक विकेंद्रीकरण की निम्नलिखित विशेषताएं स्पष्ट की हैं

1. आर्थिक विकेंद्रीकरण की इस व्यवस्था से उत्पादन छोटे-छोटे यंत्रों पर आधारित होगा तथा श्रम प्रधान होगा।
2. जयप्रकाश ने कृषि के साथ ग्रामीण उद्योगों के समन्वय का समर्थन किया है। कृषि और उद्योगों में संतुलन बनाए रखा जाएगा,
3. सहकारिता को प्रोत्साहन दिया जाएगा परंतु निजी व्यापार समाप्त नहीं होगा ।
4. विदेशी सहायता व केंद्रीय सहायता पर न्यूनतम निर्भरता होगी।
5. विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था की सफलता हेतु ग्राम शिक्षा में सुधार किया जाएगा।

जयप्रकाश सहभागी एवं दल विहीन लोकतंत्र का आधार जनसमुदाय होगा। यह एक ऐसी व्यवस्था होगी जिसमें पूंजीवाद और मार्क्सवाद के विपरीत स्वतंत्रता व समानता दोनों आदर्शों को राजनीतिक व आर्थिक विकेन्द्रीकरण के साधनों

**संपूर्ण क्रांति Total Revolution** जयप्रकाश ने संपूर्ण क्रांति शब्द सर्वप्रथम प्रयोग पटना के गांधी मैदान में 5 जून, 1974 को किया था। उनके अनुसार एक सफल क्रांति वह है, जिसमें सत्ता एक समूह के हाथ में नहीं वरन् संपूर्ण जनता के हाथ में आ जाती है। अतः एक संपूर्ण क्रांति वह है जिसमें संपूर्ण शक्ति संपूर्ण जनता के हाथ में हो। जयप्रकाश अन्य देशों की क्रांतियों जैसे अमेरिका, फ्रांस, रूस को संपूर्ण क्रांति नहीं मानते । जयप्रकाश की संपूर्ण क्रांति की अवधारणा व्यापक है, जो मार्क्स के समान केवल collective स्तर पर ही परिवर्तन नहीं चाहती, बल्कि व्यक्ति स्तर पर भी परिवर्तन की समर्थक है। जयप्रकाश ने व्यक्ति और समाज दोनों का नए समाज की रचना में समान महत्व दिया है। इस समग्र क्रांति में 7 क्रांतियां सम्मिलित थीं-

1. सामाजिक क्रांति
2. राजनीतिक क्रांति
3. सांस्कृतिक क्रांति
4. शैक्षणिक क्रांति
5. आध्यात्मिक क्रांति
6. आर्थिक क्रांति
7. वैचारिक क्रांति

## संपूर्ण क्रांति के साधन

गांधी के समान ही जयप्रकाश भी साध्य के साथ ही साधनों की पवित्रता में विश्वास करते थे। उनके अनुसार सामाजिक क्रांति के तीन मार्ग हैं। -

1. कानून (संवैधानिक साधन)
2. हिंसा
3. अहिंसा

अहिंसक क्रांति, हिंसक क्रांति की अपेक्षा जनक्रांति में अधिक सहायक है। जयप्रकाश कहते थे कि मेरी कल्पना के वर्ग संघर्ष में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। मेरी कल्पना का वर्ग संघर्ष शांतिमय, असहयोग, सत्याग्रह के रूप में होगा। बिहार आंदोलन में उनका नारा था 'हमला चाहे जैसा हो हाथ हमारा नहीं उठेगा।

**संपूर्ण क्रांति के कार्यक्रम;** जयप्रकाश ने सम्पूर्ण क्रांति के कार्यक्रम को प्रजातांत्रिक साधनों द्वारा प्राप्त करने पर बल दिया है। इसमें निम्नलिखित गतिविधियां सम्मिलित है-

1. **आंदोलनात्मक व संघर्षात्मक-**जयप्रकाश ने आर्थिक परिवर्तन व आंदोलन की दृष्टि से सर्वोदय व भूदान आंदोलन प्रारंभ कर शासन द्वारा होने वाले अन्याय का विरोध अनिवार्य है,परंतु विरोध के साधन सत्याग्रह,कर ना देना,मतदाताओं को शिक्षित करना,लोक संघर्ष समिति द्वारा अन्याय का विरोध आदि ही होने चाहिए।

2. **प्रचारात्मक** संपूर्ण क्रांति के प्रचार के लिए सभा, सम्मेलन, प्रदर्शनों व गोष्ठियों की आवश्यकता है। जिससे क्रांति का विचार जन जन तक पहुंच सके।

3 **संगठनात्मक क्रांति** जनता द्वारा की जाएगी। अतः जनशक्ति को संगठित करने हेतु गाँव से राष्ट्रीय स्तर तक जन संगठन की इकाइयाँ खड़ी करनी होगी। इसके लिए लोक समितियों के गठन की आवश्यकता है।

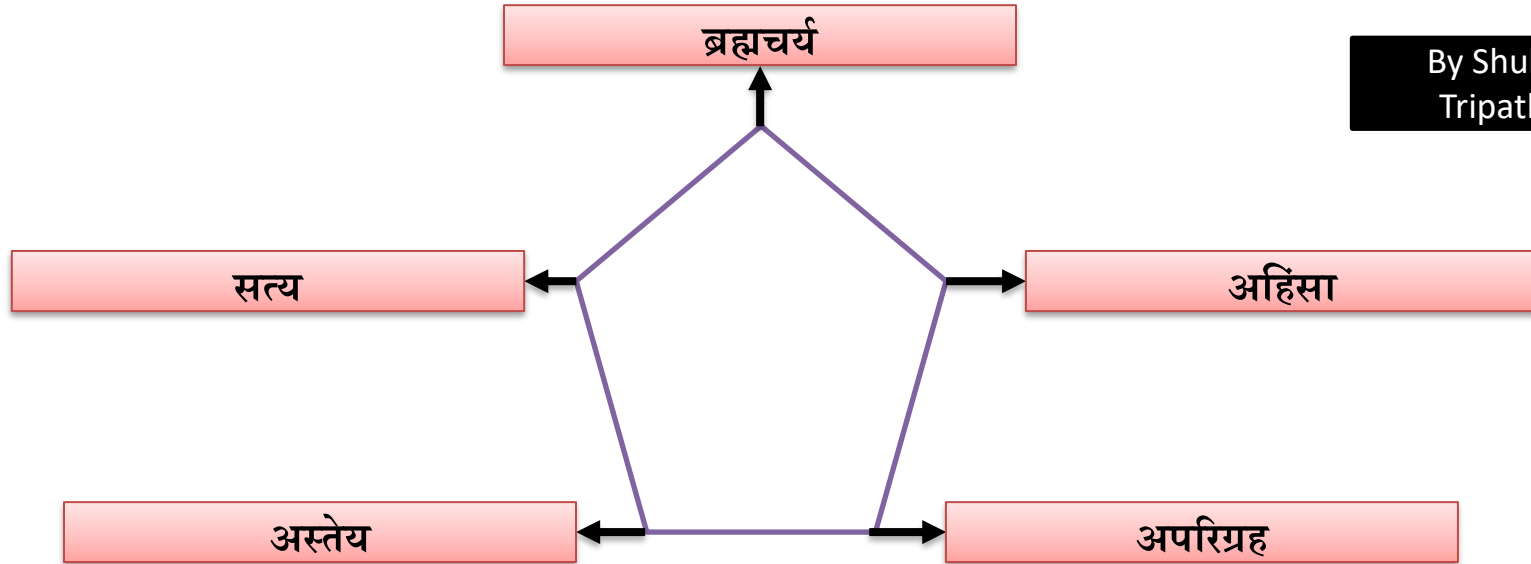
4. **रचनात्मक** जनता का मनोबल कायम रखने के लिए संघर्ष के साथ-साथ न्याय पूर्ण व्यवस्था द्वारा शोषण रोक जाना चाहिए। इसके लिए अनिवार्य है कि लोक समितियों द्वारा जन उपयोगी आवश्यक

## संपूर्ण क्रांति के मार्ग में कठिनाईयां

जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति को लागू करना सरल कार्य नहीं है। इसीलिए आलोचकों ने इसे 'आदर्शवादी', 'अव्यावहारिक' तथा 'प्रतिक्रियावादी विचार' बताकर इसकी आलोचना की है-

1. सम्पूर्ण क्रांति के लिए लम्बे प्रशिक्षण की आवश्यकता है।
2. सिद्धराज ढड्डा के अनुसार इस क्रांति के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं के संगठन की आवश्यकता है।
3. अहिंसात्मक क्रांति में हिंसा का प्रवेश आसानी से हो सकता है।
4. संपूर्ण क्रांति आदर्श और व्यापक है। इतने बड़े स्तर पर परिवर्तन कर पाना और संगठनात्मक, रचनात्मक, प्रचारात्मक व संघर्षात्मक कार्यक्रम चला पाना व्यवहार में कठिन है।
5. संपूर्ण क्रांति का कार्यक्रम स्पष्ट नहीं है।

# गांधीजी का पंचव्रत का सिद्धांत



By Shubham  
Tripathi Sir





## कौटिल्य के अनुसार राज्य कैसा होना चाहिए

- 1) अर्थशास्त्र के अनुसार कौटिल्य 'राजतंत्र' का पोषक था।
- 2) वह समस्त भारत पर एक सशक्त व संपन्न राजा का शासन स्थापित करना चाहता था।
- 3) उसके अनुसार प्रजा अनुशासित व स्वामी भक्ति की होना चाहिए।

## सप्तांग सिद्धांत

- 1) कौटिल्य ने राज्य के संगठन का विस्तृत विवरण सप्तांग सिद्धांत के अंतर्गत किया है।
- 2) सप्तांग सिद्धांत के अनुसार राज्य रूपी शरीर के 7 अनिवार्य अंग होते हैं
- 3) सात अंग - राजा (सिर), अमात्य (आंख), जनपद (जंघा), कोष (मुख), दुर्ग (बांह), दंड (मस्तिष्क), मित्र (कान)।

## कौटिल्य के अनुसार राजदूत के प्रकार

कौटिल्य ने 3 प्रकार के राजदूतों की चर्चा की है.

- निसृप्तार्थ - इसे विदेशी शासक से संधि करने का पूर्ण अधिकार था।
- परिमितार्थ - केवल वहीं समझौते कर सकता था, जिसके लिए उसे आदेश दिया जाता था।
- शासनहार- केवल राजकीय संदेश को पहुंचाने का अधिकार था।

## कौटिल्य के अनुसार राजा के कर्तव्य

- 1) प्रजा का कल्याण ।
- 2) वर्णाश्रम धर्म को बनाए रखना ।
- 3) शांति व्यवस्था बनाए रखना।
- 4) विधायी व प्रशासनिक कर्तव्य ।
- 5) दंड की व्यवस्था करना ।
- 6) आर्थिक कर्तव्य ।

जयप्रकाश ने संपूर्ण क्रांति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कब और कहां किया था

- 1) 5 जून, 1975 की विशाल सभा में।
- 2) बिहार में।
- 3) नारा सिंहासन खाली करो कि जनता आ रही है।

By Shubham Tripathi Sir

जयप्रकाश के सर्वोदय से आप क्या समझते हैं।

इनके अनुसार –

- 1) सर्वोदय जनता का समाजवाद है।
- 2) सर्वोदय का लक्ष्य ऐसे समाज की स्थापना करना है, जिसमें व्यक्ति अन्याय और दया से पूर्णतः मुक्त होंगे।
- 3) ये मानते थे कि सर्वोदय का केंद्र जनता में है।
- 4) ये सर्वोदय के अंतर्गत विकेंद्रीकरण को आवश्यक मानते थे।

## द्वैधीभाव की नीति

1) द्वैधीभाव की नीति से कौटिल्य का आशय एक राज्य के प्रति संधि और दूसरे राज्य के प्रति विग्रह की नीति को अपनाने से हैं।

## कौटिल्य की 'षाड्गुण्य नीति

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र के सप्तम् अधिकरण में विदेशी राज्यों के प्रति व्यवहार के संबंध में षाड्गुण्य नीति का प्रतिपादन किया

- 1) संधि ।
- 2) विग्रह।
- 3) आसन ।
- 4) यान।
- 5) संश्रय।
- 6) द्वैधीभावा।

## गांधीजी भारत कब लौटे

1) गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से 21 वर्ष के लंबे -- कार्यकाल के पश्चात् '9 जनवरी, 1915' को भारत लौटे।

## गांधीजी का सत्याग्रह

1) गांधीजी सत्य एवं अहिंसा के पोषक थे। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लिए आग्रह करना या सत्य पर अडिग रहना अर्थात् सत्य के मार्ग पर दृढ़ता से बढ़ना चाहे कितनी भी बाधाएं क्यों न आए अपने मार्ग से विचलित न होना ही सत्याग्रह है।

## गांधीजी की प्रमुख रचनाएं

- 1) हिंद स्वराज
- 2) मेरे सत्य के साथ प्रयोग।
- 3) शांति और युद्ध में अहिंसा।
- 4) नैतिक धर्म।
- 5) सत्याग्रह।
- 6) सर्वोदय।

## कौटिल्य के अनुसार राज्य के उद्देश्य

कौटिल्य ने राज्य के मुख्यतः 3 उद्देश्य निर्धारित किए।

- 1) आंतरिक शांति व सुरक्षा ।
- 2) राज्य की बाह्य शत्रुओं से रक्षा करना ।
- 3) प्रजा के सुख-समृद्धि के लिए कल्याणकारी कार्यों की व्यवस्था करना।

## मंडल सिद्धांत

- 1) कौटिल्य की विदेश नीति का एक प्रमुख तत्व ।
- 2) इस सिद्धांत में मंडल केंद्र राजा होता है, जो पड़ोसी राज्यों को जीतकर अपने में मिलाने के लिए प्रयत्नशील है।
- 3) यह मंडल समूह कुल 12 राज्यों से मिलकर बना होता है, जिसमें 5 मित्र राज्य, 5 शत्रु राज्य 1 मध्यम व 1 उदासीन राज्य होते हैं।

## द्वैधीभाव की नीति

1) द्वैधीभाव की नीति से कौटिल्य का आशय एक राज्य के प्रति संधि और दूसरे राज्य के प्रति विग्रह की नीति को अपनाने से है।

गांधीजी के 11 व्रत क्या है.

- 1) सत्या।
- 2) अस्वाद।
- 3) अहिंसा।
- 4) अभय।
- 5) अस्तेय।
- 6) अस्पृश्यता निवारण।
- 7) अपरिग्रह।
- 8) शारीरिक श्रम।
- 9) ब्रह्मचर्य।
- 10) स्वदेशी।
- 11) सर्वधर्म समभाव।

By Shubham Tripathi Sir



## सम्पूर्ण क्रांति क्या है

- 1) इस क्रांति को 1974 में जय प्रकाश नारायण द्वारा शुरू किया गया।
- 2) यह क्रांति प्रशासनिक भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, गिरती शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ थी।
- 3) इस क्रांति को जे. पी. आंदोलन भी कहा जाता है।

## अर्थशास्त्र

- 1) कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीति एवं शासन कला की महान कृति है।
- 2) अर्थशास्त्र की रचना गद्य-पद्य दोनों में ही की गई है, जिसके विभिन्न पहलुओं का वर्णन 15 अधिकरणों, 180 प्रकरणों, 150 अध्यायों तथा 6000 श्लोकों में किया गया है।
- 3) इसमें 04 विधाओं - दर्शन व तर्क, वेदों का ज्ञान, कृषि व्यापार तथा दंड नीति का वर्णन मिलता है।

## गांधीजी का रामराज्य

- 1) गांधीजी राज्य का विरोध कर राज्यविहीन समाज की स्थापना करना चाहते हैं, जिसे वे रामराज्य की संज्ञा देते हैं।
- 2) उनका रामराज्य वह आदर्श समाज है, जिसमें सभी व्यक्ति पूर्णतः अहिंसक होंगे।
- 3) यह एक विकेंद्रीकृत समाज होगा, जिसमें जीवन स्वचालित तथा स्वनियमित होगा।

## गांधीजी का सर्वोदय

- 1) सर्वोदय शब्द गांधी द्वारा प्रतिपादित एक ऐसा विचार है, जिसमें सर्वभूत हितेशता की भारतीय कल्पना समाहित है।
- 2) सर्वोदय एक ऐसी विचारधारा है, जो समाज के सभी वर्गों के सभी पक्षों का कल्याण करना चाहती है।
- 3) गांधीजी सर्वोदय में भौतिक कल्याण के साथ-साथ आध्यात्मिक कल्याण को भी स्वीकार करते हैं।

## सत्याग्रह के साधन

- 1) असहयोग।
- 2) सविनय अवज्ञा ।
- 3) उपवास।
- 4) हिजरत (देश त्याग)।
- 5) धरना।
- 6) हड़ताल।
- 7) सामाजिक बहिष्कार ।

By Shubham Tripathi Sir

## सत्याग्रही के कोई चार गुण लिखिए

- 1) सत्याग्रही को खुले दिमाग का एवं सहृदयी होना चाहिए।
- 2) सत्याग्रही को मन, वचन एवं कर्म से अहिंसक होना चाहिए।
- 3) सत्याग्रही को अपने व्यवहार एवं विचार से दृढ़ होना चाहिए।
- 4) सत्याग्रही को विनम्र, निर्भय एवं निःस्वार्थी होना चाहिए।

## सप्तक्रांति में सम्मिलित क्रांतियां

इस समग्र क्रांति में सात क्रांतियां सम्मिलित थी –

- 1) सामाजिक क्रांति ।
- 2) शैक्षणिक क्रांति ।
- 3) वैचारिक क्रांति ।
- 4) राजनीतिक क्रांति ।
- 5) आध्यात्मिक क्रांति ।
- 6) सांस्कृतिक क्रांति ।
- 7) आर्थिक क्रांति ।

By Shubham Tripathi Sir

## पं. दीनदयाल उपाध्याय की प्रमुख रचनाएं

दो रचनाएं।

- 2) राजनीतिक डायरी ।
- 3) एकात्म मानववाद ।

- 1) अर्थ= समाज के सबसे निचली पंक्ति के व्यक्ति तक आर्थिक विकास को पहुंचाना।
- 2) इस विचारधारा का प्रतिपादन उपाध्यायजी' ने किया।
- 3) वे अंत्योदय के लिए लोकतंत्र को आवश्यक मानते थे।

- 1) दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन एकात्म मानववाद की अवधारणा में प्रतिपादित होता है।
- 2) एकात्म मानववाद का दर्शन शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एक साथ और एकीकृत कार्यक्रम की वकालत करता है।
- 3) अतः वे भौतिकवादी उद्देश्यों की पूर्ति के साथ-साथ 'आध्यात्मिक उन्नति' की प्राप्ति को भी महत्व देते थे।

पं. दीनदयाल उपाध्यायजी द्वारा प्रकाशित प्रमुख पत्र- पत्रिकाएं

राष्ट्रधर्म

स्वदेश

तरुण भारत

पांचजन्य

पं. दीनदयाल उपाध्यायजी के आर्थिक विचार

By Shubham Tripathi Sir

- 1) आर्थिक क्षेत्र में विकेंद्रीकरण के समर्थक।
- 2) कुटीर एवं लघु उद्योगों पर विशेष बल।
- 3) प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार का अवसर उपलब्ध करना।
- 4) मानव पूंजी निर्माण पर जोर।

किसकी जयंती को 'अंत्योदय दिवस' के रूप में मनाया जाता है

1) प्रतिवर्ष '25 सितंबर' को 'पं. दीनदयाल उपाध्यायजी' की जयंती को 'अंत्योदय दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

जयप्रकाश नारायण जीवन परिचय

By Shubham Tripathi Sir

- 1) उपनाम - लोकनायक, जे.पी. ।
- 2) जन्म - 1902, बिहार ।
- 3) ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व जनता पार्टी से संबंधित
- 4) इन्होंने 1950 में भारतीय समाजवादी दल की स्थापना की।

## जयप्रकाश नारायण की रचनाएं

- 1) समाजवाद से सर्वोदय की ओर।
- 2) ट्रैवर्ड्स स्ट्रगल ।
- 3) सर्वोदय और विश्व शांति ।
- (4) समाजवादी क्यों।
- 5) स्वराज्य फार द पीपुल्स

By Shubham Tripathi Sir

## जयप्रकाश नारायण जीवन परिचय

- 1) उपनाम - लोकनायक, जे.पी. ।
- 2) जन्म - 1902, बिहार ।
- 3) ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व जनता पार्टी से संबंधित
- 4) इन्होंने 1950 में भारतीय समाजवादी दल की स्थापना की।



## जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति अवधारणा

- 1) संपूर्ण क्रांति जनता की क्रांति है।
- 2) उद्देश्य केवल शासन को बदलना नहीं है, बल्कि व्यक्ति और समाज को भी बदलना है।
- 3) संपूर्ण क्रांति के साधन कानून (संवैधानिक साधन) - हिंसा, अहिंसा।
- 4) इस क्रांति में इन्होंने युवाव, शिक्षित, जाग्रत व बौद्धिक वर्ग को वाहक बनाया।

By Shubham Tripathi Sir

## जयप्रकाश नारायण के समाजवादी विचार

- 1) स्रोत- 'समाजवाद की मेरी तस्वीर' पुस्तक से।
- 2) इनकी दृष्टि में समाजवाद एक सुनियोजित सिद्धांत तथा तकनीक है।
- 3) समाजवाद का लक्ष्य
- 4) मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत।
- 5) सभी के लिए आत्म विकास के समान अवसर का प्रबंध

लोकतांत्रिक समाजवाद से आप क्या समझते हैं।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार

- 1) लोकतंत्र और समाजवाद एक-दूसरे के पूरक हैं।
- 2) लोकतंत्र के बिना समाजवाद का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता।
- 3) इस समाजवाद में मानव न तो पूंजी का दास है, और न किसी पार्टी का और न किसी राज्य का।
- 4) इसमें मानव का स्वतंत्र अस्तित्व है।

By Shubham Tripathi Sir

सर्वोदय के आदर्श बताइए

लोकशक्ति पर आधारित  
राज्यविहीन समाज  
अहिंसा पर आधारित  
राजनीतिक विकेंद्रीकरण  
आर्थिक विकेंद्रीकरण

एकात्म मानववाद क्या है

1) पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्मक मानववाद एक ऐसी धारणा है जो सर्पिलाकार मंडलाकृति द्वारा स्पष्ट की जा सकती है, जिसके केंद्र में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा हुआ एक घेरा परिवार, फिर समाज, जाति, राष्ट्र और विश्व फिर अनंत ब्राह्मांड को अपने में समाविष्ट किए हैं।

By Shubham Tripathi Sir

भारत के प्रथम कानून मंत्री कौन हुए

1) भारत के प्रथम कानून मंत्री डॉ. बी. आर. अंबेडकर हुए ।

जो आदमी सच्चा और मन से अच्छा है, उस आदमी की सभी चीजे दोस्त होती हैं किसके

विचार हैं

1) महात्मा गांधी जी के।

जयप्रकाश के अनुसार लोक स्वराज का स्वरूप

By Shubham Tripathi Sir

लोक स्वराज के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए जयप्रकाश ने लोक स्वराज की पांच स्तरीय संकल्पना प्रस्तुत की है।

- 1) ग्रामसभा ।
- 2) क्षेत्रीय समुदाय ।
- 3) जिला परिषद् ।
- 4) राज्य विधानसभा ।
- 5) लोकसभा ।

जयप्रकाश के व्यक्तित्व एवं चिंतन पर किनका प्रभाव पड़ा

1) ग्रामीण संस्कृति व पर्यावरण का ।

2) भगवद्गीता का।

3) अमेरिका की लोकतांत्रिक व्यवस्था का ।

4) महान व्यक्तित्वों का -महात्मा गांधी, विनोबा भावे, आचार्य नरेंद्र देव से अत्यधिक प्रभावित थे।

By Shubham Tripathi Sir

जाति तोड़ों का नारा किसने दिया

जाति तोड़ों का नारा 'राममनोहर लोहिया' द्वारा दिया गया।

लोकनायक किसे कहा जाता है

1) जयप्रकाश नारायण को।

By Shubham Tripathi Sir

जयप्रकाश नारायण के अनुसार लोकतंत्र के दोष कौन-से

- 1) व्यक्तिगत मतदान पर आधारित लोकतंत्र ।
- 2) दोषपूर्ण निर्वाचन पद्धति ।
- 3) अल्पमत पर आधारित सरकार।
- 4) केंद्रीयकरण की प्रवृत्ति ।
- 5) राजनीतिक दल ।
- 6) जनता को उकसाने वाले भाषण ।

## गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत

1) गांधीजी ने सामाजिक आर्थिक न्याय की स्थापना हेतु ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। यदि किसी के पास आवश्यकता से अधिक संपत्ति है, तो वह अपनी अतिरिक्त संपत्ति का केवल संरक्षक (ट्रस्टी) के रूप में भूमिका का निर्वहन करेगा, जो कि सामाजिक हित में प्रयोग होगी।

## गांधीजी के आर्थिक विचार

By Shubham Tripathi Sir

- 1) पूंजीवाद का विरोध ।
- 2) औद्योगिकीकरण का विरोध ।
- 3) वर्ग सहयोग पर बल ।
- 4) कुटीर उद्योगों का समर्थन ।
- 5) अपरिग्रह का सिद्धांत ।

## कौटिल्य की विदेश नीति के तत्व

मंडल सिद्धांत  
चातुर्गुण्य नीति  
षड्गुण्य नीति  
राजदूत

## चातुर्गुण्य नीति

कौटिल्य के अनुसार विदेश नीति संबंधी षड्गुण्य नीति का पालन (चार उपायों) द्वारा किया जाना चाहिए

- 1) साम
- 2) दाम ।
- 3) भेद ।
- 4) दंड।

By Shubham Tripathi Sir



- 1) गांधीजी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में स्थापित किया गया।
- 2) वे यहां लोगों को संगठित कर रंगभेद के प्रति विरोध प्रकट करते थे।

- 1) अहिंसात्मक समाज।
- 2) शासन का लोकतांत्रिक स्वरूप।
- 3) विकेंद्रीकृत सत्ता।
- 4) आर्थिक क्षेत्र में विकेंद्रीकरण।
- 5) अस्पृश्यता का अंत।
- 6) धर्मनिरपेक्ष समाज।

## गांधीजी का सर्वधर्मसमभाव

- 1) सर्वधर्मसमभाव से तात्पर्य 'सभी धर्म समान हैं', कोई भी धर्म अन्य धर्म से श्रेष्ठतम नहीं है।
- 2) गांधीजी सभी धर्मों का आदर करने थे तथा सर्वधर्म समभाव में विश्वास करते थे। उनके अनुसार सभी धर्म भगवत् प्राप्ति के मार्ग हैं।

## जवाहरलाल नेहरू की प्रमुख रचनाएं

By Shubham Tripathi Sir

- 1) एन ऑटोबायोग्राफी।
- 2) लेटर्स फ्रॉम द फादर टु हिज डॉटर ।
- 3) दि डिस्कवरी ऑफ इंडिया।
- 4) इंडिया एंड दी वर्ल्ड ।
- 5) ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स।

## नेहरू का लोकतंत्र संबंधी विचार

- 1) मानवतावाद
- 2) लोकतंत्र का मुख्य आधार सामाजिक-आर्थिक समानता।
- 3) लोकतंत्र आत्म अनुशासन के रूप में।
- 4) लोकतंत्र एक साधन के रूप में।
- 5) लोकतंत्र का संसदीय स्वरूप।

By Shubham Tripathi Sir

## नेहरू के चिंतन पर किनका प्रभाव रहा

- 1) पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव ।
- 2) गांधीजी का प्रभाव ।
- 3) अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव ।
- 4) भारतीय साहित्य एवं संस्कृतियों का प्रभाव ।
- 5) पाश्चात्य विचारधाराओं का प्रभाव।

## नेहरू का राष्ट्रवाद

नेहरू एक महान् राष्ट्रवादी थे, किंतु उन्होंने राष्ट्रवाद का नया सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किया था, उनका राष्ट्रवाद संबंधी विचार -1) सीमित उदार व संतुलित राष्ट्रवाद का समर्थन । 2) स्वतंत्रता का मूल प्रेरणा स्रोत ।

3) विविधता में एकता । 4) धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद का समर्थन । 5) साम्राज्यवाद का विरोध

## नेहरू का अंतर्राष्ट्रवाद

By Shubham Tripathi Sir

- 1) नेहरू एक महान् अंतरराष्ट्रीयतावादी थे । वे शांतिपूर्ण सहअस्तित्व तथा एक विश्व राज्य के आदर्श में विश्वास करते थे।
- 2) संयुक्त राष्ट्र संघ के आदर्शों में उनका दृढ़ विश्वास था।
- 3) उनका अंतर्राष्ट्रीयवाद मानव मात्र की एकता और बिना किसी भेदभाव के समस्त मानवों के अधिकारों एवं हितों के प्रति समर्पण पर आधारित था ।

सरदार पटेल की रचनाएं

भारत विभाजन

मुसलमान और शरणार्थी

गांधी, नेहरू, सुभाष

कश्मीर और हैदराबाद

पंचशील सिद्धांत/समझौता

By Shubham Tripathi Sir

शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के पांच सिद्धांत जिन्हें पंचशील भी कहा जाता है, का उल्लेख चीन भारतीय समझौते 1954 की प्रस्तावना में किया गया था। सिद्धांत

- 1) एक-दूसरे की प्रादेशिक अखंडता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना।
- 2) एक-दूसरे के विरुद्ध आक्रामक कार्यवाही न करना।
- 3) एक-दूसरे के आंतरिक विषयों में हस्तक्षेप न करना।
- 4) समानता और परस्पर लाभ की नीति का पालन करना।
- 5) शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति में विश्वास करना।

1) शुरुआत / स्थापना - अप्रैल 1961 में

2) यह आंदोलन भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, मिस्र के पूर्व राष्ट्रपति 'गयाल अब्दुल नासर' और युगोस्लाविया के राष्ट्रपति जोसिप ब्रॉज टीटो ने शुरू किया था।

3) विशेषता - पूंजीवाद व साम्यवाद से दूर।

4) वर्तमान सदस्य संख्या - 1201

By Shubham Tripathi Sir

गांधीजी के अनुसार

अहिंसा

1) गांधीजी के अनुसार अहिंसा सर्वोत्तम सद्गुण है। अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है हिंसा या हत्या न करना। यहां हिंसा से आशय मन, वचन एवं कर्म से किसी प्राणी को स्वार्थवश, क्रोधवश या दुःख देने की इच्छा से कष्ट पहुंचाना या मारना है।

भारत का बिस्मार्क किसे कहा जाता है

1) भारत का बिस्मार्क सरदार वल्लभभाई पटेल को कहा जाता है।

By Shubham Tripathi Sir

देशी रियासती मंत्रालय का गठन किसके नेतृत्व में किया गया था

1) सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में।

सरदार पटेल ने हैदराबाद का विलय कैसे किया

1) सरदार पटेल ने हैदराबाद का विलय 'पुलिस कार्यवाही (ऑपरेशन पोलो) के तहत किया था।

By Shubham Tripathi Sir

भारतीय समाजवादी दल की स्थापना किसने की

1) डॉ. लोहिया ने 1955 में भारतीय समाजवादी दल का गठन किया।



## कौटिल्य के अनुसार न्यायालय

1) अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने दो प्रकार के न्यायालयों का वर्णन किया  
कटकशोधक न्यायालय (फौजदारी न्यायालय) न्यायाधीश- प्रदेष्टा ।  
धर्मीस्थीय न्यायालय (दीवानी न्यायालय) न्यायाधीश - धर्मस्थ ।

By Shubham Tripathi Sir

## कौटिल्य की राज्य की उत्पत्ति की अवधारणा

1) कौटिल्य के अनुसार राज्य की उत्पत्ति सामाजिक समझौते का परिणाम था (रूसो की तरह) ।  
2) मत्स्य न्याय की स्थिति से निपटने के लिए सामाजिक समझौते के आधार पर मनु को राजा बनाया गया, उन्हें अपनी उपज का भाग दिया, बदले में राजा ने इनकी सुरक्षा और कल्याण का उत्तरदायित्व ग्रहण किया।

- 1) वे भारत में औद्योगिकरण के पक्षधर
- 2) वे विकेंद्रीकरण के आधार पर लघु उद्योगों की व्यवस्था करना चाहते थे ।
- 3) वे ग्रामीण समाज में स्वावलंबन को आवश्यक मानते 4) सहकारिता को प्रोत्साहन दिया जाए, परंतु निजी व्यापार समाप्त नहीं होगा।

By Shubham Tripathi Sir

भारत के मैकियावेली कौन है

- 1) आचार्य कौटिल्य ।

माय एक्सपेरिमेंट विथ टुथ किसकी रचना है

1) महात्मा गांधी की ।

By Shubham Tripathi Sir

कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में कुल कितने राज्य है

1) कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में कुल 12 राज्य' है, जिसके केंद्र में 'विजीगिषु' है ।

- 1) स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व में विकास करते थे।
- 2) इन्होंने लोकतंत्र को दलविहीन लोकतंत्र बनाने पर जोर दिया।
- 3) ये मानवीय स्वतंत्रता में गहरा विश्वास रखते थे।

By Shubham Tripathi Sir

किस आंदोलन के पश्चात् पटेल को सरदार की उपाधि मिली

1) 1928 में बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व पटेल ने किया।

2) इस सत्याग्रह आंदोलन के सफल होने के बाद वहां की महिलाओं ने वल्लभभाई पटेल को सरदार की उपाधि दी।

By Shubham Tripathi Sir

एकता दिवस किसके सम्मान में मनाया

जाता है

1) 31 अक्टूबर को प्रतिवर्ष एकता दिवस 'सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के रूप में मनाया जाता है।

## सरदार पटेल के राजनीतिक विचार

- 1) लोकतंत्र एवं अनुशासन के प्रबल समर्थक
- 2) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के समर्थक ।
- (3) राजनीतिक जीवन में जनमत को बहुत अधिक महत्व दिया।
- 4) पटेल अधिकारों के साथ-साथ नागरिकों के कर्तव्यों पर भी बल देते थे।
- 5) छोटे राज्य विकास में बाधक ।

By Shubham Tripathi Sir

## सरदार पटेल के सामाजिक विचार

- 1) अस्पृश्यता का विरोध एवं सामाजिक समानता का समर्थन ।
- 2) स्त्री-पुरुष समानता एवं स्त्री सुधार के समर्थक ।
- 3) स्वदेशी तकनीक पर आधारित शिक्षा के समर्थक थे।
- 4) संप्रदायवाद व विरोध एवं सहिष्णु समाज की स्थापना पर बल ।

## लोहिया के सामाजिक विचार

- 1) वर्ण व्यवस्था का विरोध।
- 2) सामाजिक विषमताओं पर प्रहार।
- 3) जाति प्रथा का विरोध और उन्मूलन हेतु सुझाव।
- 4) सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार कर्म।
- 5) आर्थिक विकास।
- 6) हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल ।

By Shubham Tripathi Sir

## नवीन समाजवाद

- 1) लोहिया ने नवीन समाजवाद विचारधारा दी।
- 2) वे समतायुक्त समाज की स्थापना करना चाहते थे।
- 3) इस नवीन समाजवाद के पांच उद्देश्य थे ● समानता ● प्रजातंत्र ● अहिंसा ● विकेंद्रीकरण ● समाजवाद

सरदार पटेल ने कांग्रेस के किस अधिवेशन की अध्यक्षता की थी

1) 1931 में कांग्रेस के कराची अधिवेशन की अध्यक्षता की।

2) इस अधिवेशन में पटेल के नेतृत्व में कांग्रेस ने मुख्यतः दो प्रस्तावों को अपनाया –

- मूलभूत अधिकारों से संबंधित।
- राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रमों से संबंधित।

By Shubham Tripathi Sir

लोहिया के आर्थिक विचार

जानकारी - सोशलिस्ट इकोनॉमी।

- 1) समाजवादी अर्थव्यवस्था के समर्थक।
- 2) लघु उद्योगों का समर्थन।
- 3) सार्वजनिक क्षेत्रों पर बल।
- 4) आय समानता पर बल।



## लोहिया की सप्तक्रांति

लोहिया के नेतृत्व में संयुक्त समाजवादी दल ने 1966 में निम्नलिखित सात प्रस्तावों को स्वीकार किया, जिसे सप्तक्रांति का सिद्धांत कहा जाता है –

- 1) स्त्री-पुरुष समानता के लिए।
- 2) रंगभेद के विरुद्ध।
- 3) जाति प्रथा के विरुद्ध।
- 4) उपनिवेशवाद का विरोध तथा विश्व सरकार का निर्माण।
- 5) व्यक्तिगत संपत्ति पर आधारित असमानताओं का विरोध।
- 6) स्वतंत्रता के लिए।
- 7) युद्ध शस्त्रों का विरोध तथा सविनय अवज्ञा सिद्धांत की स्वीकृति।

By Shubham Tripathi Sir

महात्मा गांधी के अनुसार सात पाप कौन-से

- स्रोत यंग इंडिया। -1) बिना काम के धन। 2) बिना मनावता के विज्ञान। 3) बिना नैतिकता के व्यापार। 4) बिना सिद्धांत की राजनीति। 5) बिना चरित्र के ज्ञान। 6) बिना बलिदान के पूजा। 7) बिना अंतःकरण के आराम।

## लोहिया के राजनीतिक विचार

- 1) राजनीतिक विकेंद्रीकरण के समर्थक थे।
- 2) वे समाजवाद व विश्व संसद के निर्माण की वकालत करते थे।
- 3) चौखंभा राज्य की परिकल्पना।
- 4) सप्तक्रांति का सिद्धांत दिया।
- 5) धर्मनिरपेक्ष राज्य के पक्षधर थे।

By Shubham Tripathi Sir

## राममनोहर लोहिया की प्रमुख रचनाएं

- 1) व्हील ऑफ हिस्ट्री।
- 2) क्रांति के लिए संगठन।
- 3) मार्क्स, गांधी एंड सोशलिज्म।
- 4) गिल्टी मैन ऑफ इंडियाज पार्टिशन।

सरदार पटेल संविधान सभा की किन समितियों के अध्यक्ष थे

संविधान सभा की तीन महत्वपूर्ण उपसमितियों के अध्यक्ष थे

- मौलिक अधिकार उपसमिति ।
- अल्पसंख्यक उपसमिति ।
- प्रांतीय संविधान समिति ।

By Shubham Tripathi Sir

राममनोहर लोहिया की चौखंभा योजना / सिद्धांत

- 1) लोहिया ने चौखंभा राज्य अर्थात् चार स्तंभों वाले राज्य की परिकल्पना की है।
- 2) इसमें केंद्रीकरण व विकेंद्रीकरण की परस्पर विरोधी धारणाओं को समन्वित करने का प्रयत्न किया गया।
- 3) चार स्तंभ - 1. केंद्र 2. प्रांत 3. मंडल 4. गांव ।

## चौखंभा सिद्धांत की कोई दो विशेषताएं

- 1) संपूर्ण सरकारी एवं योजनाव्यय का एक चौथाई भाग ग्राम, मंडल तथा नगर पंचायत के माध्यम से खर्च किया जाएगा।
- 2) पुलिस इन ग्राम, मंडल तथा पंचायतों के अधीन कार्य करेगी।

By Shubham Tripathi Sir

## राममनोहर लोहिया

- 1) समाजवादी चिंतक, समाजवादी विचारक ।
- 2) रचनाएं सोशलिज्म । इतिहास चक्र, मार्क्स-गांधी एंड
- 3) सिद्धांत - चौखंभा सिद्धांत, सप्तक्रांति सिद्धांत ।
- 4) विशेष - 1955 समाजवादी दल का गठन किया।

## लोहिया द्वारा इतिहास की नवीन व्याख्या

लोहिया के अनुसार इतिहास की गति चक्र के समान तथा अपरिवर्तनीय होती है। इस चक्र में पुनरावृत्ति भी होती रहती है।

- 1) देशों का उत्थान पतन होता रहता है।
- 2) समूह के अंदर वर्ग, जाति का संघर्ष होता रहता है।
- 3) सभी समूह शारीरिक, सांस्कृतिक ढंग से मिलन भी करते हैं।

By Shubham Tripathi Sir

## डॉ. बी. आर. अंबेडकर की प्रमुख रचनाएं

- 1) दि कास्ट इन इंडिया ।
- 2) हू वर द शुद्राज ।
- 3) स्टेट्स एंड मायनॉर्टीज ।
- 4) बुद्धा एंड हिज धम्म ।
- 5) मिस्टर गांधी एंड दी ऐमेन्सीपेशन ऑफ दि अनटचेबिल्स ।

- 1) जन्म - 14 अप्रैल, 1891।
- 2) यह विधिवेत्ता, समाज सुधारक, दलितोद्धारक व भारतीय संविधान के शिल्पी थे।
- 3) रचनाएं - हूवर द शुद्राज, कास्ट इन इंडिया ।
- 4) इन्होंने - लेबर पार्टी, बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की।

By Shubham Tripathi Sir

## अंबेडकर के सामाजिक विचार

- 1) वर्ण व्यवस्था की आलोचना ।
- 2) जाति व्यवस्था उन्मूलन व दलितोद्धार ।
- 3) प्रियदर्शन के पक्षधर -स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व । शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो । बुद्ध, धम्म, संघ
- 4) नारी सशक्तिकरण के प्रबल समर्थक ।

## गांधीजी का समाजवाद

- 1) स्रोत हरिजन पत्र ।
- 2) समाजवाद में समानता पर बल दिया।
- 3) समाजवाद के प्रमुख तत्व - ● आर्थिक समानता । सर्वोदय । ● दमन का विरोध । ● अहिंसात्मक सत्याग्रह ।

By Shubham Tripathi Sir

## लोहिया का अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था संबंधी विचार

- 1) डॉ. राममनोहर लोहिया भारत में ही नहीं, अपितु विश्व में एक मौलिक चिंतक रूप में स्थान रखते हैं।
- 2) उनके समाजवादी दर्शन का स्वरूप विश्वव्यापी है। ● विश्व समाजवाद का दर्शन ।> अंतर्राष्ट्रीय जाति-प्रथा का उन्मूलन । ● संयुक्त राष्ट्र संघ के पुनर्गठन का नवीन आधार ।> विश्व सरकार का स्वप्न ।> निशस्त्रीकरण का सशस्त्र प्रतिपादन ।

## नेहरू की धर्मनिरपेक्षता से तात्पर्य

- 1) नेहरू धार्मिक रूढ़िवाद का विरोध करते थे ।
- 2) वे सांप्रदायिकता का विरोध करते थे।
- 3) वे धर्मनिरपेक्षता को देश की एकता का आधार मानते थे ।

By Shubham Tripathi Sir

## संविधान निर्माण में डॉ. बी. आर. अंबेडकर की भूमिका

- 1) संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य ।
- 2) मौलिक अधिकारों के संदर्भ में विशेष योगदान अनुच्छेद-25, 28 व 32 ।
- 3) नीति निर्देशक सिद्धांत को विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण माना ।
- 4) दलित वर्गों, महिलाओं के उत्थान के लिए संवैधानिक व्यवस्थाओं और प्रावधानों का निरूपण किया।



बहिष्कृत हितकारणी सभा की स्थापना किसने की

- 1) डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी द्वारा।
- 2) 20 जुलाई, 1924 बंबई में।
- 3) इन्होंने इस सभा के माध्यम से अछूतोद्धार आंदोलन का प्रारंभ किया।

By Shubham Tripathi Sir

डॉ. अंबेडकर के राजनीतिक विचार

- 1) लोकतंत्रवादी राज्य के समर्थक।
- 2) संसदीय शासन प्रणाली के समर्थक।
- 3) धर्मनिरपेक्ष राज्य के समर्थक।
- 4) वे स्वतंत्रता, समानता, मातृत्व सिद्धांतों को अति महत्वपूर्ण मानते थे।

कांग्रेस हटाओ देश बचाओ का नारा किसने दिया

यह नारा राममनोहर लोहिया जी ने दिया था।

By Shubham Tripathi Sir

डॉ. बी. आर. अंबेडकर के आर्थिक विचार

- 1) वे भारत में तेजी से औद्योगीकरण के समर्थक थे।
- 2) जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के पक्षधर थे।
- 3) वे कृषि को सामूहिक उद्योग बनाना चाहते थे।
- 4) आधारभूत उद्योगों का राष्ट्रीकरण।

अंबेडकर के व्यक्तित्व पर किन तीन आदर्श महापुरुषों का प्रभाव पड़ा

गौतम बुद्ध  
कबीर  
ज्योतिबा फुले

By Shubham Tripathi Sir

अंबेडकर का त्रयी दर्शन क्या है

अंबेडकर भारत में एक नवीन समाज व्यवस्था की चर्चा करते हैं, जो वर्ण, जाति, अस्पृश्यता से भिन्न मानववादी मूल्यों पर आधारित होगी।

- 1) स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व ।
- 2) शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो ।
- 3) बुद्ध, धम्म, संघ ।